HAMBANIAS FRING. Howhites



वा हु द्या अर्दे दावद की वार्य र व्हें दा

LATSE LIBRARY NEWSLETTER

शुंखें २००४ खेरे सूर्वाया

FALL 2005

विचित्रे अर्घेट र्घेश ग्री खुवा न् ग्रुट वरे

र्देर विट वुस्र राजसूत दर्

- श्रुष:म्याशःवयरः नवेः न्युः भव्यः न्युः र्र्हे अः अविष्यः पाशुकः व्यः र्रेरः भेवरुः या
- शक्षुत्राम्बर्गम् व्याप्त्रम् व्याप्त्रम् क्रियंत्रप्त्राभुराष्ट्रीः क्रमायर्देत्रदेवामसुम्रा यदास्रादनुस्रादस्
- ঝ'বৃল্ব্ শুটি জল্'নু ম'ব্ম'ব্রি ক্রুল'র্ভূম্বা নর্মিব ব্রশ্বশার্ক মিন্ব্রশা

MEMOIR THE GESHE CHÖDRAK I KNEW AND HIS DICTIONARY

by Horkhang Jampa Tendar

- Latse Hosts Three Legendary Singer-Songwriters
- The Dictionary of New Terms and The Chinese–Tibetan Dictionary by Pema Bhum
 - Ladakh Newspaper by Sonam Tsering

केर:र्रेया

ब्र्वासुंग्राक्षेत्रणा व्यास्य व्यास्

FEATURE ARTICLE

Origins of the 'Tibet Myth'
in Western Fiction
by Ramon Prats

सर्वे तः द्वेते द्वु तस्य स्य स्य प्रस्ति।

चयाः भ्रः देवे त्वयः प्यत्यः वर्षेत्। स्ट क्षेत्रं प्रयोग्यं यात्रं यात

सर्वे त्या हुते द्वायस्य स्थान हुन। यह त्या स्थान स्य

स्तिचेन्निस्तिन्। अक्षामिक्ष्यान् अक्षामिक्ष्याः अक्षामिक्ष्याः स्वामिन् स्वाम्यान् स्वामिन् स्वाम्यान् स्वामिन् स्वाम्यान् स्वामिन् स्वामिन स्

Raise Higher the Mountain Peak

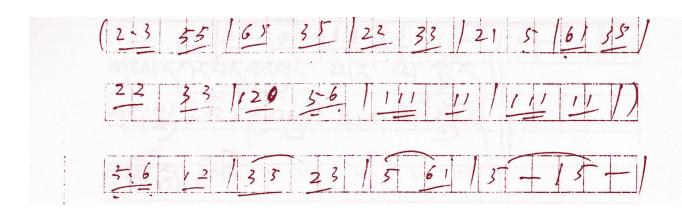
In the rocky mountain there is a summit It is like a natural crystal stupa That is the life of Tibet. Raise higher the snow mountain peak.

In the grassland there is a rock
It is like a natural thunderbold dagger
That is the birth deity of Tibet.
Raise higher the rocky mountain peak.

Above the lake there is a meadow It is like a natural pile of grass That is the guardian of Tibet.
Raise higher the cairn (latse).

(Translated by Yangbum Gyal)

"Raise Higher the Mountain Peak" is one of the many songs performed by Palgön on the occasion of the 2005 Music Festival organized by the Latse Library in New York to ring in the Tibetan Wood-Bird Year. Palgön is also the composer and lyricist of the renowned song "Akhu Pema." In his introduction to the song, Palgön made the following remarks: "This song is new. The lyrics are written by Larung Tulku Khenpo who sent me the words one day and asked me to compose a melody. In accord with his wishes, I set his lyrics to music and, shortly before coming to America, recorded the song on VCD. This VCD has not yet been released. I think it appropriate to offer this song today to Latse Library. I had just finished composing the melody, but not yet performed it, when the invitation from Latse Library arrived. This coincidence, the centrality of the word latse for both the song and the library, and the fact that today is my first public performance of the song are three spontaneous but auspiciously connected factors."





याः इं द्रशे अर्हेद विदानी निषर वर्षेत

LATSE LIBRARY NEWSLETTER

ষ্ট্রীর্মা ২০০শ মেরি র্ষ্টুর বা

VOLUME III FALL 2005



श्रेष्रः चीयोश्वः यत्रः चीः तत्रः चीः द्वेशः श्रायवः योश्वेशः यः द्वेरः यः स्वेतशः यो

८८:रनशर्ने ५ गुः ह्युः ५ वः द्यो महरा सूरशय मूंश सेवः वुराया

इ.श्चर.योश्चरतम्ब्रीयोश्चरेयःयक्षेत्ररः। क्री.च्र्यरेतश्चरक्री.क्रूयाःश्रह्ररःदेयःयाश्चराः

न्वो प्रवेश केंश यावाश न्या। वियावी केंवा अर्देन

र्द्र-पिट-युस्रश्नाय-पश्चर-८म

व्यन्त्रम्थान्त्रीःस्रमान्त्रस्य द्वेत्रम्

त्य र्धुनाश ग्री हेना पर्वेदे पर्र अश केंश ग्री त्र यो पेंट ग्री त्युवा सूर गो त्युदा तुर श

र्रेअयर्थे ब्रीट्य

वॅद्राती सुरू द्वाय थे द्वासे से देहा।

NEWS FEATURES

EVENTS

- Latse Hosts Three Legendary Singer-Songwriters **TALKS**
- Discussion on Contemporary Tibetan Art Movement **COLLECTION HIGHLIGHTS**
- The Dictionary of New Terms and The Chinese-Tibetan Dictionary by Pema Bhum

LITERARY FEATURES

MEMOIRS

The Geshe Chödrak I Knew and his Dictionary by Horkhang Jampa Tendar

HISTORICAL NOTES

Ladakh Newspaper by Sonam Tsering

FEATURE ARTICLE

Origins of the 'Tibet Myth' in Western Fiction

by Ramon Prats

FEATURED AUTHOR

Yidam Tsering by Lara Maconi

त्यः हें 'द्रमें अर्हें द्रावर मी मार्थ्य वर्षे दे 'वर्ष के 'देर 'स्वयः 'वर्ष मुँ 'हेमा मालुद 'द्रमें अर्हें द्रावर द्र्य के 'वर्ष के 'वर

Andrea Soros Colombel FOUNDER AND PRESIDENT

Eric Colombel EXECUTIVE ADVISOR Pema Bhum EDITOR-IN-CHIEF

Kristina Dy-Liacco NEWS EDITOR Lauran Hartley LITERARY FEATURES EDITOR

Sonam Dhargay LAYOUT AND DESIGN

Latse Library Newsletter is published annually by Latse Contemporary Tibetan Cultural Library, 132 Perry Street, Suite 2B, New York, NY 10014 USA Tel.: 212-367-8490 Fax: 212-367-8479. Email: info@latse.org. Contents copyright © unless otherwise noted. Electronic version of this newsletter can be found at www.latse.org

२००४ वें ५:वें ६ मु: वेंदे वें मार्थर। स्रुव यागायाय यय राजव यवसाम् क्रिंसास्य मार्युसा वार्र्भरायेवयाया

LOSAR 2005:

Latse Hosts

THREE LEGENDARY SINGER-SONGWRITERS



था है 'न्ये' अर्हेन | विदाय का वेंन् 'की ख़ु 'या वावाका उक् 'न्याया अर्वोद्घाना'। बे त्यु र के से र बूँ तका खूब हि में त्वें तव र र म त्यें ह्यें तव र र म त्यें ह्यें तव र र म त्यें ह्यें तव र मान्द्र यहेद क्षीय र्वेन क्षा यहाव क्षेद्र लेगा न्द्र वरुष र्वेन विर वु र्वेदे र्वे म्बर्मिं अहर्न हीं होया वें न ह्या यहार होते हो ते या है नियं अहर्न हिन <u> ५८:मॅं 'युअ' श्वे' प' श्वें न मृक्ति र सेवें 'देर 'स्वर्थ 'वें ५ 'सेवा पवे 'यश संदर्</u> ५८। गॅ(सुअ:ब्रे:प:ब्रॅन:ब्राकेक:ब्रेंदि:५ड्डरूक:रैग:ब्रे:कंक:५८:अहअ: वर्त्रवाचीरानी व्युसासी पार्से वाचा केरासे वे सामे स्ट्राप्त स्ट्री विस् पद.क्र्य. ७३ ज.श्रेजा

This year, Latse Library celebrated Tibetan New Year with a concert program that featured three giants of the Tibetan music world: Palgön, Tsering Topten Nelung, and Lobsang Palden Tawo. The concert was presented by Latse Library, with the Modern Tibetan Studies Program at Columbia University and the Center for Ethnomusicology at Columbia University, and was held at the Miller Theater on the campus of Columbia University on February 13.

Tsering Topten Nelung, Dawa Rinchen, Palgön, Serlha Tawo, Lobsang Palden Tawo.

मुं या ना सुआ ही दें र सें र अर्र र न सुरा

🛡 વવાસર્વેત તે હાસર્ને ઋતુ દેવ ત્રમાથેત કેવ મર ટ્રેલિયનીય સુ સુત્ર ફ્વ . येब पर मुरान होता प्रेका - रुष रायक में दाय है वेर्ग रायक मुक्त हुवे दरःय। दययः अर्वोदः ग्रीयः दयरयः विदः मुः देवायः वायरः य विवा वीः त्यश्र हुं हैरा सुरु हरा र वर्षे र तर ह्यू है त्या र हे स्था सर्हे स्थर सा हित हूं सुरा पिराया हुत सी स्वार मार् सूर मिर्ट मी सिर्ट मी सी रिवेट या सीट सी या या प्रायी सिरायी सी सिरायी सी सिरायी सी स क्षें क्षे क्षे त्यु ने नवा त्यात्यन क्षें व्यान्त त्यु ने त्यत्य त्या व्याप्त त्यु न नवत्य सर्ग्रेद हैं 'सुनाय ग्री' निवेनाय नर्देय हुत संविन ग्रीट प्येद। विट नीय सुन्सहुत बबाक्षा क्षुत्र हरायोब क्षु र्श्वेचाया क्षुट्राचरा हुन ने । विदारी ने दाराया वायाया उदा ह्या या <u> बुः भूमा मी 'नमी मार प्योरा पिटः मीश 'यद्ययः यो बः ञ्चा 'यह मा मार प्यारे प्रोर 'वेटः ।</u> विंदि के आसि दिए आसे दें त्यस निक्ता के दिन हैं है तो निक्त स्वार की के होनस स्वार है क्षेत्री होता प्रतिका की क्षेत्र व्यास्ति संस्ति विद्याने विद्याने विद्याने विद्याने विद्याने विद्याने की સે સુદ મી વ્યા<u>વ</u>ા એક સુંદ પાત્ર કરા ક્ષે વર્ષે મહેર દેવ કું વર્દ્દ વાકા મુક્તા અફકા એક સુંદ પ્રવે यासरः वस्त्राचर्तेत्। दः व्येतिः व्यानसरः भ्रानसः सुः विदः योसः न्नाद्वरः "द्वादसः उत्रः ्यू र्वे" विशायवे मु ने विंदा मीश के न नु सी खूँदा मीश सु सुद हुद विंदा नदा। विंद्रा सा र्श्वे विराद् यो दा कुराव इस या यदे व्या विवा यो दाया रेटा

दे 'खेर हें 'रेर क्षेंचर्य 'खेर दे 'सुदे 'से' द मत्वामा मदे 'चें र मी मू मार्ट ह्या क्रिंगः अपिर लेगा धेरा विंदः गीयः मु दिस्य सुंदः यः दरः । लपयः मुंदिष्यः या म्याः त्येत्रः यः यङ्गः क्याः या सः स्राधाः त्याः त्याः द्वाः त्याः त्याः त्याः स्रोत्याः स्रोताः स्रोताः स्रोत र्ट.र्चीट.ज्.चर्रेषु.र्जेट.र्थन.व्यू.र्थ्याया.ज्री क्रु.र्जट र्जूचन.र्जेय ज्याना हु.र्येष शे वें र में कें राम र हैं मुश्रास के मानम विद्यास हमी मान र र में मान स्थापन से र में मान से र में मान से र में मान से र मान से र में मान से र मान से र्केत्रवायायात्रहारा होवायाया के के त्याचा के त्याचा के त्याचे के त्याचे के त्याची के त्याची के त्याची के त्याची वर् भेर क्री वर् क्री द्रभर र र्से वर्ष कर क्री प्रकार के क्री के वर्ष कर क्री क्री के रैट खूँ तका खूद 'या त्रका द्रका 'खु रेंच 'तृ 'वेंद 'ग्री 'ढें त्रका 'य द्र र 'या का 'य त्र ्या या व बीदायार्रेयात्मात्वरात्मीयात्मुनाञ्चीरात्मीरात्मदात्मीयार्थित्वरात्मीयार्थित्वरात्मीया र्मेमा न देश मी मालका है सामान हो मालका

ह में ह्वें च व द द प्रथा भूक के विंद की " क्द सा" (१९८२) ५८ । वर्षिर-दर्भा "(१९८४) "श्रुव वर्षिर महिष्य मा (१९८९) लेख मदे श्रु सम याश्रुअः क्रीशः स्टें स्यायाया श्रुः क्रुपः स्थिता स्थे । अपना स्थे स्वता स्वी स्थे स्याया स्थे स्याया स्थे स् सद्युः मुं भी भी स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्व र् "ग्राम्याम्या भे ज्ञा" विश्वाय प्राप्ता "कु स्टार्म प्राप्ता " रे नगर रो।" बेर न यु तु इसस पेन। विर है त्रीं मानहूर," हु सा" (१९९२) हेस यवै बर वी मु र वुर श हैं अ रेंग्र श गुर धी क्षेत्र हे हे रें र यथ खूर है

About the artists

algön is a self-taught singer and dranyen (Tibetan lute) player from Machu in Amdo (eastern Tibet). In the 1980s, he developed a unique folk musical style that spread quickly throughout Amdo to become the predominant musical sound of that region. Hits from his early work include the famous "Akhu Pema" and "Sha yu mo she'u," and these songs inspired countless young musicians to copy and innovate the style. A physician by profession, Palgön still continues to teach students - he has been a teacher to over 30 singers including Dubey, Gonpo, and Yungdrung Gyal - and make recordings, and is a major figure in cultural events in Amdo and beyond. Palgön's sheer exuberance for music is evident in the large-scale musical numbers he has organized in the past in large gatherings on the grasslands in Amdo. One song, "Sarasvati," which he sang in the New York concert, was originally written for a performance involving one thousand singers and lute and mandolin players, all singing and stepping in unison.

Tsering Topten Nelung is a Tibetan singer-songwriter residing in Switzerland. He began studying music, dancing, and singing at the Tibetan Institute of the Performing Arts (TIPA) in Dharamsala, India, at the age of ten. Tsering Topten Nelung is a long-time member and teacher in Swiss-TIPA, and also in the Tibetan music group Nangma. He is a teacher of Tibetan folklore and instruments in various Tibetan schools in Switzerland. Tsering Topten also provides musical support to many Tibetan organizations and events across Europe, and is the producer and featured artist on numerous recordings, as well as a composer of songs and soundtracks in both traditional and modern styles.

Lobsang Palden Tawo is widely known for his three albums: Nangma (1982), Trinkor I (1985) and Trinkor II (1989). He produced and composed all the new Tibetan songs that appear on those recordings, including the hits "Nam gongi nyinda" "Chugang Drenlu" and "Phagi

Heidelberg University बेरावदे क्षेत्र क्षा के के के के कि किया कर के कि द्वै:Klinikum Ludenscheid बेन्द्र सूर्व सूर्व क्रुक्त सूर्व (the University of Bonn) धे लॅर महिंगरा में अस्तर में अस्य खेंद्र उत् में अस्य खेंद्र यहें मार्थ की स्था "इ.च्रम" डेश.मदे.जश्मां वे.चाश्चर वर्द्द्याश्चराष्ट्रश्मायर त्राप्तर त्राप्तर त्राप्तर त्राप्तर वि

वे 'युर' कें 'रेट' र्सूनवर 'युव 'यान्य' ५८' हैं वें हों 'च बट' ५४य' 'युव 'याहेश' दश र्कुर अ.वचिय. र्कुर अधेश योषट दी टे.का टे.इंग.की.वचिय. र्कुर सैवया शे.लट मी. মাওকারে ক্রেন্সের স্থান ক্রেন্স্রির মার্চ।



बे स्टार्के देट र्बेवश युव दट हों के वावट दयय युव Tsering Topten Nelung and Lobsang Palden Tawo

वर्गाः श्रेमाशः ह्रिमाशः धवे विद्याः श्रेत्।

ततुःवह्र्याःचीरःलीयःचीरःबुचाःवाःचकु्र्यःक्ष्मःबुदः। न्द्रीःवचु्र्यःवाःश्ररः चौःक्षयःश्रुतःश्रुचःमयुःविचःश्रुवः।वरःवरीयाःश्रेषायाःवरीयःचचीःलूरः ह्याःचीरःवश्रुरःवच्यांभ्यवायाःचाःचीःश्ररःचीरः। ग्रुःजीशःश्रीःकःश्रीयः र्धेश र्ट्यु इंदु द्वारा यह ता चुर हें दु सा व्यार वा ता चुं विद्यु दि चुं दि विद्यु विद्यु विद्यु विद्यु विद्यु र्यः अह्रि-विरः त्री त्याव त्रह्रेव यन् अत्यत्या यस्य त्रुन् स्थित्र स्थायम् इस्य रा वक्षायावद्गे न्दासूयायासू या इसाया विदार्से वार्ट सूर्व वार्व स्मानयार्से साया विदार ल्रास्य संस्थात्य स्थित त्रास्य स्थापित्य। यह ते त्राप्य संस्था साम्य संस्था स्थापित्य। विंट र्हें अ न्वाय सूट होन अये ह्या वाल्य हें अ अवन्य न्ट ने अ सु सहया न से म र्यथा अर्मे द की मु द्रावस्था था सूर वात्राया कर हे द की में है में द की खुवा विश्वस र्ये द्या या सुवार विकास में विकास से मार के त्या से मार के ता से म

Khangri Karpo." He is also co-composer of the soundtrack for the film Living Buddha (1992). A graduate of Heidelberg University, Dr. Tawo is a senior physician in the Klinikum Ludenscheid (affiliated with the University of Bonn), and founder of the Tadra-Project.

Tsering Topten Nelung and Lobsang Palden Tawo have a history of working together, and shared the stage for most of their numbers during the concert.

A sold-out performance

espite somewhat sluggish advance sales, tickets for the 700-seat theater on the campus of Columbia University quickly sold out by starting time, leaving many latecomers to regret not planning ahead! The hall was buzzing with excitement as library director Pema Bhum greeted the audience and introduced the musicians. For many, it was the first time to see in person the creators of beloved songs and ballads. Palgön's songs are so popular that they often find their way into other Tibetan regions. The work of Tsering Topten Nelung and Lobsang Palden Tawo thrilled Tibetans in the diaspora community, and their popularity propelled their songs back into Tibet.

The sets by Nelung and Tawo were a blend of traditional works, including Namthar and Toeshay selections, as well as some brand new numbers such as "Ngatso Droway-lam," and the rousing "Tsering Tsomo." The crowd responded emotionally to older classics like "Nam Gongi Nyinda." Nelung and Tawo also delighted the audience with jokes and banter in between numbers, as well as some impromptu dancing. The two singers were at times joined by Dr. Tawo's daughter Serlha, who sang backup vocals. Serlha, who was born and raised in Germany, has performed with her father and Nelung on previous occasions, and her presence onstage reflected this ease and affinity for her father's creations. The duo plan to release a new recording in the near future, and audiences can look

बर्थः रेशः ग्रीकः वेंद्रः खुव्यः व्यायहेवा वे खुदः क्वेंद्रे र स्ट्रेवकः खूदः दरः हार्वे विवादः र्नायाः भ्रमः वाहिषानीः वालकाः इस्रायाः अवाहिः "इस्राचरः" ५८ः " र्ह्नेर् वालकाः <u> , कें.वेदुः मूला केंद्र कीं.योधनात्र को विचा कुचा बु.रेनुनः प्र. तूरः कूर्</u> क्र्यू. वर्षः विरामिश्वामी मिल्या हैराम्याया उदा "द्यारा मिल्यो है हा" र्षे या सूर्य सूर्य स्थान द्रश्रसःग्रीसःस्रश्रसःयम्(यः वेचसःद्रसः यमाः हेचः वुस्। विंदः महिसःद्रसः म्। देवेः योप्रभावाश्वीदायाद्वात्वात्राच्चात्रुं त्रुष्ट्रभाषात्राष्ट्रम् स्त्रीताः स्रम्भाषात्राप्यात्राप्या योट् म्र्याचर्ष्या स्थापाद्ये स्थाप्ते स्थापते स्यापते स्थापते स्यापते स्थापते स्थापते स्थापते स्थापते स्थापते स्थापते स्थापते स्य ह र्चे ह्वे च ब द द राया पृष्ठ ह्ये शुरुष र्खे वार्य र पूर व्याप्त र व र या व देवा व र वा याश्वरः भ्रुः त्यवाशः है त्यहरः स्रहः त्यः द्विदशः हे त्यर्करः त्येदशः बुदः हिदः। स्राप्तरः वीः सः <u>इ.च्.च्रें.चबर.२नल.जैब.२८.क्र्.</u>इट.क्रॅ्चेचश्र.जैब.च्रेश.च्री.श्रथ.च्री.श्रथ.रं.च्रथ. अट र्धेर मुद्र ट र्भेट्र मुक्षेर भ्रूप्यम्थ मार श्रेम्थ व्याय स्टेब्स्य देवा की स्टर्मी खा सवु:याश्रम् हुरा:या.कुँर:यया.रट:कुश.लूर:लुश.ता.योशवा.यमाश्रमूरी वी.ता.वर्ट. यष्ट्रिशःग्रीःविचः र्हेषःस्त्रः विचायायायरः सः श्रः विचार्यायायरः विचारायायः विचारायायः र्थेन्यन्दा श्रेश्यन्ध्यावन्यम् सुवार्थन्।

म्बुं पन्द्रप्यासर्वोद्गः मुः मुः क्षेत्रकः "ष्याद्यः पदःसः" विष्यः पदः हुदः योदः मुकारको वर्षा मान्या केंद्र मान्या केंद्र मान्या मान्या मान्या मान्या मान्या मान्या मान्या मान्या मान्या मान्य श्रुमा विस्या र्ट्यामे देवामे हैं विस्तान के त्यें मानवे स्वासी के त्या विसार्थ र सारे त्या रमत्रासर्म् त्याम्याद्याम्यार् प्राप्तास्य प्रमुद्रा हुर स्रोद्धार् केयां के स्वास्य है प्रमा अर्मोद्गः तमायाद्याः १९८१ विस्ताना वे विस्तिताया स्टार्सेट वितालेया पर्या क्रिट चर्सैयोश.चर्कैर.वंश.रविंच.सुर्य.योषर.च.रंट.र्.श.हयो.योबश.योयोश.११४.र्रे.वींर न्यतासर्वोदाक्कीन्तरेयाकीत्वाचनास्त्रेत्वकीत्रमानुस्यान्यस्य રે ત્રુદ ખદ ખેંદ યાયમાં "અર્જે અર્જે ક્વું વ્યવદાખરાયા વર્જે દ્વા" કેર વાયૂ જે ब्रिंगक्रेब क्रुं यत्व त्रुत्व दर्भ यादा देश वेदश दर्भ ये बार मेरी प्राप्त सर्वेद लचारात्रस्यासु निहरसायदेवे त्रात्रम्य स्वासास्य देशान्यात्रस्य स्वासास्य स्वासास्य स्वासास्य स्वासास्य स्वासास रदावित दे अर्कें पर्त सूनशासु नहुदशावदे हैं द रेशावा है देशे अर्दे प्रदाय सर्वेद्रद्राने "र्यामु वर्दे तान्तुर्यामु स्त्रुत्राम्ये नर्या सर्वेद्रया स्त्री तर्या स्त्रुत्र न्या अर्देन विरामी अर्मेद र्वेमा वर्ने राहे आरी वाववार्येद मी मानद वर्ने नामद र्वेटा। वर्रे हे हे द वर्रे वा सामक्षीया साम हो वा स्टार

वीं अध्यक्ष निर्माद दें।

नजारम्बर्गन्यामा ग्री विद्यान स्ट्रेन जा ह्या ना रेन के ना वाना मानिक विद्यालया है । यम्बान्त्रक्षः स्थायदेवाषाः मार्कः। मार्वेदः श्रीकः श्रीः स्थायदे । मार्वेदः श्रीकः स्थायदे । मार्वेदः श्रीकः मा षायर्दे वयाधिव डेट देट यट षा दे त्याचानव र्थेट धेव। हान



<u> ५५०५:अर्वोद्या (८७०) अन्य १५७७ हो (याध्येद्या) ५८:अर्वोद्य थे। (याध्यद्या)</u> Palgön (center) accompanied by Dawa Rinchen (left) and Gonpo (right).

forward to hearing this new material.

With the first strums of "Akhu Pema," the first song of Palgön's set, the hall erupted into cheers and applause. The lyrics of the song are based on those of a nomad folk song, for which Palgön wrote a melody. The piece was first performed in the studios of the Broadcasting Station of Gannan Prefecture in 1981 and became an instant classic. Palgön's performance included some established hits mixed with newer songs, including "Raise Higher the Peak of the Mountain", the first public performance of this song. Palgön felt that the piece is a natural and fitting gift for Latse Library as it expresses Tibetans' attachment for high mountains and snowlands. The last stanza mentions a latse (mountain peak or pass). Also, Palgön relates, "It was just at the time when I was completing this song that I received the invitation from Latse Library to come to the United States for a performance. I felt this was auspicious."

A rare opportunity

algön was accompanied by Dawa Rinchen and Gonpo, two young Tibetans from Amdo who are currently living in the States. Dawa Rinchen, originally from Golok, started studying music at 15 years

पालका यो के प्रत्यों प्रश्लका। विंदा पीका चेंद्र ग्री क्षा ख्रुव ग्रीका पार्वे प्रकार प्रदे क्षा करा अ.इ.चक्का.अ.विश्व.क्षेत्र.क्षेत्र.क्षेत्र.क्षेत्र.च.व्यव्य.ज्यंत्र.च्यंत्र.च.त्र.चर्। विस्.वे.वी. क्षेत्रानाश्वरः हें अः नाबरः अनिब लेगा ग्राटः धेव। अर्गोब रेगे व्यापश ग्राटः व ह्यूटः नी र्वश दशःस्टामी था पुतास् वस्याविकामार्हेट वसः द्याव। दाश्चार्वेट मेका वहार वदे सू चालकः हुंचाकः चर्त्रेचाकः दीचाः सुं १८६वाः द्वेटः कुंदेः १८८४ स्वालेः स्वेटः । वालेकः सुर्वे व्यवस्थान वदैः महिषा द्रषा द्रवा अर्मोद्रा व्यम् । दृष्ट वृद्ध दृष्ट वृद्ध वृद्ध वृद्ध वृद्ध वृद्ध वृद्ध विद्या विद्य क्रेंदे बटाया में स्मयशनमें बार्य विया धेव।

विंट. पार्देश दश मा न दशया अर्थोद ची विच तो द ची न सूर राजा पर होंट. क्तुव केट मावट व्याप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त कार्य के दिया स्वाप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप वर्हें अस दुरा विरामित्र सम्मान स्थान स्था रैट पेंर क्षु क्षु क हट यो क क्षु आवक में निरास्त्र का नु हिट यो के निराम क्षेत्र वहरा सदः द्यालः च : च र स्वातः च स यम्बर-दर्भक्षा-द्राम-द्वीम्बर-द्वीदाय-प्रदादक्षा-द्रम्य-स्वरामिक्ष-अर्थेश्वर्यात्रात्रेयाश्वर्यात्रात्र्यः अर्थेश्वर्यः अर्थेश्वर्येश्वर्यः अर्थेश्वर्यः अर्थेश्वर्यः अर्थेश्वर्यः अर्थेश्वर्यः अर्थेश्वर्यः अर्थेश्वर्यः अर्थेश्वर्यः अर्थेश्व ग्रीम् विस्ति विस्ति हैं । विस्ति विस चीयोबाउदात्ताः स्थान्ते स्थान्ते स्थान्ते स्थान्याः स्थान्याः स्थान्याः स्थान्याः स्थान्याः स्थान्याः स्थान्या बन्देः "दस्याम् वद्दैः प्यानुदाबदायलेबायोबासीयोबायाचे क्रांचित्रायास्य विसायास्य थीद द प्यट ट्र मु १२६ ह्यट या दय होद लिया प्या हुट ट्र टा अहस दु मु ह्या दया देश ग्रार्थ्य प्रमुद्धान्त्र प्रमुद्धान्त प्रमुद्धान्त्र प्रमुद्धान्त प्रमुद्धान्त्र प्रमुद्धान्त्र प्रमुद्धान्त्र प्रमुद्धान्त्र प्रमुद्धान्त प्रमुद्धान्त्र प्रमुद्धान्त्र प्रमुद्धान्त्र प्रमुद्धान्त प्रमुद्धान्त प्रमुद्धान्त प्रमुद्धान्त प्रमुद्धान्त प्रमुद्धान्त प्रमुद्धान्त प्रमुद्धान्त प्रमुद्धान्त प्रमुद्धान प्रमुद्धान्त प्रमुद्धान प्रमुद्धान्त प्रमुद्धान्त प्रमुद्धान प्य

વિત્રવ ર્ફેક વરેતે વર્દ્દભ ગુદ ભાલભ વરેવકા શું ક્લા શુંકા હા ક્ષેત્ર છું કે ખેક सेंट्र क्रॅ.च.चाटः अटः चीयः देवादः सूटः चीयः सू च द्वायः यः दे त्ययः गुटः सर्चितं म्वियायनेवसाम्बरा यह्याचुरामीसावसूसायदे वियायनेवसार्वरास ปี.ก.ฐพพ.ต.ผูต

म्भुःपः नार्दे नि नासुरुः मुक्तः "अः भुक्ते नार्ये नात्रः नात्रः नात्रः स्तरः स्तरः स्तरः विषयः र्हेष्यं वरेते सहमा वर्षे व्या महीया व्यापार स्थापनिया नियम होते स्थापनिया स्यापनिया स्थापनिया स्यापनिया स्थापनिया स्यापनिया स्थापनिया स्यापनिया स्थापनिया स्थापनिया स्थापनिया स्थाप श्चरमःविरा। द्वयाम्पराधवायामःने श्ची याम्पर्धमाश्चेमाश्चेमायोन् श्चीमार्श्चेमा विषा कर्मा में स्वारं स वर्चर:बुबा

र्चर-तरु.कि-श्र्य-वियातयिय-क्र्य-विश्विक-क्र्य-विराधकात्रिय-वियात्रिय-क्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधकात्रिय-विराधका यहूरियरम् जाता वार्ष "दरे हैं ८ रूट हे तु : ॲवा वा : ॲट हूं ह ही : बूरःचःश्चेदःवेंबाग्रीकृत्यंधित।" ■ ■

old, and is self-taught in dranyen, mandolin, and piano. He has given public performances in Nepal, India, and the U.S., and is a song-writer as well. Gonpo began enjoying music as a small boy in his native Ngaba, and currently has plans to record an album. Meeting Palgön was a once in a lifetime opportunity for the two young artists, who had long studied his musical style, but met him for the first time at Latse. They spent many long afternoons at Latse Library, playing, practicing, and exchanging ideas with the musical pioneer. They later joined Palgön onstage at the Losar concert for his sets, adding rich accompaniment on the mandolin alongside Palgön's dranyen. Gonpo was featured in a solo, for which he played a traditional Amdo party song. Dawa Rinchen also performed a solo number, "A pho lug dzi," or "The Shepherd," a song by famous Tibetan singer Yadong. "Of course everyone knows that I cannot sing like Yadong," Dawa smiled, " but by singing this I express my wish that we will one day be able to celebrate Losar with him."

Tickets for the concert were for a suggested donation of five dollars, but many concert-goers demonstrated a deep appreciation for the artists by donating much more. The entirety of ticket proceeds and donations went directly to the artists.

The concert ended with the ensemble of singers joining together in "Achi dro (What a Happy Village!)" with each singer taking a stanza and everyone joining up on the refrain. The audience clapped in time and gave the performers a standing ovation.

Said one Tibetan audience member to the library staff as he was leaving the concert hall, "This is the most fun I've had since moving to New York." ■■

यश्रीतः स्वर । यी से द । या स्वर । या स

इ.रन्.अह्र्र्याचरायकामीलाझुषु.क्षेटायो.श्राप्यात्यात्र स्त्र। क्रियाम् ३४ त स्त्रायद्या स्त्राय स्त्रायद्या स्त्राय लेन वहुना भे नाम अप्ती लेन वहुना अवस्था । योना सुरः सुर ग्री जेना रेग्रायायार्थेयायाय्यायाः व्याप्तायाः व्यापतायाः व्यापत्यायः व्यापत्यापत्यायः व्यापत्यायः व् व्यम्बाद्यः २००८ वृत्तः हा ५ क्र्यः १२ क्रेब्रावा हे द्वां सहित्यहः र्' "र्वर्'र्'र्मो प्रवेश भ्राप्ता अर्था पर्वे प्रवेश में विश्वापते पर्वे प्रवेश में विश्वापते पर्वे प्रवेश में गर्दित्यवर्गायरः। गर्दित्यवर्ग्यरे से खें गर्देश में) से राजा से स्थार तत्र द्यो प्रतेश में द्रायायाया लेप प्रह्या गुरु प्रयोग प्रवास प्राया विषये वि र्वेट विराध रेश शेष प्रेप प्रते कुल र्लेट शावर हुँ ज्ञाल कुल विवासी ख्री प्रता ८८:देवायान्य अर्थेन मृत्वेन सें (National Institute of Oriental Languages and Civilizations) भे प्राप्त के के के के स्थार Heather Stoddard (परे क्षेत्र पवर सें।) ग्रान् पर्वे प्रत्या प्राप्त किया र्भे परे स्रुव प्रवर्भे व्यवस्थित्य के में र की हैं अ मेवा रहा। वे कुषा इ.व.चर्थातार्थे चार्स्य वार्त्य भाष्यात्रात्रात्र स्वाप्त स्वर्धाः वार्थाः वार्याः वार्याः वार्थाः वार्याः वार्थाः वार्याः वार्याः वार्याः वार्याः वार्याः वार व्यान्याङ्गः न्यो अर्हेन् विनः नुः न्यो वनु बर्के बावसे वावसू न बावस्याने वा चक्क 'घर्याया वर्षि रायदे 'हे था द्वार के या था वर्त 'के या था के या था है राया है 'क्सें रा यदै मुक्ष गुरु स्पेर । अविकादियर यदे स्थेर यवर से रहे । "त्कार यका है। . पदे : अह्वा : ५८ : हो रः वाडे वा : वो : वर्षे : वा : वे द : क्यों : रेवा : वा बर : वा वा वा वा वा वा वा वा व केंब लेगानी क्वा ग्रीस वतु सन् वेंब प्येंट पर ते गरी मार्ग हो । " लेख पर ते पर्दे न याबिदै र्चिया द्रवा याबुद यदा न्यादद । अवार्य द स्मूद ग्रीका वदा अवार्य इसका इस्त्रीर र्वे त्यान्य स्त्रीत मन्द्राच्या व्यवस्त्र विकास तह्याद्रात्याक्तुं अर्केनाव्याद्यास्वयार्मेदायवे र्वे स्वयः ४० थी बदानी स्टानी श्रुँदानार्टे अपदार्वेदानी श्रुदारेट प्रदारें सर्देश वहेंदा श्रीदा पवे विंदानी सुदर्हें अः "अवाच बदा से हिंता," नी और वा नशुदा पवि राषी रा नवर वर्से मारा लेगा महरा। भ्रासान प्रें स्वरे पंतर में हो ही ही ही से सहर मेना विस्ताने अविशादियामा अस्याद्याद्यात्या अर्थेना विस्तान अर्थेना विस्तान वि त्तु दिश्वामी प्रवृत्त त्रा भारत प्रवृत्त मिन्न मी'वर्षात्।" लेबायदे मासुर मत्र मार्कर । हा 🗢 मदे केंबा २३ हैब वा ही दिये अर्हे द विदाद का विं के कुंवा विकास गदिन वही बाल सका

Speakers from Around the Globe featured at Latse Lecture Series

atse Library continued to host lectures and talks featuring speakers from around the world. In June 2004, the library hosted **Sang Dhak**, a researcher at the Chinese Center for Tibetan Studies in Beijing. A widely-respected scholar of Sanskrit, Sang Dhak's talk "The Lharampa Geshe System of Tibet", was based on over three years of research on the Geshe Lharampa monastic education system. Later that year, Latse was pleased to welcome back Professor **Heather Stoddard** of the National Institute of Oriental Languages and Civilizations, Paris, France. Professor Stoddard is a foremost scholar of Tibetan

literature, history, and art and was a panelist at the Gedun Choephel Centennial Conference held at Latse in 2003. Dr. Stoddard presented her talk entitled "The Emergence of Rebkong (Tongren) as an Important Center of Tibetan Culture in the Late 20th-Early 21st Century" in Tibetan and interacted closely with an engaged audience. In the spring of 2005,



खाःत्ये। Alai

Jambian Gyamco presented an

engaging talk on his experiences growing up in Khams during the 1950s, as well as his work *Gesang Meiduo* (Lucky Flower), considered to be the first modern Tibetan novel. **Pasang Wangdu** of the Tibetan Academy of Social Sciences in Lhasa made a fascinating presentation with "Research and historical findings on Tibetan Imperial Period Tombs of non-royal lineages."

न्ये अर्हेन त्याद त्याद त्रहें व पन अ त्यु अ न्य अहम न याद र्ये व की र्क् वा मुक्ता मुक्ता विकास के वितास के विकास के रैगानदुवे स्वीरानदुन के दार्शे " लेशामवे नियो के नियान हो मुंगिशान स्वीगशा याबर सायब र दर देवे रहें अ श्लेषा या धेव। यत्व स्वा देवे अहुवा तृ व्यावार ठवःक्रीःस्त्रूरःर्ह्रभःयः**८५ः त्ये** त्यन्त्रभःर्द्यः सर्ह्द्रात्वरःत्यः गुरःक्रेन्य्यःक्रीःरुषः गस्टायत्राम्बदाबेटा। गस्टायत्रामीहेशस्टीयाद्वेशयदामीणी त्यरावस्त्रत्य। स्राप्तेः "मृत्यावर्स्वतःनृत्रस्यः स्त्राः" बेमःववैः स्त्रूरः %सः ब्रुं र क्रें य ने नही र प्येमा है नहीं र क्र र हे ने त्य सुन क्रें मार्थ क्या मिन है नहीं न वहूर वधियात् श्रिकाल्या देव-दे-त्य-ब्रुद-र्हें अ-दे-वेद-धैवा-हु-वश्चुर-दश-श्चेत्य-दिव-दा-धैदा ञ्च.च. ४ चदु.४८.ज.धूंच.चर्थं

वहेगायाये ५ 'स्व केंगया **Dr. Jigme Phuntsok**

सम्बर् Cynthia Chao विशासशार्थे रदा ग्रीश्रायञ्ज्ञास्तरी मुर्गायह्नुत्रायुद्धः सुर्वे स्थात्रा न् चेंन् प्रसंधें ग्रामाणी ह्या घट गो हें बट परी न् वोंब प लिया यी या परि हित से दे रे दर्के र या अहे त र्से त रहु का र्थे र। Cynthia Chao धै'य'सुय'वदे'सुर'धैर'या श्रॅशः र्सूना ना बुनाश यह यर र द यत र र द यत र स्त्रीना বহুর বর্ শ্লবর শ্রী রমর শ্রু দেরমর বরুর দি শুদ *ૹ૽ૼ*ॱਜ਼੶៹ৼ੶៹៓੶ਜ਼੶៹៓៷੶ຒ⋠੶୴ৼ੶<u>ਜ਼</u>៷៲

ने क्राचन्द्र स्वा गडेवा वी हेरा सु छोरा इ.उह्मायास्य स्वास्य स

अर्हेर वर:र. "रेर:रवश:र्श स्नेवश:ग्री:वॅर:श्रुवः" लेश:पदे:ग्रायुरः चत्र-जाबर लेटा विंट मी चेंद्र शुब्र मी लाश क्षेर "अर्वे क्षेत्र वहेनामा येट में ट सुर नर्शे मा भी से स्ट्रांस अर्थे से र यह गरा येट में ट सुर लिय वह्ना निरा। " नहिशानी क्रें राया नस्राप्त निराक्त मान्या। असा हे वहेनामा से दासूत र्हेनामा के समें ह्या मुह्त के मान के नाम के विंदि है में दिस्स ह क्षेत्र स्वाद क्षेत्र स्वाद क्षेत्र की कि स्वाद की कि स्वाद की खोर्या <u>इ.स.च</u>्चाया या स्थापन वह्रवार्यायदःस्वरःस्टर्धेद। स्वात्रक्षेत्रक्षेत्रं चेत्रञ्चत्रक्षेत्रं चेत्रञ्चत्रक्षेत्रः स्वात्रक्षेत्रः स्वात्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रः स्वात्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत श्चर ग्रावर र श्चर पर्वे अरगी रहे अर श्चे र ग्राहे अर बुद र वर्ते वरगी अरश्चर देगा अर यम्भावस्य वित्र सुर क्षेत्र क् यः महिषान्य मुद्रीयान। " बेरायदे विमामहष्य मस्टायदा महरा।

On April 23, the library hosted Geshe Khotse **Tsulkhrim** in conversation with library director Pema Bhum. Khotse Tsulkhrim is the editor-compiler of the large-scale compilation project The Grand Collection of Quintessence of the Tibetan Ten Sciences. Later that week, famous novelist Alai came to the library for a lunchtime discussion of his experiences as a writer, which was followed by a lively question and answer session. Alai's Red Poppies won the Mao Dun Prize, China's highest literary award, and was translated into English to glowing reviews in the west. The novel has also been translated into Tibetan and has been and continues to be published serially in Light Rain, the literary journal from Xining.

In May, Filmmaker Cynthia Chao gave a screening of her short film "Love for Qinghai," an intimate glimpse into the daily life of Lom-gya Monastery of the Jonang-pa in Dzamthang, eastern Tibet. Ms. Chao, who is originally from Taiwan, also showed slides from her film-making experience, and fielded questions from the audience.

One week later, Dr. Jigme Phuntsok presented "Tibetan Medicine in Modern Times" where he spoke at length about his medical enterprise The Qinghai Jigme Tibetan Medicine Co. and the Qinghai Jigme Tibetan Medicine Research Institute, the former being the only privately-owned enterprise started up by a Buddhist monk in eastern Tibet. Dr. Jigme is a wellknown specialist of Tibetan medicine from Rebkong who has developed new kinds of medicine with technology combining Tibetan medical theory and clinical experiences. Another lecture on Tibetan medicine focused on another angle: "The Relationship Between Mind and Body." Dr. Tenzin Dakpa is a gradaute and presently senior doctor of the Men-Tsee-Khang, the Tibetan Medical and Astrological Institute, Dharamsala,

ष्रोबाह् 'यसूब 'यहेंब 'याग्राबाद' त्याग्राबाही कु ग्राम ह 'म्याबाद 'यहें न ग्री सूब र्रेश विट दश र्वेद हैट है कर वर र् रेट दे दर वी ख़ुद य जट जी हो ञ्चतः है अ। प्रदः नी : अव : व्यमः तः हो नः हो वः स्वरः मावदः नी : विदा

वा हो दिया सार्हें दावदावया दियो मात्र केता से म् मु दु के दिया वासुदा मन्द्राचेनामा माज्या मा र्गेदु:र्मेट हिराद पेट प्रदे त्रवार्धे नाया के रेगाया क्षेत्र म्या के दाये है या यम:नेदःयदःनी:र्क्तःमेन:र्वेदःश्चदःनुःश्चेतःश्चेदःश्चेतःयद्वितःयद्वितःय्वेशःय्वेता र्से दे : अर है भ : ग्रे : ह भ : ग्रे : ह भ : ग्रे : ह भ : ग्रे : में स्थान स् यम दर्धात विष्य के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ विष्य के स्वार्थ विष्य के स्वार्थ के स् चडराणीः क्रें रावादयो देवादर क्रें अप्येवाक्षेत्र विवानी क्रें अपाय ये प्यट प्येता ॲदे नासुर चय् दे लार है या दे चेंदा सूद द्वार हिंदा हुया यदे व्याक्तिया

শ্বৰ দ্বামানৰ গ্ৰী ঝ শ্বৰ্ণ উবা

की संस्ति । अप स्था भी स्वास्त्र स् अभेन्युन्ग्रीअर्न्दरार्थे भ्रानुन्ते (microphone) सुरुग्रान्दर्दरायीया यम् मृत्वस्य मे प्रत्योगाययन वर्षेत्य विमाययन केंगाय नर क्वीं वर्षेत्य विवार्त्वातार्क्वायाने प्येत्। यने ते प्याने त्यानमानुन के प्यते सूत्र प्रवास्त्रात्य द्वराया ग्रीया प्रदानी प्रमुखाया केंद्रा पाया प्रदान द्वराया प्रदान प्य प्रदान प्रदान प्रदान प्रदान प्रदान प्रदान प्रदान प्रदान प्रदान शन्दा वर्गेदाक्षेतां डे प्यटायेदायम् स्रवसार्धेवा स्टाइटार्ळेदायु त्या मुका "द्यायहेंद्रयायद्यायहा" मुकास्त्रयाद्याम् वाराधाद्या वार्स् वर्ने त्याल्वाका आवर् की की वारका हु राजा प्यान्त्वाका आवर् से सेवे खेटा दशःश्चद्राद्याःवः क्षेत्रावः क्षेत्रावः व्याप्तः द्राप्तः देः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्य सद्र-तम्यान्या वर्ने हे स्ट्रिक्के स्वर-त्या स्वर्गन्य स्वर्गन्य स्वर्गन्य स्वर्गन्य स्वर्गन्य स्वर्गन्य स्वर् र्रटासर्क्रमाञ्चा करेते विषेत्र यार्हे मात्रान्त्र साध्या स्वर्णना स्वरं साध्या स्वरं साध्या स्वरं साध्या साध्य साध्या साध्य ब्रुवरा श्रुव: द्याः ग्लेंचाः वर्षों सान् स्रम्थः ब्रेवः वाः श्रुव: द्याः साववः क्टः समः श्रुः

India. Dr. Dakpa, now lives in New York City, and serves as Resident Health Advisor at the Medicine Buddha Healing Center, the first U.S. branch of Men-Tsee-Khang.

Latse was also very pleased to host a lecture by Professor Guru Kyi, an associate professor in the Department of Mathematics at the Northwest University for Nationalities in Lanzhou, Gansu Province, P.R. China. Guru Kyi is a pioneer of her generation for teaching sciences in the Tibetan language. She is the author of several books and articles covering principles of mathematics, mathematics education, Tibetan mathematics in architecture and thangka painting, and Tibetan astronomy. Her talk focused on the history and current situation of teaching mathematics in the Tibetan language.

An Evening for Poets

n November 12, 2004, Latse hosted an Open Mike Poetry Night open to all area Tibetan poets. For those unfamiliar with

the concept, "mike" is short for microphone, and an

open microphone means that anyone is welcome to approach the microphone and recite what they wish. This activity is a popular method in America for poets to share with audiences new materials and new styles. There are clubs and venues devoted to both planned poetry readings, and the more casual and



न्नरःस्माळे नह्ना Wangchuk Tseten

मिलेमाबा सुर रमाया विराया हुँ रायसा न मुर्ग परिवासा सुराय प्रीता स्थाप 型ロタ・子エ・スロエ・ ह्यम् कें यहत्र अमार्था था है दिया सहिद्दा त्या स्था सम्बद्धा दुवितर स्थित स्था विद्यानियः क्षेत्र त्याया दे त्या हेरा द्वत की यारा वर्षेत्र केंद्र रोत योरा प्याप्त के केंद्र राजे के विकास के विकास केंद्र याचर सहिता सर्हेट स्मूट त्याव लेवा यो स्नूट त्या यासुट त्यत्व स्रोस त्या वा विवा यात्रम्। न्यम्ध्याके यहत्रे विस्यम् अत्राम्य विषाणीय प्राप्त विस् র্বী: "র্বর্ন্ত্রীর ইন্যানার্থার স্ত্রীর আধ্বানার্থার ক্রানার্ব্ব शायर चार्यात्रार प्राप्ता प्रिंट चीर्या स्टाप्तेन चीरा तस्र अर्था पारी ख्रीर प्राप्ता प्राप्ता चीरा



र्गे त्युयाञ्चे पाञ्चे पाञ्च के व र्ये व दि दि नि स्व केंद्राचे प्रहाराया **Professor Jamspal of Columbia University**

र्ग्वेजायाबद्या थी.रबाक्रें हैर ପସାଧ୍ୟ ଅଧି : ଖ୍ଲା ସ୍ଟ ଅଧି ସ୍ଥାୟ : य:बेया:क्रेंयाश्रायद:यी:अतुद:तु: ব্রথম প্রের্ শ্রম্ম প্রথম প্রথম প্র র্মুয়ার মধ্য বেশ প্রায় বিশ্ব বিশ্ यम्बर्गस्य स्थाना स्थित स्टर्मिय स्वर्थः थी'न्याकें'नेरायम्याम्।मुन्सूत्रास्याम বৰ্ষাৰ্মান্তর্ব্ব-চুন্সা

गॅिल्साङ्गेप्याङ्गेरावाकेर र्वेदि द्यो क्व केव के प्राप्त हमा व्यम्बार्यस्थात्र्याः सम्बद्धस्यः विवा ने र : र र र र न् त्र र व र र ने न र्'न्यूम्बर्'विरा दे'र्बर'विर्'गी स.सर.ज.२०४०.सर.रं.चरीयान्। दे दशकें वाश्वाल्याश्वायायाव्यायार्कदः अ'धर'य'द्रगश्रञ्जर'द्रात्त्र्र्ग

व्यन्त्रम्बास्त्रन्त्रः स्त्रान्स्रम्बास्य स्त्रान्य स्त यदः सुर्धेद या ने त्यार्के माना सुमाना सुमाना सुर्धे प्राप्त सुर्धे प्राप्त सुमाना सुर्धे प्राप्त सुर्धे प्राप्त सुर्धे प्राप्त सुर्धे प्राप्त सुर्धे प्राप्त सुर्धे सुर्धे प्राप्त सुर्धे सुर् स्रायतः दशार्विदः योशः द्वीतः स्रोताः तुः दीशः प्रते ः श्लूतः हुँ स्रायता हिता ही सः र्योताः दुशा यार्बेब स्रोक स्रोब र त्या याय देश स्रोत र भेवा यात्वव यात्वेवा यो वह त्यार्वे ह स्रोवे र त्या चुैअ'चै्रअ'पदे'स्रुब,'दम्मानी'बद:५,'५मा'स्रूद:५८ हेंग'दकरमाहेश स्रुव।'सरसर्वेद र्षेत्राया क्षुत्र र्हे आञ्चीत्र दार् रहें त्राया वर्षे आयुत्र तद्र त्रात्र त्रार प्रत्र त्रात्र त्रा रैगा गो 'वसू था कर्षा था चहेत्र त्रुषा त्रुषा अधारते 'द्रचै हर्षा था 'ब्र्रूद् 'श्रेवे 'चरुषा'ग्री' चर यहूर्-पूर्य अ.लटश.श्.चैश.लूर्। श्रुवे.त.रेर-मेश.वंश.वंश.पूर्य सर.यो.पश्राश केंश "धें मृत्यवे अत्र मुँ मुर्थाय वरेत्य।" बेराव मुंरास्त्री मुक्य विरा देवे दर विर मीश वेर मी देर सुवश मी मादश सुर श मी अर्थ र हुं या अर्देद र्थेर। ■ ■

experimental "open mike." This was the first time Latse has held such an event, and while the participants were few, they proved to be extremely dedicated and respectable poets in their own right. As the evening came soon after the death of famed Tibetan poet Yidam Tsering (see related article in this issue), the Poetry Night started off with everyone reciting together some prayers for the deceased laureate. Wangchuk Tseten who was visiting Latse at the time, then paid homage to the memory of Yidam Tsering, speaking movingly of the latter's last moments on earth. Enlarged photographs of the poet were displayed in the event room. Trace Foundation's Kunsang Gya read some of his favorite Yidam Tsering poems. Wangchuk Tseten, who is also a well-known poet and a co-founder of the tibetcul.com website, then recited some of his own works.

Professor Jamspal of Columbia University opened the "open mike" portion of the evening by reciting a poem first in modern Central Tibetan dialect, and then in his native Ladakhi dialect, inviting the rest of the audience to join him. The group was delighted to explore the intricacies of Tibetan spelling, as spoken Tibetan in Ladakhi retains the sounds of all letters used to spell a word (for example, Pö kay (Tibetan language) is pronounced "Böd sket.") Lobsang Namkha presented a selection of his poems written in English. This young poet's experiments in writing in a different tongue was alternately charming and imaginative, with allusions that ranged from Buddha to astronauts. Jinpa Dhargay recited his own carefully wrought work "Prayers Before the Potala" (Po ta la'i mdun gyi gsol 'debs) reflecting his thoughts on the current Tibetan situation. ■

या है द्ये अर्दे दावर द् त्रम्यश्रम् न्या क्षेत्रस्य विष्य क्षेत्रस्य विष्य क्षेत्रस्य विष्य क्षेत्रस्य विष्य क्षेत्रस्य विष्य क्षेत्रस

०० हा र केंबा २७ हैंब। या हे द्वी सर्हे द्वी सर्हे द्वी चार्क् चिन्नाच्चे। भारतु म्यानान्ताचा भारत्याच्चे स्वास्त्राची स्वास् वर्त्रोधसः र्सूद्र विरामी अवस्य या वरुषा गुरामार्द्र वर्द्र देव ल्ला पेर्टा र्से मुखा य। अ:३ताःच्यराय।" विशासदैःवन्त्रोध्याः वेत्रं राने रनः व्यूतः वनयाः सुःवाः है दर्भ अहें दिन्दर दुर्जे नाया थे। वर्जी अया क्षेत्र देर में दिन्द नाया कु अर्जे ५८:(५च्चैत्रः यतः क्चीः वेंत्रः तेंत्रः तत्राधे प्रया।। ग्रास्युतः कें ग्रायां की स्तरः यो.ला.वंबा.संघवा।) मुँ.घबट.मैं.बाषू (ला.मुंद्र,चा.ज्रूर.म.मूं.लु.मूंट.प्रियः ड्रॅल.ड्रेर.बुब.त.वयास्वयम्।) चश्याञ्ची.३ल.त.चार्येश.च्री.

Latse Hosts Discussion on Contemporary Tibetan Art Movement

n February 26, 2005, Latse Library hosted a roundtable discussion on contemporary Tibetan art with three Tibetan artists as well as invited scholars from the fields of anthropology, art history and museum studies. This event was held in conjunction with the opening of "Old Soul, New Art," an exhibition of contemporary Tibetan art at Tibet House New York. The exhibit featured the works of the three artists: Gonkar Gyatso (London, U.K.), Karma Phuntsok (Australia) and Losang Gyatso (Boulder, Colorado, U.S.A.). The panel discussants included



র্ক্তবিষ্ঠান্ত বিষ্ঠান্ত বিষ্ঠান বিষয় Dr. Clare Harris র্ভ্তবিষ্ঠান Leigh Miller র্ভ্তবিষ্ঠান স্থান্ত ক্রিন্তবিষ্ঠান বিশ্বনাধ্য ক্রিন্তবিষ্ঠান ক্রেন্তবিষ্ঠান ক্রিন্তবিষ্ঠান ক্রিন্তবি Panel discussion (from left to right): Dr. Clare Harris (front left), Dr. Losang Rabgey, Leigh Miller, Losang Gyatso, Karma Phuntsok and Gonkar Gyatso.

ষ্বীর বের্নী মন্দ্র বিদ্যা । ১৮ বি Susan Chen (জী র্ম ই স্ক্রিব ব্যু ক্রির । ม์) Karl Debreczeny (ดิลา(จาลักลัสามาธิสาม์) Dr. Clare Harris (កន្លិត ៈលុត ឃ្លិះស៊ីជា ស៊ី ភ្នំក កិ : ស្ល័ក ឃ្លាំង ស៊ីវា Dr. Margarel McLagan (तेतु:र्भेनाःर्सूनःम्राकेतःस्) Leigh Miller (स्री:र्से:र्सूनः च.कुर.स्र्। ध्र.चवर.रच.म्ब. (चूर.ह.बु.ल.लु.ध्रुंच.च.कुर.स्र्) चश्य र्भे 5| Dr. Carole McGranahan (विर्धेर सर्हे र्श्वेव व्युक्ते र स्था) र्हे वाका यन् यने मा क्षेत्रा होन आवत नार्डे में प्येत पाये कत्र या कें नाय यन् यने या लूनाया र्कें न्यायत् तर्ने त्यासी सु : यदा सु द : स्याप कें न्या से द : यस द र्भेशः ग्रीः दुंत्यः नुः र्हें नायः विन्ता विन्ते विन्ता विन्ते विन्ता विन्ते विन्ता व त्तत्र, जैरा 3) मुँ लिया जया तर्या सुर मुण्या में या मूर्या मिया दशरीट रुषाया श्वेतमायते श्वा इया देश वेंदा श्वी श्वा इया दे श्वेंया श्वी द वर्षे स्ट्रिंस्य दश्र देट स्वश्र भी वर्षे स्वर श्र था वर्षे स्वर श्र था वर्षे स्वर श्र स्वर स्वर स्वर स्वर स्व क्र्यायम् विषयाम् विषयाम् विषयाम् विषयाम् विषयाम् विषयाम् विषयाम् <u> न्त्रीय पर्विम। मेर्के या स्थापक नमा। मेर्के यदि हैं नमासी। मेर्ने माल्य न</u> रव्रीक्रियायस्यार्थे। र्ह्यम्यार्थेरार्थः रहेतास्यापुरा चन्द्राचन्रसम्बद्धान्द्रः १६ व सम्बद्धान्त्रः चार्के साम्यः चीर् विश्वः हे विश्वः हे विश्वः हे युवाः हुः च हृदा

"तुःश्वें ना है र स्पान्या। भू स्याम्यस्य।" बेरायदे त्योसस्यः भू ते ते ते ते ते स्थाप्ता स्थाप्ता स्थाप्ता स्थापा स्यापा स्थापा स्यापा स्थापा য়ঀয়৽ঀয়৾ঀ৽য়ৢ৾য়৽ঀ৾ৼ৽য়ৢ৽ৼৼয়য়৽য়ৣ৽ৼ৻৽য়ৣ৾৾৽য়৾ঀ৽৻য়৾য়৸৽য়৽য়ঀ वर्षोग्रमः र्सून पश्चमार्केषः ग्री न्दार् हैंदारवसार्वेद से दे हिंदा सर्वेत पर्दिर देश ग्री वर्द पर खु अर दरा दशे वर्षा वर्षा गर्दे वर वर्षा गर्दे वर्षा गर्दे वर्षा गर्दे वर्षा गर्दे वर्षा ग नी बर के श मुं के बार्मे के बार्म के बार के अर्देब प्यम् अर्देब प्यते देर म्यवशक्ती में अर्देब पाउँ र प्यत्न अर्देब प्रमान दे: र्क्षे त्वीत्रक्ष क्षेत्र त्वदे हैं "क्षे त्युत्तक देट दुक क्षेत्र क्षेत् मु:सर्क्रे:प्यम्बार्यकाः २००८ स्.याबारःपर्द्यमानिकाः पे.सारःकार्यः मैंत' (Tamar Scoggin) के से सून्या मानी व्यवस्ता है दि दस या धेक व्या र्थे अ'न'रे अ'ग्री' वर्गे अर्था र्थे ब'वर्ने' वर्गे न'से मा मा बार्ग वर्गे अर्था र्थे ब'वर्ने' २००५ स्रुट्ट. ५ यदु मि र्हेर यम र स्रुट्ट में विर में विषय मारीया २००४ व्यतः मुः परु पारे पारमः त्यो समः सूर्वः वदे सम्वः स्थः स्थानः व्यवः University) यानर्भेत्। बे सूनाबानेरान्त्राचेत् की सुनाबानेरा ॻॖऀॱज़ढ़ॺॱढ़ॖ॔ॣॺॱढ़ॏॸॱक़ॗॺॱਸ਼य़ॖॏढ़ॱढ़ॸॕ॔ॸ॔ॱॲ॔ॸ॔ॱय़ॱढ़ॖॖॖॖয়ॺॱॸॆॣढ़ऀॱॸ॔ॱक़ॗॕॱ www. mechakgallery.com অ'ইব্ম'ইব্মা

Dr. Kathryn Selig Brown (Rubin Museum of Art); Susan Chen (Emory University); Karl Debreczeny (University of Chicago); Dr. Clare Harris (Oxford University); Dr. Margaret McLagan (New York University); Leigh Miller (Emory University) and Dr. Losang Rabgey (University of Virginia). Dr. Carole McGranahan (University of Colorado) also participated as one of the main organizers of the discussion. The event, which was open to the general public, was held in a roundtable format, and covered three main topics of discussion: Unexpected Lineages: from Traditional to Contemporary Tibetan Art, which explored the path Tibetan art has taken from the traditional style to that of the modern age; In the Studio: Imagination, Influence and Inspiration; and The Mandala of Art: Audience, Community and Cultural Identity. Question and answer sessions at the end of each panel enriched the understanding between the gathered discussants and the audience.

The "Old Soul, New Art" exhibition was the first joint exhibition of these three distinguished artists in the emerging field of contemporary Tibetan art. Exhibition works ranged from photographic prints that explore the many faces of contemporary Tibetan identity, to reinterpreted paintings of Buddhist deities in extraordinary circumstances, to thoroughly modern paintings that explore the Tibetan soul. This exhibition is also the inaugural project for the Mechak Center for Contemporary Tibetan Art based in Boulder, Colorado; the Center was founded in 2004 by Losang Gyatso. Tamar Scoggin, project manager of the Mechak Center, curated this historical exhibition. The exhibit was up at Tibet House through early May 2005. In November 2005 it traveled to Emory University in Georgia, Atlanta. For more information on Mechak Center for Contemporary Art, please visit their website: www. mechakgallery.com. ■ ■

The Dictionary of New Terms and The Chinese-Tibetan Dictionary

■ ধহ'ঝ'বর্ঝা

■ Pema Bhum

'यार'यिष'याखर'योषाः ७७८० क्षातात्त्र्रीयभन्नात्तरमायाः यहूर सुर्-रर के यद स्वाप्त अभाक्ष थ्या र याडेवा सुराओं राकेता कु दवा याल्रा यो वहेंद के केंद्र राज्य या विकास वाका यारः अर्रे न्तुकावअकायासुआन् व्येरायदे क्वान्त्राया स्वाराह्य कार्या विदेश ब्रॅस्य्यराष्ट्रस्य दर्दर्भ अत्रावर द्या वीस वेद स्योग मुख्यर वर्गे वर्द्ध वासा

<u>देःद्रशः वेर्जः नाप्तप्तशः ग्रीकानञ्चरः नुवेर्देदः अर्वेरः नरः ञ्चरः नदः न</u>

सूर्जी:कैना:अर्हेर:हैंना:नर्गेशःमायः श्लर्गारीया:ग्रुर:पेर:वर:क्रु:वेर:५१४ के.यर.शर्बर. ₹41. ক্র:খিবা गी'सेट'

यहँर्'दश्यायीर'की বাধ্যম:গ্রী:ক্রুবা इस्रशर्ने राने सीटा कुटा इस्रशार्ने र বর্রাঝ'নএন ने खूर पश्चर पदे केंग सर्हेर लेगायाञ्चरतर्गे नर्ज्याया देवे बदार्की और जुदासदा के वा सूचका देवें चिवा सूचा को स्रावें ้ ฉ'ระเมโต์ ฉลิ่ามีะา<u>ก</u>ะาฐมพ'ริมฟร ัฐฉพ'ซี้ตามียัรริ *५८:ञ्चर:ष्ट्रदश:दे:चाक्षेश:धद:शेद:दु:ॼु*र। র্ব্র নার্বার্থে থা আমার্নার্ব্র ক্রামার্ব্র ক্রান্থা নার্যা মার্বার্থি করিছে ক্রান্থা করা করিছে করিছে করিছে ক

Once the Chinese communist government had secured control of all Tibetan areas circa 1950, it then faced the challenge of integrating these regions both administratively and ideologically. In order to further this project, Chinese Communist Party offices that had been established throughout Amdo, Central Tibet, and Kham, together with regional publishing houses, set out to translate a mass of Chinese administrative documents and ideological materials.

Recognizing the importance of a Chinese-Tibetan dictionary to ensure the accuracy of translations and the standardization of terms, some translators at that time began to translate a dictionary of Chinese neologisms into Tibetan. They did so by retaining the Chinese terms and replacing all of the Chinese definitions with newly-coined Tibetan terms. The majority of words in this glossary were thus not vital for their translation work, while a great many words

> that the translators did need were lacking. As neither the dictionary nor its method of translation was beneficial, the book circulated only among translators, not the general public.

The Dictionary of New Terms in four volumes, compiled and published in the 1950s.

नुसारवसार्वेदासदीखें स्वसायाव्हेदी स्टाया

बिषायदे में रामकी

चर्सेयोश:पुर-दग्रःस्रेय:चिशःसद्यःस्र-याश्वरःचस्रीयाशः

वः सुर मार्थर मञ्जीमार्थ देवः पत्री

१९४२ वेरियो है बाबा वेराये हु मेरिया वर्ष मेरिया है नाम मेरिया है नाम की कारी हु च्र्-लाचा-४.चश्ची-र.क्र्-रचषु-लाचा-ग्रुचीशालशाचान्नी-राची-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-वान्नी-५८: ह्यु र हो ५ : वे दे : प्येन : वो : व : क्षु र : यह : वा श्रेन : हो ५ : ये वो : व्हें वा श्रे १ : १० : १० : ४ व्यर्भे हैद र्रावस्थ सुवाया । आसरे सुवाय ग्रीम वर्र ग्री वर्षे डेगा अनुआवर्षे अका गुरेका स्टास्टा जीका वर्ष्या जार्के वा गुका भवे । कुर्ने दा गुरे श क्षुन् म्यारा इस्या मुहेम् तु सुर्या हे बुर र्ने र म्यार द्वारा मुदा मार्ट प्रदेश तुः तै : श्रभुदः वार्थारः वश्चेवार्थः वेदः दुः दः वेदः तेवः विरुधः विरुधः विरुधः विरुधः विरुधः विरुधः विरुधः व श्चन हे राष्ट्रेया र्ड्स प्रेंन प्राप्त १९४८ व्येट हो पर समान्ये सूर्य हा राष्ट्र

देर:बर:वॅद:बर:वी:धेवा:देवाब:बु:वार्डे:वहॅद:ब:यागुदु:बे:दर:१ रश्चरासुर्यायाः सूचायाः यादाः विष्यान्ताः कृषायाः स्वायः स्वयः स्वायः स्वायः स्वयः स्वयः स्वायः स्वायः स्वयः स् ल्र्य. इ.स.च. सं. चे.दु. झें. झें र.की. शुर पर्टा नि. ये. ये यो यो. क्ये. झे टे.की. यर. र् .स.कट.झूँ र.मे.क.चु_{र.}च.श्रेर. _"उत्त्र्र्र.कंश्याताम्भा, रटा "मैजाचाङ्ग ઽ૽ૺૼૼઽ૽ૡૢઌૢૻૹૻ[ૺ] ૽૽ૺ૱૽૽ૡૢૻ૽૽ૢૡૢ૽ૡ૾ૺ૽ૹ૾૽ઽ૽ૠૢૢૼૢૹૹઌ૽ૹ૽૽ૼ૱ૹ૽૽ૼૢઌ૽ૼૢૡ૽૽ૡ૽ૺ बदः र् वितास्य मान्द्र विवास्य स्थित। यदः क्रेना सर्हेन स्वेत देवे बदः <u> न् 'याहर 'यिय' हु र 'यदे 'से र 'सु र 'याश्वर 'य 'या र 'वे या 'धु श 'शु 'या वर 'न् 'हु र '</u> यः भरः भेरित्री द्येरः द्या देरः भरः श्रेशः कुथः बेरः यः यूः तुः कें वाः सर्हेरः देवे दर्द् प्रस्केशक्ष्याम्य हेशः हुर र्षेद्र यास्य सुर्दे।

इ.र्शेट.योश्चर.पश्चीयोश.ट्रेच.योधेश.त.षे. ७७८८ स्ट्र्य.टेनु.सेय. हुम। देव देव बर की सेट वह संदर संग्रहरू वें के के के की मानु है की स चर्नेश.तपु.षूर्याश.पर्2. $\frac{1}{4}$ यश.र्टर.तुपु. Φ ज.लूटश.शु.रेशरश.परीश. यदुःलुयो.क. "ग्रीट.स्.मु.रभटभःभ्री भधीयःभितायवःग्री ३.५। विभवा ॥ वर्षः ्रभः तुत्रे विभग्नः नटः मृत्र्दः मो श्लेमः मृत्रे नटः वहेतः श्लेदः श्लेदः मी स्मृतः मारमः भः तुत्रे विभग्नः नटः मृत्रे ने मान्ये मान्ये निष्ये स्मृतः स्मृतः मी स्मृतः मानस्यः स्मृतः स्मृतः स्मृतः स्मृ ्यः म्बेम्याः विष्याम्बरः स्प्रिं सः सेत्। कें म्बरः यत् : देरः १ में स्याः क्रायः स रैद'र्स'के'न्द्र'यह केद'रैद'र्स' क्षु'र्लोद'य'गृहेष'गुद्र'येवस'र्लेद्र'य'न्द्र'। क्रूयाय.तर्ं. देपु. क्र्या.यया.याध्य.तविषा.चीर.यपु. क्रि.व्या.यीर. वित्र हर नी मल्र मी इ विश्व र र में भेता है र मोश्र से साम्य है स नर्वेदशः भ्रें र:ल्यः थें न:यरः वाग्या

देरः अरः अरः वेंदः दरः वः कुः व्रिवः कुं तेंदः खेँदः वाहेंदः वाहेदः ववे कुः बनान्द्राह्यबान्द्रान्ते । हो अरु ५८ मान्द्राने । क्षेत्राने विष्टुर में द्रा मुै.ब.श्चर्यायात्राचारम् . "रट.श्चेंट.मुँट.मुँट.मुंट्या. इरावाक्री.वी.रटा $\frac{1}{2}$

The Dictionary of New Terms (4 vols.)

In 1952, a corps of Chinese and Tibetan translators in Beijing began to cull Chinese terms and their corresponding Tibetan glosses from works translated into Tibetan in preceding years. In 1953, this group was joined by Chinese and Tibetan translators from Khams and Amdo. Together they pooled all of the Tibetan neologisms each had collected and deliberated every term. The first volume of The Dictionary of New Terms comprises the fruit of their efforts and was published with more than 2,000 entries in May 1954.

Many terms still used in Tibet today, including transliterations from Chinese (e.g., kru'u zhi for zhuxi [chairman], gung khran tang for gongchandang [Communist Party], and u yon for huiyuan [member]), as well as terms frequently used in Chinese politics (e.g., 'byor Idan gral rim [bourgeosie] and rgyal gces ring lugs [patriotism]), were first set down in this dictionary. At the same time, this volume of the dictionary contains newly coined terms that were later changed. For example, the Chinese term zuguo (ancestral or motherland), which we today gloss in Tibetan as mes rgyal, was translated as pha mes rgyal khab (lit. "forefathers-country") in this first dictionary.

The second volume of The Dictionary of New Terms was published in 1955. All of the terms in this volume were drawn from Tibetan translations of nine documents concerning law, governmental structures, and administration. Among these was the Constitution of the People's Republic of China (PRC), which was ratified at the First Plenary of the First National People's Congress convened in 1954. Prior to printing, each of these nine Tibetan translations was carefully reviewed by Geshe Sherab Gyatso. Also in attendance at the 1954 Congress were His Holiness the Dalai Lama and the Panchen Rinpoche. Before the Tibetan version of the PRC's first constitution was distributed, it was also presented to His Holiness the Dalai Lama and the Panchen Lama for their review and consideration.

This dictionary contains Tibetan neologisms for Chinese

बीटासुतुःवोदः (रावीःषाः) वृःतु। वीं सवीःबीटासुःष्येदःगुटावृःतुःसदाकीः चःषदःदेचःवदैवैःबदःवःग्राह्वःव्यिवःहुदःर्थेद्।

चुरु: र्षेट्रक्ष ने देवे वह मी च सूर्य स्थान में किया मे य:८८:बार्श्यातः, बार्ध्यःक्री:सैचयःक्री:लुबा.क:वर्श्वे:चर्यःचस्त्रीयःवालयःवीटः बिदा देदः बदः बदः अया प्रवादिया मुक्ता के विदासी के के प्रवेता में मुक्ता के के प्रवेता में मुक्ता वियः हुनः देवेदः " ५८। " वर्षे क्षेटः त्यसः रेगमा" " क्षें गः प्रमस्य वर्षे ^ॱक़ॣऀ॔ॹॱॸॾॢढ़ॱ^{ॱॱ}ॿ॓ॾॱॸॱॷॱड़ॖढ़ऀॱॾ॔ढ़ॱड़ऀॹॱड़ॾॱड़ॺख़ॱढ़ड़ॗऀॾऻ ह्यें कें ज्ञारा पर राष्ट्री केंद्रा पर राष्ट्र विष्य केंद्र पर राष्ट्र विष्य केंद्र पर राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र

जैवा तर मूंश कूर्याय इंटरा चोधेश तद लुचा क मूर् लाया में वर्षी र वर ผู่กลาริดิ ณัฐาารุรามคลาน ธิลานัฐมลาธิราราชิกลาพัรานดิ ฎีลา स्'र्यो प्रवेश वेश प्रवास्य सर्वे राष्ट्र (१८८८ —१९७८) र्टा के प्रवास्य इरः (७७७०—७७८४)। निर्दास्यः क्रिंसकेः (७८७५—१७८४) सः तुरे यान्याकेत्रद्वययाणुदायेनयार्थेद्राय। विदाद्वयाययार्म्यार्थेयायाचेदया यक्षेत्रायदे प्रीयाः कः सम्भाग्यास्य सम्भाग्याः सुरुष्टि । स्वीत्रायः सम्भाग्याः स

म् सूर्यायस्थित्र स्थितः स्थातः १९४७ स्थातः स्थातः १९४७ नुमार्भेराया येरारेवे बरा १९४८ वे बमा १९४५ वे पर्या यतै देव रेवा श्वास सुस सु भूवा देटा। दे दवा वी बहर दु सूवस देर वेंद दें बाया প্ৰাৰ সূত্ৰ, ক্ৰৱ ই ইবৰ মানই " শুন দে, ক্ৰী দেৱৰ মান্ত্ৰী, মান্ত্ৰৰ সূত্ৰ দেব শু ক্ৰা ब्रीन श्वी विचायर योषायर्गेन यदे वें राषाया यात्रा यो यात्रा हैं से स्वी केंन दें र वनाव लेन " डेकाया था त्राप्ता वर्षा वर्षा प्रमाणिक वर्षा है है है वर्षा की विंद्रशासु र्हें अपरेवा वी वहें दानु वदे अर्था खूट्या द्रा वर्ष अहीं वहिंदा खूट्या क्रिंग सूरका यठका सुँवाका करा सम्मानवर श्रुम रही तुका या होता यदों सदी सदी स्व यी. "अत्।अत्। दुर्गः द्वाः द्वाः द्वाः द्वाः वित्वा व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्याः व्या सर:बिमा:स्री

क्षे[,]दबद्द्यायद्भवः यस्प्रद्वाक्षे स्वाकायद्भवः यस्यात्रे वाः यहिनः वदैःवाक्षेदःचर्याश्वरःपवैःव्यद्यात्ववाक्षेत्रःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्वाःविद्य यहिषाकृष्टीर १९४१ व्याप्त १९४३ व्याप्त व्याप्त १०४१ व्याप्त १०४१ विदा अपमाने नवा वार्चन ही खुवा वसमाय वहार वार्क में वर्षों पहीं न यते द्वेयाच्स्रुत्वारा ग्री वात्रशार्त्वया दराच्युत्र प्रस्थार में द्रशादेवाय देवात्री वाहिशासी दर या चेंद्र पर्येत्। देवे स्मूनका ग्री के नक्षरका नहुद्ध पर ग्री चेंद्र प्येता हेंद्र स्मून यः मार्चेम् 'में 'स्यामक्ष' प्रमार्च प्रमार्च प्रमार्च (१९२२—१९९२) सर्वेम 'प्रमार्च प्रमार्च communist law, governmental structures, and administration that are still widely used today in Tibetan regions of the PRC, such as the term rang skyong ljongs (autonomous region); names transliterated from their Chinese pronunciations, such as Mar khe si (Marx); names of countries, such as Su'u len (Soviet Union); and positions such as u yon krang (committee chair).

The third volume of The Dictionary of New Terms was published in 1957. Its entries were all drawn from the translations of seventeen documents issued for the second and third plenaries of the First National People's Congress. In particular, this edition contains many new scientific, economic and social terminology still widely used in both written and spoken Tibetan expressions, such as kun khyab rlung 'phrin (broadcast radio), and bzo tshong las rigs (industry and commerce), glog shugs bzo las (electric power industry), and glog brnyan (film or movie).

Prominent scholars, such as Geshe Sherab Gyatso (1884– 1968), Tsetan Zhabdrung (1910–85), and Sungrab Gyatso (1896–1982) were among the great translators who traveled to Beijing expressly for the purpose of translating documents for the Second Plenary. In the process, they also revised translations from the First Plenary.

The fourth volume of The Dictionary of New Terms was also published in 1957. Terms for this edition were culled from more than thirty translations released by the Nationalities Publishing House from 1954 to 1956. A great many terms for discussing contemporary concerns and views were contained in these thirty works, which included "Several resolutions regarding Tibetan local affairs as drafted by the State Council of the PRC" and "Mao Zedong's Speeches at the Forum on Culture at Yenan." The latter heavily influenced literary content, thought and writing style in China for the next several decades.

Peoples Pictorial and Nationalities Pictorial were also two important sources of new words for the fourth volume of the dictionary. The Tibetan versions of these two periodicals had been launched in 1953 and 1955, respectively. Both magazines featured propaganda about the monumental

कुः वेंद्र प्रसुर कुः क्षेत्र सार्हेद दर थे।

<u>"चःसूर् जारार वर्ष्</u>चेषारा" रेवःवले वेंर्न्धःसूरःग्रुरात्ररात्रार्वे र ત્રમ "कુ:વ્રૅટ્:બર્-સૂર-શું):ઢેવા:અર્દેટ્-" રુજા:વાદ્ય સૂર-વાશ્વર-ધા:ઢેવા:ઘો बुअः सूर्रः भ्रुवाको वनवाके नः उवः ने नियः सूवः द्वावा है वा वर्षे निर्देशका र् "श्रुम् नायर न्युमायर" वही वर्ष स्थे प्रति श्रुम् नायर र्युम् अराधर र्भे हुर भेरी भेरि मारे सेर भाक्त स्वाम्य हिस फर मी मालुर मी प्रहेस भुँ र दर देल वसुवाय कु भेवा देवाय बार्य वर्ष के वर्ष वसु र वर्ष वि ર્ટેના નાત્ર અ નાત્ર અના વહેલે : સ્નાનઅ : સુ : સ્રો : શ્રુ અ : સે : લા ના સુ દ : ફે ક્ : શ્રું : ર્ને ક : સ્રો -<u>न् स्थे सुर पर्वे "अर्थे से तृर मी माशुर हें अ मार्डे अ प्रमूख " नेव प्रत्ने में प्यर</u> षवाक्वे न वे ने नवे ने मान

["]અલેં જેં 'દુ ર વૌ 'વાશુર જેં અ' વાશે અ' વાશુ અ' ["] દેવ 'વલે 'સેં 'સુ ર यदः तम्भागमः लेदः सम्वेतामा स्मायमः द्वदः हैं हैं कुला से त्यामा द्वरः । कु से चेंद्र रेग पदे स्वायम द्वर <u>च</u>्चा मा स्वर खेंदु खे कर (१९१०—)। देर:सर:ग्राद:र्नो:श्वे:र्केनास:कंत्र:देना:विद:त्र:चल्नास:धदे:स्रावस:दवद: <u> ५८: क्वें अ:य: यें 'वहअ:५४व्य क्वां अर्वें 'व्यावायक्य व्यावायं प्रें - व्या</u> वशुरावात्वरादमामहिंदाचराञ्चार्यात्रराहेराचदावर्शेदात्रस्या वनरः (१९१६—१९९८) ५८:षाः अर्दे द्रशः अवश्र-५नरः म्रासुरः रनः क्रुः અર્જે ફ્રમ ગાઉમાં જે ૧ કે ૧ કું ગાઉના વર્ષ ત્રામાં જે ૧

लुचा मुचारा है। देवा चर्षी मावदु उच्चरा चीरा चीया तदु . "मी हुन् त्वरस्वरक्षे क्षेतासहर्" दे दे र्मेना नावर्यानाय स्तर्हे दे स्थ क्षेत्र वेद से से यो.पुर्यः २८:श्री:पुर्यः यातुरः यो.ध्याः र्वताः ५८:८याः र्वताः यात्वाः यदेः "श्रीः रमरमान्यात्राहरः, रट. भ्रीःक्ष्यमान्तराज्ञान्यः, त्रामान्यस्य याश्वरः यानः स्थारः त्रेवा त्रीः त्रुद्धः त्रिष्टः स्थारः विद्यारः स्थाः विद्यारः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः चोष्याचीयरःच्रहेतुःस्रेचयाःयोःसर्ने निवेशाचिश्रयःचार्येशाःताःचेतुःस्रेचःचेशाःताः इस्रयायान्यस्यायान्यस्य वहार्सुनायान्यस्य मिन्तुनायान्यस्य गल्द मी वहें ब र्क्सेट दर दश्य रहें गुरु वहें खर की खर की खर की की की की की र्भ लेग चुर प्पेर पर दे तर है बर है बर है बर के अप्रे च सूर त्य अप महिना कर दे र सूर ही व्याक्तिकार्यम् वित्राचित्रम् वित्रम् वित्रम् वित्रम् वित्रम् वित्रम् वित्रम् वित्रम् ब्रशःचुदःचःश्रेद्रा

कु चेंद्र प्रमुख्य की केंगा सर्हेद महिलाया

ळ्या अहूर है . देत से या से या अहर है . इंग्या से या अहर है .

transformations occurring in Tibetan areas at that time, with accompanying photographs. One of the first Tibetan editors of People's Pictorial was the scholar Muge Samten (1923/4-93).

The first Chinese—Tibetan Dictionary

Six years after the release of the fourth volume, the Nationalities Publishing House in Beijing began to review and revise all four volumes of The Dictionary of New Terms. This process took five years to complete, and in 1964 a new compilation, The Chinese-Tibetan Dictionary, was released with more than 31,000 entries. While this dictionary was based on the four volumes published in the 1950s, it contained many additional words. In the intervening years, a great mass of Chinese communist propaganda and administrative materials had been translated, including nearly all four volumes of The Collected Works of Mao Zedong, which no family could be without during the Cultural Revolution.

Three individuals were assigned the task of translating The Collected Works of Mao Zedong: the late scholar Dorje Gyalpo (1913-1992), the late Chinese Tibetologist Liu Liqian (b. 1910), and writer-scholar Jambian Gyamco (b. 1938), now at the Chinese Academy of Social Sciences. Horkhang Sonam Penbar (1919-94) and the Sungrab Gyatso were invited from Lhasa and Amdo, respectively, in order to proofread the translation.

Derived in part from these translations, The Chinese-Tibetan Dictionary (1964) served as a source for a great many new terms that during the Cultural Revolution would become known to all Tibetans, whether literate in Tibetan or not-words such as mi dmangs kung hre (peoples communes) and spyi tshogs ring lugs (socialism). Looking today at the materials published in Central Tibet, Kham and Amdo during the Cultural Revolution, we can still see the influence of local dialect in terms of grammar. However, the standardization of Tibetan terms for governmental administration and revolutionary thought had

सुअः सूँदः भ्रूषाः की प्यद्रषाः केदाः अही केषाः अही दः सूँदः सः यसः अदः सुदः की क्चित्रयारम्प्योहेन्द्र्यासूर्यस्य स्वीत्रह्र्या "याळे द्रासूर्य यो ळे ह्वा स्वी नरः भ्रम्यायः वर्षे राक्काः दमा प्रसारं प्राप्तायः विषयः ग्री क्षेत्र मर्के प्रदा वर्ते र के प्राचीय र के स्वाप्त का मान के स्वाप्त के ये द-रमम् स्ट्र-रमम् यस स्वित्र स्वितः मर्से चे र-र सू द्वे यस वर्गुत्यःश्चरः र्वेन् विन्नुन्यः विन्यः विन् वर्ग्या है रहं आ द्यी आ अरावा ह्ये व्यात प्राप्त हो सूत्रा मुष्य स्वात स्वात स्वात स्वात स्वात स्वात स्वात स्व दस्याचीरा। रस्राथ्यास्यास्यास्यास्यास्यास्यास्या मु.शुट.वट्र.शुर.टटा जुर.हत्.ज.टबाब.स.मुब.सैवस.मु. "जुर. * ્રા તાનજા તૈક દાધા અ્યાર્થ દાનજી તાનુ કારા તે તે તે તુવે જો દામિ દાધાત્રા છૂવા. सर्हेर वरेर में ना सर नर्गेर जेंदा

कु:भैगायो अराकुरायार लेया र्देश था यह या अवश्री राज्येया दर तुःळेना नरुषाः ग्रीः यह्ना व्ययः यो वदः व्येटः नी व्येटः यः केना यहेँ दः वदे रः वेटः भेगा ५ भेर घरका दुका भेरी द्येर क कु भेगा गो 无产阶级专政 वेर प वृःतुःश्चेरःक्वेमान्दःतुःक्वेमानादेशः विरावेदः र्श्वेदः श्वेदः श्वेदः श्वेदः श्वेदः श्वेदः श्वेदः श्वेदः श्वेदः वेंदिः केंग् अर्हे ५ र्. "वर्ह्य स्थे ५ म्यूया रेस क्षेत्र खें ५ र्निर क्षेत्र वहें ५ हो ५ यः" लेख-मु-क्रिया-पाँडेया-धेर्दे-हेंबा-दबा-चर्गेर-धेर-धाः यः में हु-बा-वर्दे दे-क्रियाः अर्हे ५ र. ं वर्ते र. ये ५ र. मूया रे या गो खे ५ र न पर खे र वहें ये ं ले शायी र. मुदा สำสมเผพาฃราสท์ราพัรเ

कैना अर्हे ५ वर ने अपन्त्री नामा स्ट्रें द व्या क्वा मालू द मी मार्चे ५ ग्यी प्रह ह्यूँ र या नामर पर्देश की ना द्वारा मारा इस रही हुना परे वही वा सुदे अन्यत्युः "कुः" ५८: "कुः" अन्यन्युदे क्रेनायस्य अंस्विनाये रायः वर्षे अ र्श्रेवार्या की क्षेत्र मु, कु प्येवा वी क्रिय की प्ये वी इस्रय विद र्श्वेद ही दार विरा ममः नाम्यः विवास्त्रकार्यम्। क्रेनाः अर्हेनः विनेवेः यमः वेनें स्त्रीः कीः नीः नायमः वर्डे राने 'न्या याराय' संस्थेत 'र्येन' ने। नियम ते केया सर्हेन 'यने वे श्रीदः "कु वेंद्रःत्वरः सूरः वी केंवा सर्हेदः" ददः " वर्त्ते रः सेदः व्यवः रेसः वी श्री ५ . ५ च ६ . सु से १ . <u> ५वों सायाम्यसावर्षसानुसानेः "मी" ध्येमाचे ५ ख्रें ५ तुसाधे ५ प्याक्षानुदेश</u> ने प्रतिक के मा अर्देन प्रतों पर्देन ग्री भ्राप्त स्पूर्ण ने प्रति मा मी मी क ग्री भी मी र्श्चेन चुरु र्षेन।

reached a level of uniformity unprecedented in the history of the Tibetan language (aside from what occurred centuries before in Buddhist terminology), and the realization of such a standard was due to this dictionary.

The second *Chinese—Tibetan Dictionary*

In 1976, twelve years after the publication of this last dictionary, another dictionary with the same title, The Chinese-Tibetan Dictionary, was released with more than 53,000 entries, more than four times the number of entries in the 1964 dictionary. The inter\vening twelve years was a period during which Chinese government policy had slipped into extremism. The Chinese government itself has called these the years of "leftist extremism." Throughout the PRC and including Tibet, campaigns were continuously promulgated. There seemed to be a new one each day: Socialist Education, the Great Proletarian Cultural Revolution, the Campaign against Lin Biao and Confucius, Line Education, etc. Each campaign introduced a new set of terms. The 1976 dictionary contained the names of the various campaigns just mentioned and their respective slogans, such as "Oppose Lin. Oppose Confucius" and "[beat back the right deviationist wind" used during the campaign against Deng Xiaoping.

In Chinese, it is possible for the same word to serve as different parts of speech. The 1976 dictionary attempted to convey this in Tibetan. For example, Chinese phrases such as wuchang jieji zhuanzheng (proletarian dictatorship) can function either as a verb or a noun. In the 1964 dictionary, this word was simply treated as a verb (i.e., "to rule by the proletariat") but in 1976 its definition as a noun was also included.

Prior to the compilation of this dictionary, Tibetan grammar had been reformed by the Chinese government. For example, certain genitive or possessive markers (e.g., gyi, kyi) were eliminated. It was also decided that Chinese punctuation

क्रि.च्र.तथःस्र म्ब्र.क्रि.क्र्यामहूरःबःमा

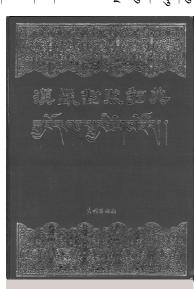
ત્ર્યું માત્ર ૧૯૯૩ ત્ર્યું માત્રા * શું મું માત્રા ळेगाः अर्हेर चासूर ग्रायर्थ ग्रायर्थ ह्या न्या न्या निष्ठ र ख्या निष्ठ र स्था निष्ठ र्घेत। कैंगा सहें न त्रे के चेंन हें र से न सर स न से क्षेत्र स कि से से मार क्षुमामी मार्डे वमाद विहास हिना। अर्डे क्रिंद से सेमाय नरें सुदान नरा स्युत्र त्रव्य अः रेवायः द्रयेः श्रुवः विरा अः रेवायः द्रयेः श्रुवः विराय रुवः क्रु वना न्दः वें नः खुवा नुः खें दें नः यो नो नो नो मुंदा विदः हं दः या यह या वर्षेता मुका १९८५ वर्षा १९९१ व्याप्तर १९७७ व्याप्तर १९७७ व्याप्तर १८०७ यदे. "कु'र्वेद्रप्तर सुरावी क्षेत्रा अर्हेद्रः" स्टायाले व्राच्या तस्या पश्ची वास्या

क्रेया अर्हेर वरे क्क्षेया अपवर क्री दर र अपवर रचर हे हे क्रुवा में रूट द्युच चसूर है 'स इस महिश ग्रीक सर्हें र पदे में द मारा मारा देश स्नार पद र रें त्रुभाश्चे, स्ट्रम् कुः स्ट्रम् प्राचा त्या स्ट्रम् W5:51

र्वोदः तृः ब्रीदः वदे कुः वेदः क्षेत्राः अर्हेदः अर्थः द्वेः प्रहेदः । वदः तृ **र्भेर-पाथमा वासूर-पायम-पश्चीम्य-दिवापत्नि-वी-दि-दर-वासूर-दे-दमार्चिम्** स्रम्भद्भ स्रोते । इति । देवा वर्षे । स्वर्था भूष्य वर्षु । दृष्य वर्षे । सूर्व

বঙ্গ'ন্থ'অইন

24.4 ल्यं र क्:वेंर ಸ೯೯ מב. MZ:5



१९९१ विराद्ये सुरु पुरु परे सु वेंद्रप्रसूर्यो केंगे यहेंद्रघरा

The latest edition of The Chinese-Tibetan Dictionary, published in 1991.

should replace traditional Tibetan punctuation, such as the yig mgo or dbu khyud and the shad. All of these Tibetan language reforms are evident in this dictionary. For example, even in the title of this dictionary gi is used instead of gyi, as was the case in the Tibetan term for "proletarian dictatorship" ('byor med gral rim g[y]i srid dbang sger 'dzin). Similarly, in the introduction to the dictionary, periods and commas are used in place of the Tibetan shad.

The latest *Chinese-Tibetan Dictionary*

In 1991, some fifteen years after the publication of The Chinese-Tibetan Dictionary, another dictionary was published with the same title but now 80,000 entries. While the TAR People's Publishing House served as the chief editing body, all of the Tibetan publishing houses in China and Tibetan areas (i.e. the nationalities publishing houses of Qinghai, Gansu, Sichuan, Yunnan, and Beijing) worked in co-operation from 1986-1991 to compile the volume, basing it upon the 1976 version of The Chinese-Tibetan Dictionary.

Among those who worked on this last dictionary were great scholars (e.g. Dorje Gyalpo and Thubten Nyima) and staff who had gained experience in publishing and translation at the various publishing houses during the 1950s, as well as a new corps of young people who had studied both Tibetan and Chinese.

All of the dictionaries discussed above can be found at Latse Library. In particular, the four volumes of The Dictionary of New Terms and many of the published documents from the 1950s and 1960s that served as sources for these new terms, as well as The Chinese-Tibetan Dictionary published in 1964, are housed in the Rare Book Collection.

Translated by Lauran Hartley

विं विदेश अर्थेट र्थेश ग्री खुवा न् ग्री मनदे

वॅर्ना केंगा अर्हेन वह दवा सेट सेवा वाराया वरे क्लेंट स्वारा रहें से होट वा

The **GESHE CHODRAK** I Knew And HIS DICTIONARY

• र्हेरियर व्युस्रय या स्टूब द्रा

Horkhang Jampa Tendar

"चर्-द्रमास्त्रेदःक्वेमाःग्रथ्यःम" वयःर्धेद्रथःग्र्म्ययस्यः "द्रमोःवर्वयःर्केशः नुगर्भः विश्वःयदे क्रेगः अर्हेन देवे अर्हन पार्थे द्वो पदिशक्तें अप्री नुगर्भः ता.द्र.म.व्रि.द्री.ज्. १८६८ ज्य.क्या.तीया.ट्री.सम.वे.व्रम.तम.वर्षिटमा

<u> र्यार ले. चर्ष चम्रेर क्षा लायविर्षा लेला</u> ५:अर्ळे [मःब्रीटलेश यदै दर्गे इ य लेग थें ५ यमळेंबालगबायहरा देमाणाची वर्षी र्योगान्दरकें अर्थेन सुद्रशा नग्दर थें है : शु इ.के.क्श.ज.मूंयायात्रात्रात्यकारटायकूटम রমামুমেমর্করান্ত্রীর বমার্নুর প্রবর্ষান্ত্রীর से मन्ने सामका में विमार क्रिया मुद्रीय महिमा শ্ব্দ

જ્. દ્યું સું . જે. ૧૯૩૩ રૂપા વા क्रु.यार.वंबा.तंष्ट्र.ये. थे. (१८७३— १६८३) बेर.घ.कें.शर.उर्चेर.४४.श्रषश चलेशः क्रेंशः व्यवाशः वाहेशः क्रुः वारः ५ यान्त्र वर्षेत्र लुका वर्षा ग्रामः नियो मिलेका कें अ'न्यू मुक्ष'ग्रीक' से नक' एटें र 'अ'मा कर'। थेव व भर वें रे बुर वी हेब सु वें र कु यारायायावर्षाञ्चीरात्राधेयवा देःत्राणाः ल्यं अस्ति । स्वरास्ति स्वरास्ति । स्वरासि । भैवा वी क्वारा पर प्राया स्वारा से सिवी





A photograph of Geshe Chödrak.

Geshe Chökyi Drakpa, author of the dictionary Brda dag ming tshig gsal pa—or as the volume is more popularly called "Geshe Chödrak's Dictionary"—was born

> in the Mongolian region of Buryatia in the Earth-Dog Year (1898). At the age of seven or eight, he became a monk at a monastery near his birthplace Tsokaling. There he studied reading and writing, as well as religious practice. When he was about 25 years old, he ran away to Lhasa with several friends in order to practice religion, and subsequently joined Jey Samlo College at Sera Monastery.

In about the Water-Bird Year (1933), Rahul Sankrityayan (1893-1963), an Indian scholar, came to Lhasa and invited the scholar Gedun Choephel and Geshe Chödrak to India. The latter declined his offer, but a few years later traveled to India for the purposes of pilgrimage. During that trip, he met Tharchin Bhabu, founder of the Kalimpong-based Tibetan

योश्चरत्यीरःयोशलःचदुःशुःजूरः, बुरःचःयोशरः वर्देन मन्दरमानन दे दरम् मान्य रे वियासु मुर

भे हैं। से १०३५ ईस या आ मे या सुन म (Theos Casimir Bernard (1908–47) =x य. खेवा. यो श. शवर रही व. से. सें. सें र. सें र. त्याबिरावयाञ्चासम्पर्दात्वयार्वराषुवान्त्रीयात्र <u> चर्ष्य मुक्ता अर्ष्य प्रतानि । स्त्रा अराधी प्रत्या अराधी । स्त्रा प्रतानि । स्त्रा प्रत</u> यम्। द्यो प्रवेश र्केश ग्री ग्राम्य या अर्के गा दश विंदा याहै अ'' व्या सुर' र र र ग्री ' द्या र क या ' श्ली या र र या साम <u> न्यारःकवाञ्चेवाःश्वःकंर्रेरःवाञ्चेश्वःववाःकृःश्वेदःयः</u> <u> ५८.स.२श.सदुःलीशाष्ट्राम्यक्षेत्राच्यामान्त्रीःक्स्</u>र क्:र्र्र्र्र्याचेअ:विग्।मृ:ष्पर:ष्पर:बेवश:ब्रूवश:५गो: यक्षेत्रः क्षेत्रः व्यावात्रः दरः सहत्रः वः दरः। यदै रेवा वार्यान्यो सार् र्वा सार्वे स्वान्य रुष:ने'क्ष:चबुर-विंद:इस्रामिक्ष:नवी:क्ष्र-नवी:धुवा यो.पद्येज.च.क्याश.तरःश्रूटः।

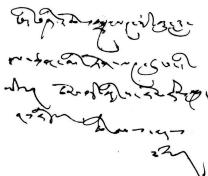
च्र्-रचःवैरः ७९तैयोशःसैजःस्रैःज्.७६८० र्थेर-दग्ने प्रतेश अर्केन दश-दग्ने प्रतेश भ्राप्ता वयरामायहराष्ट्री द्यो प्रविषाग्री सर्व ग्रामस्य प्रविषा १६८७ स्राप्त में प्राप्त विश्व स्थान बोद्रायराष्ट्रप्रारहेरा। बोराद्वेशायम्बरार्धेद्रमी प्रवेशायसूब्राद्ररायम् शागुरा देवे बिट कवे बट द क्रिक वदका सुर्वेद । अविक में दे के स्वी केवा बट केवा महिषायमामान्येदार्स्चा यात्री स्वाप्तान्येदार्भेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेद्वार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्येदार्थेदार्थेदार्येदार्येदार्थेदार्थेदार्येदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्थेदार्येदार् <u>रवी प्रतेश अर्के वा दश आवद में पि जीद यदश शुः श्रें पाय या द्वापाय यस कंटा</u>

ये द मार्थ हो । स्ट मी यापर में पर्मी दश्य रहे द में र प्याप्त स्ट दिया <u>चर्चर व्रिरः धरः श्रे वर् ना नशुरः दशर दर्गे दः धरः शः चल्राशः धः देर।</u> दशायबुदादवी प्रतिशासकें वा हें सावदाया वेता स्ववा हा प्रतिवास ग्री पेंदा सूर्वस भै द्रमभ ग्रीभ विंदाय दें र विदादवी प्रतेश देश वर्षे द ग्री खेंद

नवी नवीब केंब्र म्यावाब ग्री विष्ठ कर।

त्र्रास्याचिरः ७० शुःसयाःश्चीःज्राउ६००ज्राः दश[ं]विं वेदि अव दश्याय कव अर्दे र अर्दे श्रुवे खू मुदे संग्र न्यं त नु न क्रीं चल्या यातर है र कें

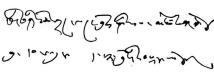




The wife of Geshe Chödrak, Acha (Mrs.) Metok of Rinpong. She is now deceased.

In the Iron-Snake Year (1941), Geshe Chödrak obtained his geshe Iharampa degree. But, in 1946 the controversy between the Reting regent and Taktra

had escalated beyond compromise and lead to the death of Geshe Tendar, the abbot of Sera Jey. The



The daughter of Geshe Chödrak, Penpa Tsamchoe. She is still living.

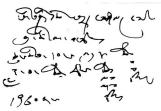
newspaper, The Tibetan Mirror. In about the Fire-Bird Year (1936), an American named Bernard¹ arrived in Lhasa, accompanied by Tharchin Bhabu who was serving as Bernard's interpreter. Bernard was collecting texts, including the Kanjur and Tanjur, in different Tibetan areas. Geshe Chödrak helped the two men prepare a list of all they had collected. This list was compiled in the Tsarong House. My paternal grandmother is the daughter of Tsarong zhabs pad Wangchuk Gyalpo. Thus, she would frequently visit the Tsarong House and see Geshe Chödrak working there. Bhabu Tharchin introduced them to each other, and Geshe Chödrak became my father's classical Tibetan studies (rig gnas) teacher. From then on, my father and Geshe Chödrak shared the close relationship of teacher and student.

चर-र्-क्रें-र्वोश-द्वर। र्श-भ्रवशः देवे देट वा भू रावे हें र विद वा ने ने ঢ়'বাঐয়'ঀয়'অ'য়ৼয়'য়ৡয়য়ৢ৾ৼয়ৢঢ়'য়৻য়য় য়ৡৼ৻৸৻ৼৼ৻য়ড়৾য়৻ঢ়৻য়য়ৼ৻ড়৾ৼ৻য়৾য়৻ <u>र्वो प्रवेश केंश वावाश यवाश ग्राट हेंट</u> पिट.र्था.पिट.त.योलर.र्था.प्रधिशा ने नुषान निर्मे स्वर विर्वे स्था गुर्जे **षदःषेदःयःगर्धः यर्वे** केदः से 'न्यरः ५५५' यग्राक्षःव्यानेवै त्वै यवि स्रव्यः स्रवः स्रामी व्यवायवे त् अं अ हें वा बेर व लेवा व्यंत य'दे'द्रद्यो'यदेशासळेंगायहेशायर यम्यान्यः स्ट्रीयः स भ्राःबरः तत्रवः कुषेः चुन्यः चनाः वरुरः ५र्ग दे दें बार्च वेंदे 'अया द्या यश अद्विव हे 'कव' सर्ने दश विंदाया धुवा चैश स्वा है 'देशर यादराधी र्देश यादरा। र्देश या श्रमाणे याबरः भ्रायः वृषः यत्याः धरा विषे यवेषः सर्केगार्ने यासार्ग्यीशाने वित्वेति स्परार्स थः ब्रिनःस्टः क्रें स्नान्त्रणा बेस्याने व्यनःस्टः

रेत्। मुःसःकेदःर्थःत्रः। यूचःकेद। धृषायःयःकुतःवहेदःर्थेणयः बी'द्रमार्केब'त्द्र'बोद'वर्खेद'द'दे'वा'म्बार'ख्य'दर'। बामव'वर्क्ने'बा यन्तार्थे र्थेत्रायासीटासून र्थे त्येत्रायासी प्रति प्राप्त प्रति प्राप्त प्रति प्राप्त प्रति प्राप्त प्रति प्राप्त प्रति प्रत र्सरमाण्चीमानुदासेदानस्थेत्रादान्त्रार्थेनान्दरा। ययस्तिन याम्बर्स्सनमा क्षेट:८इ:वा:रे:वर्देवाक:८वॉक:य:वक्षक:य:त्रेट:क्षवद:रेट: हेक:वगव:वर्जुद म्बर्यं वर्षे अपन्तर्भ वर्षे वरमे वर्षे वर तिरमाग्री पर्श्व प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप <u> २ ने 'म् वे अ' अर्के न | विंदः या 'पदा पदा अहया न रावे न अर्के न | विंदः या 'पदा अहया न रावे न अर्के न | विंदा</u>

ৡ৾ৼ৻ঀৼ৾য়ৢ৾৽ড়ৼ৾৽ড়ঀ৾৽য়ৼৣ৾৾৻ঀয়৽ড়ৣ৾৽য়ৼ৽ড়৾ঀ৽য়ৢয়ঀয়৽ৼঀ৾৽ঢ়৻ঀয়৽য়ৡ৾ঀ৽ <u> २८:बे 'हॅव' अवाब वाहें ब वाद हैं र हु र हं र हे बे 'हें वा अवाब अरब र</u> लटःस्रमः १५१ वर्षाः वर्षे सः सक्रेषाः सः विदः स्रम्पन् सः दसः पतै स्वरण्य प्राप्त स्वरण्य स् चलेबासळेंगात्रबादे प्रेटालासेंगासेंगाचेंबापेंदा बेरात्रबादें चेंदे प्यवादस चर्चे अविश्व में ले द्वा रेत्। विंद वीश्व भ्व द्वा वी अंवा अंवा स्वा स्व द हुद है औ वर्जे वर्राया यदे र्वे वा र्वे वा के कर वे दे वर्जे की र्थे दा





The twin sons of Geshe Chödrak, Wangdu (right) and Dawa Tsering (left). 1960.

latter was a Mongolian. (I don't recall if it was Outer or Inner Mongolia.) Geshe Chödrak was terribly saddened by the death of this abbot and remarked, "Now that my abbot has died, I don't care whether I stay at the monastery or not." And from then on, Geshe stayed at the Horkhang house and became known as "Horkhang Geshe."

Family Life

In the Fire-Pig Year (1947), my

father was appointed financial manager for the Commissioner General Lhalu in Chamdo. Our entire family stayed in Chamdo until the Iron-Tiger Year (1951). During that period, Geshe Chödrak continued to reside in the Horkhang house, in addition to servants and those who stayed behind to look after the house. At that time there was a tenant in the

Horkhang house by the name of Metok, the former wife of the son of the master goldsmith Wangdu. She had separated from her husband and returned to the Horkhang home. When she and Geshe Chödrak began to have a relationship, Geshe decided to become a lay person. My father in Chamdo came to know about this and wrote to his teacher about how Geshe Chödrak should not have done this and urged him to renew his vows. Geshe Chödrak responded by criticizing my father: "All you aristocrats are the same. When great lamas, yogis, and the lineage of ngakpa stay with women, you use fancy terms for the woman: "tantric partner," "dakini," and "high consort." When poor monks stay with women, you think up terrible names to call him: disrobed monk, 'bar khog [derogatory term for a monk], old man, etc." This was the period when Gedun Choephel was in the Lhasa Shol prison, and Geshe Chödrak went to see him frequently at my father's

न्नो न्ववेश्वासर्केना दशासुन नुपुन्ता नुष्य निष्य स्थापार "सुन्न याञ्चेयावाद्या अं में या त्यासु या तु या के वा क्षेत्र के व्या अहे वा के व केंद्र'र्य'नादर'न'त्र'र'सूर्वर'विंचेंदे'सेना'यस'त्'सूर'सूर'दकरम्कुःदत्न

तु'मार्डमा'मी'सीट'त्य'ह्वाच'ळें'सेट'न्टा। मार्डमा'त्य'न्नट'त्र्न्'@रू वर्रेनाशानाबरासर्वा देनाहिशानीशार्वे स्वशानकुर दुवै सहुना र्द्यान्दान्त्र्वि पर्देव त्वर्ते र्द्यात्याकदान्त्रमात्यास्त्रे साम्यत्या मुक्ते स्था धुरकें यम यदम सेंद्र। क्षेयें १९७७ पम सम संग्रेस लिया या से दिया यम्बर्यान् अंबिमाञ्जेबर्याश्चेर्यायाञ्चेत्रायास्त्रस्याम्बर्द्यस्यान् र्वेत् चेरावादे । বশ্বুদ্র-র্জিদ্য

षाःस्याः में याः व्यवस्य व्यवस्यः स्थाः व्यवस्य स्थाः व्यवस्यः स्थाः व्यवस्य स्थाः स्थाः व्यवस्य स्थाः स्थाः स . ७.७४.चर्षेत्र.त.चुर.चराचर्ययात्र.चरु.चु.५५.ची.५५.५५.ची.च्या.चेया.चच् वर्डेशः क्रुवाः सः होवाः व्येदः यः देशः धुवाः यसः वात्रदः वरः सेवसः यः दरः। १९०० ल्.यं यं या वर्षे द्वीं त्राप्त क्षेत्र वर्षे वर्षे या वर्षे या वर्षे या वर्षे या वर्षे वर त्व्र-दर्स्यास्या वर्षे वर्षे अक्ता क्षा काले वा व्येद्र य दे र सुवा अरु वा वर्षे ह्रेचर्या की स्त्री स्त्रीत्र हें स्त्री स्त्री स्त्रा है स्त्री हराषा उना से हिना " बेरानदे निर्मेन में नदे निर्मे नदे निर्मा लिया लेगा गुरान हिना नी पर्मा यान्यान्त्रस्यते पुषान्यम् अमेर्न्या यान्य १९८४ वेदि त्रसङ्ग क्यी.पर्वेचका.चर.स्रेर.चर.स्य.चर.स्या.मे.पश्चेत्र.स्यर.क्यीका.उटका

वह द्या और क्रेंया या श्राया पर सुत्

<u>" વદ્દ-၎ના ઐદ-ઋૈના નાચવાના"</u> લેચા દ્યુઃ નવે ઋૅના અર્દેદ્દ-દેઃ ર્જ્ઞાનદ याज्ञ स्वर्या यो अरस्य स्वर्या द्वारा स्वरं १००० विस्त स्वरं स्वरं स्वर्मे अरस्य षवाकेर-द्रवी वर्ष केंबावर्षवा की देवा होर-द्राप्त कें व्यवस्था है रायर द्रावर्ते चवु त्यस्य वर्षे व्ह्यास्य स्थूरः। देव हिर द्यार से प्यर प्यर प्रति वर्षे वर्षे म्रुक्ष-चन्ना विद्वेदे सन्सायमान्यस्य स्यापना योर्नेरःस्रायम् दर्भयः योन्नेतिः त्यस्य तर्देसस्य याम्बरः स्रायम् स्वा प्रयो प्रयो स्वी स क्रेंबः च्रायाबा त्याबा स्टारेट्रा ट्रेप्त हो स्त्री प्रमुखा के बार के विकास मान विंविवे प्यवान्यायान्यास्य स्वान्य से कार्याके प्यार्थे मुख्यास्य दे ह्यू न प्यवस्य बावबः भरः द्वी : चविश्वः केंशः वायाशः से द्वा : द्वी : वर्त्वः केंशः वर्धवः व्यावशः चर्डेंद्र'विदादका मुंद्र'या यावना विदानाद्र यो वात्र का चुटा येंद्र या यका महिना ग्राट्टियो प्रतिशक्तिंश म्यायाश प्रति स्परः स्रूटः।

"વર્-દ્રવા એંદ જેવા વાયવા વ. , હોય છે. વંદુ વધુ એંદ્ર ના સાર્દ્ધ કેવા સાર્ધ કેવા સાર્દ્ધ કેવા સાર્ધ કેવા સાર્દ્ધ કેવા સાર્દ્ધ કેવા સાર્દ્ધ કેવા સાર્દ્ધ કેવા સાર્દ્ધ કેવા સાર્દ્ધ કેવા સાર્ધ चरः रदः वी दे राचदः चल्वा थः श्वाः हु : १३ रः थे र । चल्वा थः श्वाः हु : हे वा अर्हेर-दे-पर-र्-तदेवशः स्रवशः स्रवाकः स्र्रेर-व-र्-। धर-वदेवशः या

request.

When the Horkhang family returned to Lhasa, Geshe Chödrak and Metok were already husband and wife, and Metok was pregnant. In his free time, Geshe Chödrak would often visit to chat with my father. Sometimes Geshe would announce: "I have made momos!" and would invite our family to eat at his place. Geshe was very good at making meat dumplings. He made not the tiny momos of aristocrats, but the large momos of monks.

One morning, Geshe arrived with two newborns in his arms. "Look, sir!" He said to my father. "Metok bore two children!" I can still the joy on his face. He named one boy Dawa Tsering and the other Wangdu. In the late 1980s or early 1990s, both sons died from drinking too much. Around 1966, Metok bore a girl named Penpa Tsamchoe, who is still alive today.

In 1957, Metok was working in a bicycle and motorcycle repair shop opened in Lhasa by Yeshe Tenpa. From 1959, she started working at the Waling Bicycle Repair Cooperative. I still remember children in Lhasa singing a humorous song called "Auntie Metok the Bicycle Repairwoman." In 1985, Metok passed away at the Horkhang house, where she had earlier resided.

Publishing the Brda dag ming tshig gsal ba

Under the patronage of the Horkhang family, the woodblocks to print the Brda dag ming tshig gsal ba [Orthographical Dictionary] were finally completed in 1949. I think the woodblocks for Gedun Choephel's White Annals may also have been carved that year. They too were sponsored by my father, but Geshe Chödrak took responsibility for proofreading the White Annals and coordinating the woodblock carving. He was also the person who first introduced Gedun Choephel to my father and Rakra

हैं सम्ब्रीसमा देव हैं नब्बैल वार्क्ट सिंद स्टावीम वार्य वी लेंद्र देव: मृ: वर्जे अ: य: इस्रश्रः दवी: वर्षे अ: स्रेक्षं व: स्ट: वीश: विंस: त्यः वस्रुस्रश्रः दशः पर्दुर:ब्रें वर्ष्ट्र्, बप्तरा ही वि. ब्रेंब् यावरः। १६८३ ज्रावया रेपी पर्वया स्थाप क्षेत्र सूर में र सूर अक्षेत्र से दे र के नाम स्याय साम स्याय स्थान स्थाय स्थाप स्था चरायेचयान्त्रीवर्ष व्रात्तां स्वात्त्री स्वात्त्री वर्षात्री वर्षात्री वर्षात्री वर्षात्री वर्षात्री वर्षात्री ळॅगाम्बर्धाः यस्यदेवसाद्दाचेदार्वेतामी देवावर्डेसादसार्वेदावाम्बदा त्री'वर्ता विं'वें'अर'र्वी'य्वेश्यर्केगायी'यर'वरेवश'यादर'शर'यूर' र्था नत्यु नर दर्गे नी र्थे । विंद नी शायर दरे नशाम बदा हे शार्ने रावदा नी विना भूना त्राजी स्ट्रेट त्या न नास स्त्रा सूना के स्नुसार नास टानी प्यें र उदि । क्षेत्र लेगाः र्स्से स्ट्रास्ट्र स्ट्रम् । यह्यं या देशायक्री या त्र सामित्र स्त्री साम्री साम्री साम्री साम्री क्रेंग्'सर्हेर्'मुं:र्वेन्'स्ट्रे'इसस्यःह्युद्राधेराष्ट्रीयःदस्यःदस्यःस्यायायःनदानदान् देः वयायःभ्रः अवः के व्यन्यशासुम्रायः देवे स्थः वयायः सः देन । नयो प्रवीयः सक्र्यात्तरभारतः अरासेवस्यात्रसाह्यायात्रसम्भाक्षेत्रः निर्देशक्षेत्रासहितः क्टामाञ्चटार्यमाचित्रास्टा" वासुटमायान्टा । यान्यायानेसानवीत्रा त्यवायात्वः इवायाद्वयायावादरः। देःसूवार्धःस्टायेदार्वायायो दशः तुषा दः क्रेया अर्हेर दे सार्धेयाषा यादा समः विदाय दे दे दे त्ये ता यू दे से द दशःश्लभः क्षुः यत्त्व["] देशः श्लेभशः वार्शः युः तुः वाद्यः वार्षः वेदेः व्येतः वार्थायः त्र्रद्भ की. प्ररीय ही अ. श्री. मुर्ग अ. रेग. भूष. प्राप्त मी अ. रेग. भूष. हिंग. क्रॅम् अर्हेर् दे क्रिंचेवे प्यम र्याप्य म्यास्य म्यास्य स्यास्य स्यास्य स्यास्य स्यास्य स्यास्य स्यास्य स्थाप 251

सः न्रसः सम्भः स्रो। त्रमा रहेमा मी सुः न्यो। त्रमी स्रार्थे सः स्रम् सामा सः सी न्या ष्पेना[ः] नद्दःदनाःश्चेदःक्षेनाःनाश्चवःन देःदनोःवत्वःक्षेशःवयेवःनीशःक्षेत्रः यःग्राद्यःद्रवः द्रयोः चत्रीवः क्रेंबः च्रायावायः ग्रीवः स्टः यीः श्रीटः चक्कृतः द्रवः चर्तेदः यः रेंदाबेराक्ची: र्थेंदायारेदा देंग्यदायाहत, त्रसासारेदा दयो प्रतीसार्केसा चामायान्दर्भे तर्व स्थापन सम्मायान्त्र विष्या स्थापन सम्मायान्त्र सम्मायान्त्र सम्भापन र्डटः द्रवा चिवा क्वें अ खूट अ क्लें र व्या हु द ह्या वया व खेवा वद्द द्युट चिंद ग्री से द्रा विंदाने मालदार्थ है। या माने माना सुनादमा सुनादम सुनादमा सुनादमा सुनादमा सुनाद इटाया से अञ्चित सामा निष्या के का से विः स्त्रा निष्या गुरू के इटा अवसासी रेना भुः र्वेद केद ये रेना विंद श्वाय कृत कुर कर दर ये र्वेद हैरा याल्य मुक्ता सुकारा है र का सुकारा प्योद यासुर सामद है र द इ इ र न द का सारे है। <u> न्या भेया ने वे अह्या जुन यो क्षेत्र ने अय्यक्ष न्यन न्यो वन्त्र केंब्र वसेवा</u> यम्बर्गस्य स्टर्मी भूमाबर हे अर्थे द्या विद्यमेश दमी प्रविकार के सम्मान स्वरं म्बर्या सेर हेश अर अर म्बर्य सुर होता

विदायाधुनायमान्तराञ्चतमाञ्चेनामहेँदादीयावाञ्चेदान्तरादर्देदान्नीम ઌૹૢૡૢઽૹૹ૽૾ૢ૽ૡૢૹૢઌઌૹૡ૽ૼૼૼૼૼઽૢ૱૾ઽૹ૾૾ઌૹ૽૾ૡૢઽઌ૽ૡ૽૾ૹ૽૱૱ૢ૱ઌ૽૽ૼ Rinpoche, and he joined others in signing a guarantee for the release of Gedun Choephel from prison.

Before the Cultural Revolution, when the woodblocks for the dictionary Brda dag ming tshig gsal ba disappeared, Geshe Chödrak kept the blocks in his room at the Horkhang house. He printed the dictionary in his own living quarters and did all of the work himself: mixing the ink, printing the pages, drying them in the sun, binding the volume. Geshe Chödrak would then carry the volumes to market and sell them for additional income.

Starting in 1951, Geshe Chödrak worked every day at the office of the Tibet Daily. On the side, he continued manually printing the dictionary for sale. I used to go to Geshe Chödrak's place to watch him. Once the pages had been printed, he would spread them out on the western [side of the] roof for the ink to dry. One day a sudden and strong wind swept up the papers and they filled the sky. Some reached as far as the nearby peak of Bumpa Mountain. With great disappointment, Geshe Chödrak went to see my father and said, "The wind has carried all of my dictionaries away." I clearly remember my father consoling him. "Don't worry," he said. "Perhaps this is more than a misfortune. Couldn't the scattering of your dictionary be an auspicious symbol?" Indeed, the dictionary later reached far and wide, as my father predicted, with its publication by the Nationalities Publishing House in 1957.

I remember my father remarking on several occasions: "Some people say that Gedun Choephel wrote Geshe Chödrak's dictionary and that Geshe Chödrak simply published it under his own name. It was not at all like that. Geshe Chödrak and Gedun Choephel were very close friends, so they must have discussed the compilation of this dictionary. However, Geshe Chödrak himself had read all of the major religious texts; he was not only an expert in classical poetry and grammar, but he also knew the Mongolian language. He was highly talented and



र्वेश[,]गुट:५र्देशःश्,ग्रर्वेदःश्रुंदः।

श्रीट के वा दे 'दवा खें वा खे

कुर:कुर:अर:धें:बेग:गी:

ब्रेट:ल:नङ्गीमश:वर्गाःल।

देर:बर:वश्रय:क्वें:वहर:ब:

षवाकेरावराते दे वदाकेवा वि

ध्रमासे ५ '५ सा स्मा

বার্থাবাথ্যমন্ট্রিস্পুব্রাব্র

चक्र्यःसटःखंचायःसदःधयः चक्र्यःसटःखंचायःसदःधयः

य रेट्रेब्रिक्ष होत्रा सीट प्रमाय हे

त्रवरार्र्से ५ ५ ५ ५ तुर यगाया या ८

यर श्रेंट दर्गेश दुर वर वहेत्।

स्'सह्द'दश'र्सेट'र्देगश

ग्रीश विंदा वी भी खिरा हो गी

অবাশ:শ্রীম:২ব্রা:মরীম:

<u> অথ.ঘাশ্রমশ্রুমার্থ</u>স

বর্ষীবাঝ'বদ্দ'বরী'র্বি

र्'र्वो'यलेश'अळेवा'वीश

मक्रमानी नियानियान

1962 Demicanosolo.

Ricusto o son 141000

Pring of one of the or

On the right is Horkhang Sonam Pelbar's son (and the author of this piece) with Geshe Chödrak's son Dawa Tsering (left).

थीर क्रें चित्र के अहुग

द्रेश्चर्न्त्वाक्षास्य चुरु वर्ष्य क्षेत्र प्रकार क्षेत्र प्रकार क्षेत्र प्रकार क्षेत्र प्रकार क्षेत्र क्षेत्र प्रकार क्षेत्र क्षेत्र

very honest. He would never claim credit for work done by someone else. While the [poem in the] afterword of the dictionary was written by Gedun Choephel, he had given it to Geshe Chödrak."

While Geshe Chödrak was working at the Tibet Daily, he still wanted to expand the dictionary. He continued to collect a great number of entries, which I myself saw. These words were written on countless small papers. They must have been like what we today call "index cards." He probably had more than ten thousand such cards. Later, during the Cultural Revolution Geshe Chödrak underwent a great deal of hardship; he was accused of being a "Soviet revisionist spy," struggled, and then kept in isolation. Fearing that he would continue to face such atrocities, his wife burnt whatever books and writings she could find-including his dictionary entries. One day, he told my father: "Metok was not able to distinguish between my books and my notes for expanding the dictionary, so she burned them. They are fools. They couldn't distinguish between what was valuable and not, and burned them! What a disappointment!"

Sad Parting

It was the middle of the Cultural Revolution. Geshe Chödrak, like other older intellectuals in China, was the victim of unfounded accusations, such as "Active Counterrevolutionary," "Soviet Revisionist spy," etc. He suffered for a very long time and was opposed, struggled and kept in isolation. Geshe Chödrak stayed on the second floor of the Horkhang home. Both he and my father were considered enemies of the proletariat and were severely restricted with people assigned to watch them. They had contact with no one.

When I graduated from school in 1965, I was sent to work in Chamdo. My first home leave was not until

र्चेन् सुना अर्हेन् विरान् प्रत्नाशायन्न यान्यायान्या स्त्रायान्या स्त्रायान्या स्त्रायान्या स्त्रायान्या स्त्र র্মান্যান্ত্রার্থান্ত্রার্থান্তর্ভ্রান্তর্ভরার্ভ্রান্তর্ভরার্থান্ত্র্বান্তর্ভরার্ভরার্ভর दर्ग

चक्किचः ४४। १९४१ व्यामा विकान् विकान् विकान् विकान् विकान् विकान् विकान् विकान याश्रदःश्रृयशःगुशादयो प्रदेशःयः सहयापरःश्रुदःयः स्रेद्र। विदः पश्चदःदरः ग्रीभःयोत्रभःमिद्धः स्रेटःयोत्रभःवस्यःयस्यःयस्या 55.3.MC.271X. मुद्राक्ष्मवायद्वायाव्यावयाराष्यद्वायात्र्याच्याव्यावद्वा र्रेण मैरा ले द्रमा मारा र हो से १ वर्ष में दर्ग में दर्ग हो से हो में मारा साम स्वास . त्वायः के रंभः क्रीयः ["] श्रयः श्लाद्धयः येदयः वेशः वेशः व्यवः येदः वीः शुद्राचा कु लिया परियम् द्राप्त के मिर्ग कि मिर्ग के मानी के द्राप्त के प्राप्त के प्राप ग्रैं से वर्ग दे समाध्रास्य सेंदाहेमाद दे विमान समायह मार्क से रैया यात्रस्य यात्रस्य याहे 'बेर्स्य 'कुरुर 'हॅ' हुया 'कुर 'बेर्स करे 'चर्स 'ब्री द्र ' यम्बर्या लेन सूर के बर्ध मुद्द स्पेन मुद्देश दाम हो बर्ध स्थान है सूर ૡઃૡ૾ૺઽૺૹૣૻઽ૽૽ૢ૽ૺઽૺઽઌ૽ૣૼૼૼૼૹ૽૽૱૽ૺ૱૱ઌ૽૽ૺૡઌૡઌૡ૽૽[ૻ]૾ૡ૾ૺૹ૾ઌ૽ૣ૾૱ઌ वयासुवाकवाग्राटावकीवान्तीयत्वाप्यवार्षेत्राच्यायान्त्रीयान्यान्त्रीत्त्राचुटा यहेब र्बेट सार्वायरामा यो रावेंब। दे दबा कवा सर्देर यो मादबा प्युव रेटा या. स्टायर देयो. यत्रेया अक्र्या. १७४२ स्ट्रायर स्ट्रियाया ह्याया स्ट्रीया स्ट्रीया भ्रामित्रीयाश्रम्भवश्रम् स्थाराखें ४४ सेवश्रावर्षा

ह्यें वं १९४५ वॅरस्याम्बर्धामधरम् वे वेरावन् स्वाप्तस्य दशःग्रादः मेरिः श्रीदःहुशःहैदः चल्लैदः हेः च बदः तुः श्रीदः र्षेषाः रेषाः ग्रायाश्यास्य हेश्रावामार्थेवार्थेवारम्बद्धस्यरायानग्रस्यदेवान्त्रेनायदे नुराञ्चवरायेवाः गुरःवर। अवसारेरायार्यायारेसार्यो वर्षसायार्वेगायाहेसायो राजारा वर्देब : ऑट : चवे : श्रूवका : वहुना : ल : चर : कंग का : घर : वका : तुरका : वा : वा : येवयायार्वे वेदे दुद्रायदे खुवान् वायवा ने नुयार्ववायायम् वयात्राह्म ब्रें द्वो च्वेष अर्केवा वी दर के चु द्वा केंद्र के अर्थ वार्थे दर ख्वा या दि हो र्चेदःयःर्कदःयःवर्द्देयसःस्यःद्वोःचवेसःर्केसःच्चनसःवःद्वनःद्वेसःवदःषदःयेः वर्वाकेशन्त्रारःवर्देवःवावरःवःभः । कंवाशःधरःवशातुरशःशुः ७८ः विंदाया सुरद्भाव नवे कें नामा वर्षा विवा गुर्द्भ नामा ने प्रमा हो नाम विंदः व्यान्त्रमा हो साथी द्या साथी द्या साथी द्या साथी हो साथी है साथ

1971. While in Lhasa, I secretly went to see Geshe. He lay bedridden. His hair had turned totally white, and his beard was long. He could not hear very well. His wife Metok told him in a rather loud voice, "Mr. Horkhang's son has come." Geshe's eyes started to fill with tears. He looked at me for a moment, but couldn't speak. Then, after some time, he took my hand and said, "The 'cultural revolution' has been very harsh and chaotic; your father must be very scared. Tell your father that there is no need to be afraid of his and my relationship." As he cried, I too began to weep. Though I wanted to stay longer, I was unable to do so because of the restrictions at that time and slowly left. Geshe Chödrak died in 1972, shortly after I had returned to Chamdo. He was 75 years old.

In 1976, the Cultural Revolution ended and China's policy improved with each day. Eventually, those who had been falsely accused during the Cultural Revolution were exonerated. I still clearly remember how my father would in those days visit the newspaper office to ask that Geshe Chödrak be exonerated. The head of the newspaper office was Party General-Secretary Tenzin. He showed great concern and consoled Geshe Chödrak's children and other family members. At a gathering of Geshe's friends, neighbors, and family, the General-Secretary stated: "Geshe Chödrak was in no way guilty." During a memorial organized at the newspaper offices, he again exonerated Geshe Chödrak in front of the staff, saying that the Mongolian teacher had been innocent.

Translated by Lauran Hartley

^{*}The author is referring to Theos Casimir Bernard (1908–47), an explorer and scholar of religion who spent sixteen months in Tibet during 1936–37. See Paul Hackett, "Theos Casimir Bernard," http://c250.columbia.edu/ c250_celebrates/remarkable_columbians/theos_casimir_bernard.html>

र्चन् ग्री:श्रेन्टक्रम् हेर्रा हो:नुमा हेर्न्ट ह्ममा मी मनमा हेन छन। यह नमा शुर क्रुया योगला चत्रशारमा क्रिय दिन्यो चलेश क्र्या योगल लेश ग्राम्या या र्वन कुळेना अर्हेन केब के अप्तुर क्षेब या वेन ग्री केना अर्हेन स्पर्या ग्री नतु वायानु चल्वारायाने हैं सेवा खुवानु विद्यार में वेंन नु स्ने कें चस्रवा चरी स्वापरा के निवार प्रतेशक्र्यामु म्वामाया।१९९८-१९४२) अर्क्रमा मीमा १९८८ व्यास सम्मामा डिटा १९८७ वॅर्स्ट्रेस्परमाडिसस्त्वाचीसःस्त्रेत्वराम्बर्स्स्रेतिस्परन् 2521

कैंगा अर्हेन देवे सुराग्धरायी देन तुः हैं अपार्थि "स्नेन वास्यापि वहेया हेत्रसे सुवायदेना। वे स्पर्धे सेवायम् वरे रे व सेवा। क्रेंचे वस्तर हर रदायी व्यया हेश उँग। व्यानुः तुषायदे वयन् यादर योषा द्वेत्। " लेषा

चन्नामाश्रासमानु ह्यां त्यायस्य स्वर्ते चर्ते ह्या विंगाच्यास्त्रात्वेगायीत्राह्मातः "स्रेशायावरी लटार्स्यार्स्यः ज्यान् स्त्रीसःविदा गटसः उद'र्चर'ग्री'ब्रेंट्र्स'स्'क्रे'क्रे'बर'ध'र्वो'क्रेट' राष्ट्रभाम्यायायायाया । विशस्त्रम् प्रमा श्रे भ्रें मलेवा वीश केवाश वरु मने विमानी श्री स धर विंद नी मूँग्रास से द्वी वर्त केंस वर्षय ग्रीश सेरावर क्षेत्रा शवश रवट हे जोहेश.

वायर्डेशमिवेयाकेलेटाक्सुद्भादेशके वादे केंग्रावट वर्शन्त्रसम्पर्धात्रसम्सार्केषात्रस गुर-दे-त्युम्ब-सु-पत्नेद-य-म्बर-प्रदेश-पर्देश-वेद-स-पद्देश-स-द-म्बर-पर्यो

क्कुंद्रयाये डेद्र द र्थेन पदे हो देवाका नये क्रुद्ध विर वीका देवा कर विर हो है ल्यान्यस्य विष्यान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्त्रस्य स्थान्यस्य स्थान्त्रस्य स्थानित्रस्य स्यानित्रस्य स्थानित्रस्य स्यानित्रस्य स्थानित्रस्य स्थानित्यस्य स्थानित्रस्य स्यानित्रस्य स्यानित्रस्य स्यानित्रस्य स्यानित्रस्य स्थानितित्रस्य स्यानित्रस्य स्यानित्रस्य स्यानित्रस्य स्यान श्चीरायम्पार्वस्य देशान्यान्य विष्या विष्या विष्या विष्या दरान्यत्रवर्षायार्द्रायते क्रियायर्केशायवुराकुणीयान् श्रुयायायत् क्रियायार् कर (张克强, 1917-1989) र्सेन्य ग्रीय हैन प्रसेट प्रेने प्रमुख हुन्द वर्ष्यान्त्रेन्क्षंद्रम् स्वाप्तिन्त्रम् वर्षा १९४७ वर्षे स्वर्षः सुवर्षः दशायबुदक्षिमा अर्देन देवे वर्षों देव क्रुकेर वर्ष व्यविदा केंगा अर्देन दे दर देवे सहर्याया प्राची प्राची का क्रिका मुजाबा महिका मुद्री सुन मुजाबा मुद्रा में प्राची स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप ध्रियःचे।

विराधराने वाका परावक्षुवाय वे केंगा सर्हेन की धरावा विष्व विषा विने वा द्यः अर्हेद् । वदः मी द्ये दर्गोद्र । वदः द्वावत्वाका व्येदः यः है मी त्यु अः ह्ये यः ह्ये वः व्या हेदः श्रीते ह्येत दर्धे तथ देवीया ता ही चनट यह या देवता श्रीता ये या विषा यदे चया ही. यात्रमः विमायमाने विनायमाने विनायमान देव द्वीवश्र सु वर्तेश हे वेंद्र लेंवा वेंद्र वाहेश सु धर वक्कव वेंद्र। वदे हे वेंद्र क्री बुंजि किं की कुर मार की राज रवीयमाल ज्वीर या व्यवसाय है राज अक्रू में कुंग है. श्रेत्र-त्र-णट-श्रृ-म्राश-विद्याणीत-त्री

With more than 26,000 terms, the Brda dag ming tshig gsal ba—or as it is more popularly called "Geshe Chödrak's Dictionary"—was the most comprehensive Tibetan dictionary in existence prior to the publication of the Great Tibetan-Chinese Dictionary in 1985. The Brda dag ming tshig gsal ba [Orthographical Dictionary] was completed in 1946 by the scholar Geshe Chökyi Drakpa (1898-1972), who was born in Mongolia but spent most of his life in Tibet. The woodblocks for the dictionary were carved in 1949 under the patronage of the Horkhang family.

In the afterword to the volume, the author writes: "In this

human realm, the world of joy and

sorrow,/ all human beings dream of/looking back from the dead/ and struggle to leave some small legacy." Following the full five stanzas of this memorable poem are the words: "This too was written by Geshe Chödrak, who was

born in Mongolia but spent his life in Tibet, the Land of Snows." Some have speculated that perhaps these verses are written not by him but by his friend Gedun Choephel. It is now clear that Horkhang Sonam Pelbar, who helped both of these scholars and knew them well, also held this opinion. (See feature article in this Newsletter.)

In 1957, the Nationalities Publishing House in Beijing published the Brda dag ming tshig gsal pa with Chinese translations for each term and definition. Lobsang Chöpak (whose identity is unknown to me) and Zhang Keqiang—a scholar of Buddhism and in particular Tibetan Buddhism, as well as translator of Jonang Taranatha's Religious History of Indiawere responsible for the Chinese translations. From then on, the dictionary circulated more widely and its reputation, along with that of its author Geshe Chödrak, spread throughout all Tibetan regions.

An original print from these woodblocks can be found

GESHE CHÖDRAK'S

■ Pema Bhum

श्चेता सूरका गुर देर कर वी ख्वाका सूर विंवा गुरि वार्षेत्र सुवाका सुन्वावा हुवे. श्रीट क्रिया द्वराश्री यात्रा स्थित स्थित स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थाने स्थान वश्चेमश्राचेत्। देणदर्चेत् ग्रीशत्माचीया वेराव देनेदाश्राद्यी क्रिया अर्हेत् वेरा चते स्मेना सूरका सु वर्षका पते द्वी अर्केत लेना प्रेन वका के। केंगा अर्हे द देवे

र्ववानाद्यादवीं द्रम्हरमा के विवानादमा र्धेदशः ह्र्याशः न्याशः वार्रवाः नः वर्गेनः श्रेन्यम्यार्थयः होन्यः संस्थाः स्वरूपः स्वरूपः वर्षेत्र सर्वस्था से प्रसार्थेत्र दे दिये स्वा ग्रम्भयानुदाना प्रमायमान्यमानुदानदे स्रीटा क्रेंगाऱ्चस्याः विचाःमाद्याः १ दयः ४२ वर्षेद्रयद्रा व्यवयद्भेत्रवर्षेत्र ज.श्रीचश.स्रोचश.लट.स्रेच्.ध्याश.चीटश. १ वर्रे वर्गे वर्द्ध थें।

क्रॅग् अर्हेर् दे पर र पक्रुव परे हेशःशुः षटः दवी प्रदेश केंशः ग्री वारायाः यर्केगान्न स्टामी केंगा यहें र रे कु ब्रोट याश्वरःश्चेयाःयादरः द्योदशःग्रीशःश्वरः द्वेयाः म्बर्धः म्बर्धः स्वर्धः स्वरं स्वर वर्योत्यःचत्रदःचक्चचःदशःवार्श्रवाःस्टार्थः र्भेर-व-भरा देवा वावश वाश्वर वहेवे सैयश्रातारेयो.यपुरासक्यासक्यातारेश्रासीटा बूर्क्रियाशागुराख्याख्रीरामहिरामबिराधा हे सून ५ वर्गे देंग्य गुरु ग्राम नि में हु षाचे से हेंगा यगवा गरी वाहर होंबा स वर्डेर्'यम्'श्रे'त्य'वश्चेम्'र्नेस्'तुर'वर्म

रेगा ग्राप्तरा ग्रायर प्रदेश स्थाप य वेंद्र क्षे स्वायालय वी द्ये देव वालक



ર્ગો ભ્રાસું પાર્સેન વ્રાક્રેત સેવ સેવ સેવ र्धेद्र'य'न्ज्ञारा'सं क्लेंच बर'यहरा ष्ट्रायाम्बर्ध्यये । "यह द्वा और । র্ক্রবান্যখন্যনা,

Title page from Geshe Chödrak's Orthographical Dictionary, donated to Latse Library by Professor Lozang Jamspal of Columbia University.

प'नद्रास्त्र्द्रभ'प्रश्केता'सर्हेन्'यने' अद्राचेर्त्रस्त्र सूत्रस्त्रम् स्त्रम् स्त्रम् स्त्रम् स्त्रम् तर्योत्र। रुपा.यावका.याकार.याहे.अहेचा.यञ्जीताहेका.क्रुया.आहें.ट. तरी.टगार. वर्देन वृत्तुकार्श्वेन साधाराचकुवानकावर्षेटा सार्कर वरात्युकार्येदायार्केटा सराह्मेवका श्रम्यायात्राम्यायात्राम् विवान्त्रात्राक्षेत्राक्षेत्रायात्राम्यात्रात्राम्यात्रा नुसाने १९९४ व्याचरायाक्ष्यायार्द्धन् वदे बेदबायायायास्य स्तर्यस्तु सामे यम्बेट्याह्यायान्तानुन्योञ्जून्यायान्त्रीयाक्तुत्रव्यत्ये केष्याया धेवे सुर वुर मी दें र मी के मार पे उर सूत थे हे में तर से दें हो 👤

in the Rare Books Collection of Latse Library, thanks to the generosity of Columbia University professor Lozang Jamspal. The woodblock print is not elongated like most traditional Tibetan texts, but is in the shape of modern-format books. It consists of two volumes printed on Tibetan paper. If this edition is not the first instance of the transition to modern-format printing using Tibetan woodblocks, it is certainly among the earliest.

The layout of the dictionary also follows modern conventions in that terms are listed on the left with corresponding definitions on the right. [Traditional Tibetan glossaries usually listed words, and sometimes definitions, in paragraph-format and were often in verse.] This dictionary is likely the first instance of the transformation of what Tibetans call "dag yig" or glossaries into the structure of the modern dictionary. Yet, unlike modern publications, the pages of this dictionary are not numbered consecutively. Rather, the paging starts again for entries beginning with a new letter. For example, all entries under "ka" comprise pages 1-52 of the dictionary, and the page numbering starts again with "1" for entries under "kha."

Once this dictionary was published, Geshe Chödrak then thought about expanding and revising the volume; he collected many additional terms for which he wrote definitions, and filed them away. During the Cultural Revolution, however, his wife Metok feared that her husband would face even harsher suffering under a variety of charges. Not daring to keep anything that could be used against him, she was compelled to burn his notes.

Like other Tibetan books, Geshe Chödrak's dictionary was banned during the Cultural Revolution. When the Cultural Revolution ended, the dictionary was rehabilitated and in many areas the copies previously left unsold were snatched up by buyers as soon as the books reached the market. The Brda dag ming tshig gsal ba had its fifth printing in 1995. In this last printing, the publishing house omitted without explanation the lyrical verses that had concluded the previous printings.

न्वो प्रवेश केंश ग्री व्याप्तश प्रवे

क्रेंग्सर्हेर्गुःसूरमुरा

वदे दे र्वेट्याधना यदे र्हे या धेना द्वा तृ हे या या ये र्यु धोद की ब्रोट र्रोव पुट प्रवेश्लुक प्रमाने प्रोक वा *चर्-द्याः* अदः केंगा यार्थायदे सहयात् सुरावुरायी स्था क्रीरा वुरार्थे ।

*ચ્ચાવ*ર્વેર:શ્રુચ:યા

ब्रीन या बूगा यदे वहेगा हेत हो पुवा वहें रा <u>चित्रपराष्ट्रीयेगायकृपवेश्येपायेश।</u> ষ্ট্রার্ন রমধ্যতম মন্দ্র থকা প্রথম . ମୁଦ୍ୟ:ମୁଷ:ସଦି:ଦସମ:ସ:୮୮୮ମିଷ:ମୁମ୍ର *दर्न-*ब-दयाद-श्रेश-स्ट-यो-क्कुन-द्वर्देब-सु-न-र्सूच-अ-हेश-सु-म@या ने प्रतिक पालक प्रीका योगाया प्रतिन हिंद स्वतः प्रति प्रामाया प्रतिया 5.यग्री *ૼ*ઌ੶ઌ੶ૡ૱૬ૹ૱૽૽ૼૹ<u>ૻ</u>૽ૹૢૻૺ૽૱૽ઽઽ૱૱ૡ૽૽૽૽ૺ૽૽ૢ૽૱ૹ૱ઌ૽૽ૡ૽૽ૺ૾ઌ म्बिन क्रों अम् हिंग म्बर्मिय प्रते के स्ट्रिस प्रते मिर्ट विस्र प्रते स्व *विकार्तेरमित्रेशः* येदःसूर्धदेः यमः हेराया में दर् ह्यें सप्तरे द्या सम्मा য়৾ॱॿॺॱॶढ़ॱॸऀ॓॔॔ॱॿॺॱय़ढ़॓ॱॸऀढ़ॱढ़य़य़ॱॸॖॱ देव:कुट:वदे:केद:के:षे:ष्युव:द:चल्या **अ**'नर्रेथ'न्नोग्रारान्य'न्ने'नवे'नेथ'नेट'नीर्था য়৾৾৽য়৾৽য়য়ৢয়ৼয়য়ৣয়৽য়ৼয়৽য়৽ বাৰ্ষ শ্ৰীশ বন্ধিন শ্লুন ক্টিন্ট্ৰন মানি মানুন। ग्वितायायत्याय्र्राचनादेशायमासर्वेता इस-५ग्राम्यदेन धेराङ्गेलिमङ्गेनासु इस्रायानु स्वास्याया यात्रा यात्रा यात्रा यात्रा या इस-न्वार्षेकानक्षमञ्जूकायदे वनन्याधिका इंअ'ग्राद'म्बिम्बर्गायते में त्यद सुर्वेद देन

કેશ'ય'વર્ને'ખદ'ર્શેવા'ર્યેવે'ખુવા'નુ'ક્રોશ'વેદ'વાદશ'ક્રફ'ર્વેન્'গ્રી क्ट्रेंट्र स्यु: से कें बद पादियों सेट पार्के स्यापार प्रसारी

The Afterword to Geshe Chödrak's Dictionary

This poem, whose authorship is discussed in the preceding articles, concludes the Brda dag ming tshig gsal ba.

And so I would say that

In this human realm, the world of joy and sorrow,

All human beings dream of

Looking back from the dead,

And struggle to leave some small legacy.

Many here have left behind their lineage, sons or students.

Still others have set down brilliant words and reputation.

Some build centers for religious learning or sacred supports,

then die.

And see the legacy of still others: their wealth and fine estates!

With neither wealth nor dharma, this beggar

Has left as legacy nothing named above,

But to cover the cost of the food he consumed,

This small book for humankind.

Thirteen years were spent in the busy

Writing of this unsolicited volume.

I am certain it holds some wee benefit for others,

But will they praise or slam it?

With this act of virtue,

May I soon achieve the state of All-Seeing

Through lifetimes of effort in proper study of

Teachings on the five areas of knowledge.

This too is written by Geshe Chödrak, who was born in Mongolia but spent his life in Tibet, the Land of Snows.

य'न्याराणी'अया'नूर'न्ट'नेदे'कुन'र्थेट्रा

■ नर्शेर् न्स्यशः कें दिरा

हुणा तर्स्रेचाला हुट लालु ।

ता वर्षे या तर्स् च्या का हुट लालु ।

हुणा तर्स् च्या का हुट लालु ।

हुणा तर्स् च्या का हुट लालु विकास का स्वार्थ के स्वार्थ हुट लाट लालु का स्वार्थ हुट लालु विकास का स्वार्य हुट लालु विकास का स्वार्थ हुट लालु विकास का स्वार्य हुट लालु विकास का स्वार्थ हुट लालु हुट लालु

ক্ষ্মাপ্ত বেই আপ্তর আই ই ই ক্রি ক্রি ক্রি र्यू:म्ब[:](A.H. Francke 1870–1930) ਭुमायदु तहमाभयाक्षिलाचियाक्षेत्रालीदु क्रूबामालीया धेन लेटा विंद ने कें मुंचन (Moravian) लेका तदुःलुःर्वदुःच्चैयःश्रवदुःक्ष्र्यःक्ष्योशःभ्रीःक्ष्योशःश्रः র্ম:মূ:মূর:শূর:মঘর:আ:দ্রির:র্ক্রম:রী: ॴॖॱॳऀढ़ॖॱॺॖ॒ॴ॒ॻऺॹॴॴॵॸॱॸॗऀॱॻॿॗॗॸॱॸॖ॓ॱॴॗॴ श्रीक्षां स्टाङ्गिर् पुर्वा श्रुवाय स्टीर् सार्चे प्येता देरायहेब. १८८५ - व्यरायानुग्राम् जुनासवतः दर्नेते कें अर्झे विषायमध्री अपार्ट सम्मार्ट स्था 'र्वेदु,योशेर,प्रय.मूर्ट,लुबो.धै.श्रीप्रयदु,यो.श्रीयो.चैश. अैयोश.रेतर.मुहु.रेतर.विर.धुयो.ग्रीर. चर्रुयोग. भे. ता. ती. व. क्रू. त. दंदा या. चय. दंदा क. चर्च. लुवा.धै.रेतर.भेष द्वीर उत्यू च अभा सू. मैं सब म्यू व सब व दे भो स्व दे मासु र र र व दे दे भी वा हु श्चीं राष्ट्रायय श्ची .ला.वीय .क्ष्या क्ष्या मार्च .लाय. य. मुर्ग वेश. यश्यात्रया स्मार्थ म्या स्मार्थ स् न्यर-न् वर्ने यत्रास्मायत्र चेत्रासात्री प्योः वृद्ये केत्राया धीदाया र्वे द्वास्तर हें बार्क के स्वास है स्मानक देराओं र्वदः क्र्याः स्वायाः वर्षः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः

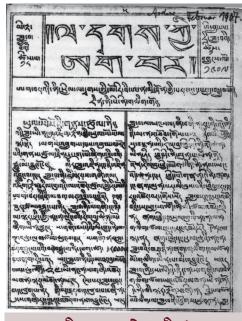
गर्डें में लिगा भेता

त्यां अभ्यः भ्रीत्यः व्यवस्य येशां त्यीं र मुर्थः भ्रीतः वयस्य येशां त्यीं र मुर्थः प्रत्यः प्रत्यः

स.भ.चार्र्यका चूर-विश्वका कुळा चूर-की विच-प्रे-वर्ग्यका क्षेत्र-दश्ची का चूर-विश्वका कुळा चूर-वर्ण्य क्षेत्र-वर्ण्य कष्ट क्षेत्र-वर्ण क्षेत्र-वर्ण क्षेत्र-वर्ण क्षेत्र-वर्ण क्षेत्र-वर्ण क्षेत्र-वर्ण क्षेत्र-वर्ण क्षेत्र-वर्ण कष्ट किष्ट क्षेत्र-वर्ण क्षेत्र-वर्ण कष्ट किष्ट किष्य किष्ट किष्ट

लुवाबोदायराबूदा। कंग्रवायरावर्देवः किल्लामा वेदराप्टरंधेते स्नावरासु वादरा १४० द्यर ल्रें स्वतरा रेश क्रीशर्मरम्मा स्य है। दे स्थार स्याय स्था ५० ह है। श्चीरःयीः धुँयायः सुः पञ्ची रः लेद्। क्यायः यरः . ५२. ७६०० घर.र्.ज.र्यम्ब.मी.लया.पूर.बेबा নত্ত, বি.লু মা.তু মা.টি. ইনস: ওত্ত্রীপ্রপ: মুই এই বি स् रम् विते प्रेमः र्रेम स्रुवा वी त्यमः सर्वस्रमः चलवा सदा हिंगासी विंदा ची ताम स्वाम क्रिया चेंदी *৲*্ৰেল্লী*অম'নই'নই'কৈ*'ন্'ন্মীদাম'ম'খীৰ'ৰ্ম' ૹ્યાંત્રાનમાં છે.જીમાં જેવાં જેવાં જોયો.તમા *बेबायार्देरा*द्दबायाद्दवाबार्सिन्नादुःचङ्क्षराहेर्नेद क्रमश्राहे दें दुः चहुदः भेदा षेत्र दतर खें योड्रेयो.जन्न.भारत्यो र.चर. ७७०८ ज्रूर.क्याना ধম'বর্ট্র'মর্মমম'ক্রদ'বর্মা

यम् वाष्ट्र स्ट्रिस्ट स्ट्र स्ट्रिस्ट स्ट्रिस्ट स्ट्र स्ट्रिस्ट स्ट्रिस्ट स्ट्रिस्ट स्ट्र स्ट्रिस्ट स्ट्र स



ग्रीश स्रोतं तर्देश निवर्ता स्त्री स

. चि.र्य.त्राघराद्धीय.यु.जा.र्यायाः क्षया.पूरः,र्ययः त्रज्ञीययः নস্ক্রমশ্রম্ द्ये दायात्र के दाया के का के का के वाया है का का निवास के किए हैं। देवै:र्क्षेयायात्रीरायुरादवरा। १९२० व्यर्गावेरामाञ्चेदासुमानुःमादयार्श्वरा શ્રીઅપ્ટ્રેમ્પ્સોર્ગો તે ત્યુન કેંચ કેંગ્રાચ શ્રી (the Church of Scotland) र्रेज्ञाबारमा देवा तृ ज्ञाबर वश्चुर से विदानी क्षेत्र स्नुवा हो न पदे वजा र विद्या म्बर्य त्युरा से व्योदाय में दाद का विश्व का साम के का साम की मान का की मान की मान की मान की मान की मान की मान ૹ૾ૼૼૼૼૼ**ઌૹ**૽૾૾ૢ૽ૺૹ૽ૻૹ૽૽ઽૢઌૹઌ૽ૻૡૢ૽૱ૣૢૢૢૢૢૢૹ૽૱ઌૺૡ૽ૺ૾૽ૡૢૼૹ૽૽૾ૢ૽૽ૹઽૹઌ૽ૻૡૢ૽૱૽૽૱૽ य.बुबा.ज.रेबाक.क्री.जर.र्रे.रेनर.वर्चेशक.वेश.धे. ७७३८ वर.र्रे.क्रैर.सूर. चुर्या रुष:रवर्ष:बूर्य:अदे:बूर्य:गुःवर्यःयानानी:क्वाय:यरःइस्रयः। यर् ॔ॱऄ॔ॱग़ॳड़ॗॴॱॴॷॴ॒ढ़य़ॖज़ॱॹॖऀॷग़ॺॳॱख़ॣऀॳॱॳऀॴॴॱफ़ॗऀॳॱॿॻॱॶ॔<u>ॣॿऀ</u>॔॔॔ज़ॣॸऻ

व्यवाकःवासूनायीदायावर्श्वेदान् स्रोता योदादवरायीवाकंनावार्श्वेन् न् रहेन ववैः क्ष्म्यायर वर्ने द्रमाया सुराविवा द्युया कें दे त्या द्युद्ध कें या व्यव प्यारा विद . को:ब्रॅर विवाःवीकानेट:ब्रावकाःकानुवाकाःखवान्तुरःक्री:केत्रवटःके:ब्रानःखेवाःवी:ब्रिनः क्रॅंश ग्री वें ना देश प्रति । या दुना शासना मुद्र ग्री क्रें का क्षेत्रा पा सु रदावादी १ १८६७ हो द्वारावी हो सुर द्वारा में हिंगा द्वारा द्वारा सुर हैं रा श्चेतार् त्वें मा भ्रायमारीमाओं मुत्रास्त्रां मुत्रास्त्रां मुत्रास्त्रां मुत्रास्त्रां मुत्रास्त्रां मुत्रास्त्रा रवः वेदः भीवाः तृः श्रु रः सूरकः ग्रीः वदः व्यः वक्षस्र स्व्यः सूर स्वेतावा व्यः स्वितावा व स् रम्मे के अंधिया सम्पर्देन विस्रकार्स्य स् मुहेना शुर श्रीकार्मे विने पदे ૹ૾૽ઽ૽૾૾ૺ૾૾ઌ૽ૢૼ૱ૹ૽૽ૺૹૢૻઌૺઌ૽૽ૹ૽૽૱ઌ૽૽ૹ૽૱ઌૹ૽૽ૡૹૹૡ૽ૼઌ૽ઌ૽૽૽૿ૺ૱ૹ૽ૢૺૼ૱૽૿ૹ૽ૺ वयरा रेमा क्रीका विकाया नृत्राका मी मी स्वरायक के प्रकार स्टायके केंबा न्ये _इस्रस्रामः वर्ने सन्ताः क्षें रः क्षेः केनः न् से रईवैः क्षें माः स्राप्तः विषाः यसः में नः लॅब नगव च सर्वेद हो। वेंद ही व्याधिय ततु हूं से स्थान के स्थान की प्राप्त के स्थान की स्था की स्थान की बर्भाताः नृषास्य ग्री । वास्त्रान् । वास्त्रान् । वास्त्रान् । वास्त्रान् । वास्त्रान् । वास्त्रान् । वास्त्रान भूर वॅर्जु क्षेर र्र र थे वोदे त्रवेथ व त्य बेव त्रह्मा वुष यदे वक्कुर रेश विंर् दश याश्चरमार्ने न दुश्याय देश प्रथा स्नान मी मूर्ग निवासिता

अ:दिवां अ:की:श्रवां वं देवां वं देवां वं त्यां वं त्य ळॅग्रयायरायरी हो राप्त एक ग्री केंग्राप्त था के पाप्त स्था यहा प्रसाद सु श्रेन्त्री प्रेन्ना न् नुन्य सुन्य स्वर्ते चर्या नुष्य सामा वर्षे के स्वर् भूनः स्रो वड्रेश्रायदे वा दृषाश्राम्भे व्रियायार्केदे प्रवास्कृत् त्रार्थे प्रवि वात्रवानाम्य प्राप्त म्भू नावश मुः यस्य परुष भुँ नायः मुन्ना नीयः स्वायः परः नुः सुः वर्षे न वैश वश्य तर्वी र की वहूर वी जा धूरा की वर्वे प्रवाश है। र्वोदः ददः। व्योदः वी मृष्दर्भवा नी भ्लें र पठरू वा वी दिवा है द विकास वे हें ५ के बाबी का बचा गुरार्क वाबाय राया आवा मुरादरा विकास मुहरी वहन्य स्वरं खुरार् प्राप्त म्यून मुन्यो मासून स्वरं स्वरं ना मुकारिया

ઌ૱ૹૣૼઌ੶ૡઽ૾૽ૺૄૄૺૹૡૹઌ૽ૢ૽ૺ૾ઌૡૹઌૡૢ૱૽૽ૢ૽૱ઌૢૻ૱ૡ૾ૺ૱૽ૢ૱ઌ૽ૼૢૺ <u> देर:वहेद्र:वि:५२४:ग्र</u>ी:वश्रय:धर:व्य:दृष्यश्रयानुप्र:ग्रीश:श्लवशदेर:वेंद्र: भुै)'भै'नो'स्य दर्यदे कें स'भैना दरम् तिरम् मिस्य भैना नी तुस्य पर्दस स्था वेदः र्श्वेदः योदः याद्रश्रः सूर्यः यः यादेदः योदः युवाः यः यः या वदः 🔠 💍 दः द्रः <u> देर:बर:वेंद्र:धुै:बर:बाक्षेब:ग्रार:वर्ष्वे:ब्रीर:ब्रीट्र:व्लेब:यदे:वेंद्र:ग्री:ब:क्षुट्र:</u> यश्चार्याः विष्याः विष्यः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष् ्धूना नी नेंदा दक्षा चर्या अति । दूर १९ अका खेद दुका खेद । यस चर्या

स्रायसः नियम् नियम् क्रिक्तः विश्वास्य स्रोत्ताः नियम् मान्यः स्रायसः स्रोत्ताः स्रायसः स्रोत्ताः स्रायसः स्रोति स्रायसः स्रोति इस्र है : ब्रैन प्रमूद पर्देश ग्रै श स्त्र प्र देश स्त्र प्र के स्त्र प्र के प्र के प्र के प्र के प्र के प्र के च्येब ब्रुवर देर सर "अघव स्री" वयाव लेया यी सः सूर चर यार दुव क्रीअप्यताः स्नानः ग्रीः स्नानः अर्धेनः प्रतः स्त्री ग्रायः स्त्राची स्वाप्यः स्त्राची स्वाप्यः स्वाप्यः स्वाप चलैद'य'वर्दे'वर्दवे'र्सुवाद्यायाश्चर्यास्त्रर'श्चीत्रायमा'र्जेद'र्द्योद्यास्त्रीर'र्द्योद्यालेद्या यासुरस्य पवरः। स्रावसादेरस्या द्वास्य केंस्य केंद्रासा ग्रीसा है। साया पवर रे कुरा द्वा ययः अन्यार्वे विस्त्रवर्श्व क्षेत्राया विस्तरम् । त्री नियम्बर्धान्यस् लॅं-इन्नशःखनाः सम्प्रदे व्यक्ते व्यक्तः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थानः स्थानः स्थान्यः स्यान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान् [मस्राक्तियार्च्यार्म्याय्ये स्वतः विदायियायते स्वतः साम्याय्ये स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः

सु रक विदे प्रीक्ष विंद वी क्वा का पर वी क्रीं र पा के वा में र वर्गे द पा म्बिरम्बुरम् १९०८ वॅरन्द्रीयःहमार्चर्यायस्य वर्षायुर भ्रममा वर्रान्यमानी द्वीत क्रम्य उत्राची सर्वेत सुरामी मान्यमा मी सने दुः वि दर्भे मा सी महान पदि मास्य दि मुन्त में सुर्वा पर वि महिला से सिकार के सिकार के महिला में सिकार के सिकार क र्वेन'सर'म्बर्थ'र्द्ध्य'यदै'यदेव'से'स्वेद'यदे'चे'र्क्वेस'द्वेद्रा अेद'द्रयदः हेशःसु विंदः क्रेंशः वेंद् ग्री पत्नु दः दशवा इस्रश्रः श्रीसः यः पु दिर्देशः सु । सर्वेदः वः बःर्वम्यायस्याधीनःक्रेयाद्येः यह्नद्रः र्वेदः विषाययन्।

ૹૼૹ[੶]ૡૼਗ਼੶ਜ਼ੵ੶ૡਗ਼ੑਗ਼੶ਖ਼ૡ૾૽੶ಹે**౼**੶ਜ਼ੑ੶ਗ਼ૹਸ਼੶ਗ਼ਜ਼ੵੑਜ਼੶ਸ਼ૢਗ਼ਲ਼੶ਗ਼ੵ੶ਖ਼ਗ਼੶ कःग्रार्थरःयःविगाःधेवःवेश 🔳 🔳

सक्रम्। र्हेस सेना वरे वर्षे प्रमास्त्र (John Bray) व्यम्स ॷऀॴऒ॔ॱॴटॱॺॊ॔ॸॱॺॴॴॱॸॖॺऻॴॴॱय़ॣॾॱॿॖऀॱॸॕॱय़ॶॴॱॸ॔ॸॱॺॊ॔ॴॱॿॖऀॴय़ढ़ऀॱऄॗॕॴ लेग्।वन् डेग्।चडरूरअर्थि वर्दे द्वानदर वर मुग्रूर हे के ल्।

नर्भेन दस्य हें दिन है जिस्से दिन हों द दस्य प्रेत्। मदुःस्ट्रिंद्रे दुद्देःस्टर्ला स्ट्रिंग्लेषा मी मार्थस्य सुरा मी हानः यञ्जयमा ५ : व्यें : व्यें ने दें दें ने स्वें ने য়ৣৼ৾য়ৣ৾য়য়ৢঽ৾য়৾ঽ৾য়৾য়য়য়ৼয়ৣয়ৢ

त्य धुँग्राय गुँ देवा य बेदे परुस्रकार्स्कार्यो दरमी पेर्यो वस्याञ्चरम् विद्या

= रगःश्रेंबःयःश्रेष्वश

<u>হুমান্ত্রীরমানা প্রাথিত ১৯১৯ বিশ্বার্থিত ১৯১৯ বিশ্বার্থিত ১৯৯৯ বিশ্বার্থিত ১৯৯ বিশ্বার্থিত ১৯৯ বিশ্বার্থিত ১৯৯৯ বিশ্বার্থিত ১৯৯ বিশ্বার্থিত ১৯৯ বিশ্বার্থিত ১</u>

Origins of the 'Tibet Myth' in Western Fiction

Ramon N. Prats

"Tibet? Does Tibet exist?" But of course it must. K.A. Goonan, The Bones of Time. New York: Tor, 1996, p. 151

७८० स्ट्रमुनसामर्ग्रान्द्रानु यादे त्रासायार् हे होता हो यदे दे म्बेट्सम्बर्गस्यायास्यानः देशः केंद्राः ग्रीः द्वाः वद्देवः देः वहेवाः हेब विंब र्भेटका ग्री प्रकें को दाले प्रवेश कर्बे ब ग्री दार्ग श्री रहेटा। विंद्राची अर्छन स्नुन च्चानामा सुत्या सुदि विंद्रमा सु प्यादा सुद्र स्नुविस विदायहै वा हेब विंद र्भेट्य द्या में दिया देश हैं त्या प्राप्त मा देश द्या में प्राप्त मा ब्रुंग्रयःक्रुःयःविवःदगःतुः वर्देदःयः वर्षुः वर्षुः वर्षुः वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षायरविषा संचित्रेवातराया मुलाश्वेदाविर्धास्यास्त्रीं नामहत्र वर्जे मुन्मामीका "र्वेन" हेकायाया होतामीका वर्त्नेया यहाँ या प्राप्त होया शे वर्ते वा श्री स्वापाय वर्षे विश्व वर्षे विश्व वर्षे वर्ये वर्षे অঁবু:মি: (Bernardo Bertolucci) অ: "মুন্মান্ত্রাক্রন্ত্র্" (Little বৰ্দ্যবৰ্শ অব্ বিদ্যু (Jean-Jacques Buddha, 1993) 55'1 মমনীর মী শূম মী ঘারী (Martin Scorsese) দী "প্লাম বুর " (Kundun, 1997) จรงเล็ามาล้ามาล้ามาสิ่ามาสิ่ามาสั่วเป็นระเบิดส मार्थाय पर्वे मूर्या पर्वे में प्राप्त के के कि प्राप्त के कि मार्थे में मार्थे के मार च देट श्रे लिया यी थ ग्रीट में द हि के च लिया यहे या हे द या सूर ये थ ग्रीट स्वेश र्हेज्याकुत्तेराञ्चेत्रा १९९९ विरावेदानी दर्शे (Tibet fashion) यावशुरावाक्षराकेन संलियाशुरा। देः ष्यराचे दायाद्याराचयाद्यास महिषाही अतिराम हें हैं रान्यसासर्व मालक हैं राम्यरासिक परि

he awarding of the Nobel Peace Prize to the Dalai Lama in 1989 elevated the Tibetan charismatic leader to a worldwide symbol of nonviolence, marking the apex of his international fame and making the whole world utterly aware of Tibet at large. In consequence, the manifestations of the Western world's mythical view of the Land of Snows registered a spectacular growth. In ten years, over a dozen fiction movies featuring topics loosely labeled "Tibetan" were produced by the international film industry, starting with Bernardo Bertolucci's Little Buddha (1993), Jean-Jacques Annaud's Seven Years in Tibet (1997), and Martin Scorsese's Kundun (1997), in an escalation of Tibetanization. In addition, a long string of fictionalized accounts contributed to further the popularity of a virtual Tibet. The "Tibet fashion" would come, though, to a paradigmatic change in 1999, when two middle-aged Tibetans, Khyentse Norbu, alias Dzongsar Khyentse Rinpoche, and Jamyang Norbu, adopted two of the most cherished creations of Western civilization—soccer, the most widespread sport in the world, and Sherlock Holmes, the most proverbial of detectives in order to Tibetanize and restore them to the Western audience.

रेव र्थे के ५८। वहमा ५ वृत्सार्वे रातु याहेश.रश.रचा.स्याना माजा.पाचा.यी.स्या क्रुर-र्-केश-र्माय-सूर-मुर-पये-माश्र-मुर-**ट्यु:८२४ महिष: — ८९४ म्ह्रीट २५ मुट** यह्याकेशके प्रते त्युश हो न महार्<u>वे</u>या प्रा क्रेश.लूटश.चीयोश.ची.योशट.प्र्रंज.त.चेर. र्थेन हें अर्थे -- वेंद्र अर्देन हु नक्षुर दशस्तार्सुवाशायदेः त्र्र्यायायायायायायाया वर्षा केर वाश्वर हैं श की वहें र वाले र न्नद्रश विदःगहैशःदशःस्टःस्टःशःदशः र्म्मुजानहूर विगा — धेरान (The Cup) (वर्ममाणुवान्दार्खोक्षीक्षीयामहैकाक्ष भ्रष्टेश.यद्येज.क्येश.यड्यश.ता) वसिय.स्रिट. ८८ ह्यू ८ हे अ लेगा — ने र लेंगा हें अ श्रेवे द्र्यीय विस् (वृःवी) — हें अ वर्षे चुर्या न्यस्यमार्केमाय्त्रीमात्रीमासूना

र्द्धेन्य प्रतः में दः ग्री तस्या सूदः दे द्र्गीन्य सक्ष्य सक्ष्य के दः दे विनाय नसूत्र वर्षुवासूराने प्यतः हेरास्चेनकावीरा। नाने स्त्रीराहे सेनायवे स्त्रीं नकावर्षुवा ब्रूटरने हमसादर्गे द्वाराणें रहें।

त्वार्ध्ववात्रायाद्वस्यार्वेदायावस्यात्रुदाः स्रोत्रायादीः विः स्रायाः स्रोतेः र्ष्ट्रें अप महिम्बर्ग स्ट्रिया सर्वि में जि (1254-1324) से अन् माना सर्वे ची "वर्द्यानीर क्रुबाचवर्।" बेराव देवे बरावी वेंद्र मी क्रेंस वा बुबा वेंद्र याने द्रशामार लेगा क्रमाशार्थेन द्रशास्त्रशामा दुशास्त्रशामा द्रशामा द्रशाम द्रशामा द्रशामा द्रशामा द्रशाम द्रशाम द्रशाम द्रशाम द्रशाम द्रशामा द्रशामा द्रशामा द्रशामा र्वेना वार्मे या पर्दे वा खु र्से वा प्रमार हें प्रयापत ही प्रो प्रवेश के वा युना वा से वा यावर इसस्य गुरुष चें र त्या चर्से र जाइस र र स्थार से र र न जा से व्या चरे हे सासु र्वेदःग्रीःवस्वाःसूरःदरःवर्गेःद्वंगशःपरःसर्देश धेदःदः धरःवदेः स्नेरः क्यीं पश्च अथा कें बा खेला अविदादे देशा र प्रवास प्रवास प्रवास करा विदार है। प्रवास प् हैं प्वें हेंद्र या वेंद्र या वहें या हुवा परे हेंद्र या हु। वा या दाय या या कॅशय संग्रायश्रास्टरहर है या समार्ते ग्रायह वा से द्वा र्शःक्रीयर्श्यायरःक्रीः वयर्रा हात्रस्याः वया यायरः स्रीताः स् ्रवा^च प्रमावाः क्रुचिष्यः या विसः क्रुदः तुः युः यः स्रोवायः क्रुः व्यवि क्षे.वर्ने.मृथाःग्रीशःरीशःलीथे विदःदेषु.धरःजाशुःशरःसूषु.स्.संस्रात्तरः 퓇지

पश्चर्याः केत्राचेत्रः त्वर्याः त्राचेत्रः त्रीः क्षेत्रः त्यः त्रूष्टः प्रश्चर्यायाः प्रश्चर्यायाः प्रश्चर्यायाः



मुँग नहुन ग्नन्भ रावे वर्षेया अर्वभग्य अर्थ स्वर मुर्ग्य विश्वर विश्वर विश्वर के स्वर विषय स्वर मिल्टि से से Shangri-La, from the story-board of the film Lost Horizon.

(www.spiritone.com/ ~dlevine/art/shangrila.html)

They did so by means of a film—The Cup (a Bhutan-Australia co-production) — and a novel — The Mandala of Sherlock Holmes (Delhi)—which they directed and wrote respectively. Both pieces mark a significant turning point in this story. Like the snake that consumes its own tail, the Western myth of Tibet had reached its climax, to enter a phase of inexorable decline.

The fascination of the West with Tibet goes far back in time. It could have stemmed from Marco Polo's (1254-1324) fabulous account of "Tebet" in his legendary Description of the World, but most probably it started to develop in the aftermath of the narratives and reports of the Catholic missionaries who allegedly set foot in Tibet since the fourteenth century. Yet, it was the works written by a handful of late-nineteenth and earlytwentieth century explorers, secret agents, scholars, spiritual seekers, late missionaries, etc., who succeeded in reaching Tibet, that actually prompted the open curiosity of the wide public for that land, culture, and traditions, which were often characterized as secret (when not secretive), magic, mysterious, sacred, peaceful, forbidden, secluded, hostile.... That literary outcome would decisively contribute to constructing a peculiar view of Tibet, an archetype of sorts that entered the Western

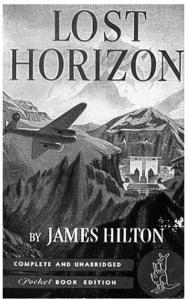
उद लेगा (प्रस्थर म्यून हैरा) वेंदर गुरिस द्वीत्र संविग द्वार हिंग साथ हुस स रश्चेत्रश्चर्यायात्रिताःश्चेत्राःश्चेत्राः प्रदेताः प्रदेशः प्रदेशः स्वराधाः स्वराधा स्राष्ट्र $\mathbf{a}^{\mathbf{a}}$ स्ट्राय्य $\mathbf{a}^{\mathbf{a}}$ स्ट्राय्य $\mathbf{a}^{\mathbf{a}}$ स्ट्राय्य $\mathbf{a}^{\mathbf{a}}$ स्ट्राय्य स्ट्राय्य स्ट्राय स्ट्राय्य स्ट्राय स्ट्राय्य स्ट्राय स्ट्राय्य स्ट्राय स्ट्राय्य स्ट्राय स्ट्राय स्ट्राय्य स्ट्राय व्ययः प्रमा अपन्ता अपन्ता का Macdonald के स्थान अपने कि प्रमान के कि प्रम के कि प्रमान के कि प्रमान के कि प्रमान के कि प्रमान के कि प्रम के कि प्रमान के कि प्रमान के कि प्रमान के कि प्रमान के कि प्रम के कि प्रमान र्ड्याया: भेर प्रमा कें कें या गुणित्रया स्थार पार के मार मार्लिया पर दे प्रमा मार्लिया पर के प्रमा मार के स्थार मार मार के स्थार मार के स्थार मार के स्थार मार के स्थार मार के स्था मार के स्थार मार के स्थार मार के स्थार मार के स्थार मार के स्था मार के स्थार मार के स्थार मार के स्थार मार के स्थार मार के स्था मार के स्थार मार के स्थार मार के स्थार मार के स्थार मार के स्था मार के स्थार मार के स्थार मार के स्थार मार के स्थार मार के स्था मार के स्थार मार के स्थार मार के स्था मार के स्थार मार के स्था मार मर्बेद में लिमा ५८ । केबा सुवा ५ मुद्दा मदि केंबा मदि से ५ सर बादी माणे द षयाकेर वेंद्र हो रे रे रे रे रे अपार्य वार्य रे प्येत प्रस्क वहें वा हो द रहे रा र्श्वेअ'केब'र्'र्टेब'य्टेब'तेर् । याःमुर्'रे'रे'णरः वुस्रबायर्रे'र्राय्वेष'र्यः ग्री पन्याक्षेत्र व्यास्य प्राची स्थापा स्यापा स्थापा स्यापा स्थापा स्यापा स्थापा स्थापा स्थापा स्थापा स्थापा स्थापा स्थापा स्थापा स्था यवश. व्र्ट. क्रू. ट्राह्म. व्यव्या क्री. क्र्येय अ. ट्राय्येश क्री. व्यव्या क्री. व्या क्री. व्यव्या क्री. व्या क्रा क्री. व्या वर्ने न सूबे वर न् वार्य पर्वा अर्देर द वेंद सबै हे दिवा प्रेंद द पर्वा के'च'यहेबा'हेब'की' ब्रावाबा केंद्र 'यबा'चक्ताय'च'हेवा'या क'यहेंबा'हेता

केश स्थापते में नाम हें वा प्रवेद की स्था — प्रनेद हम शासि माया है नाम हो स डव निम्म क्रुन द्विभ की Teshoo क्ष भ (१८९८ व्यें स व्यें व ने व व्यें प्र भूत नुर्या) बेर पर दे त्यस र्थे द्या स्था या या या या या प्रति स्था प्रवेदि र वेदि र यं नर्हे न नु नु अ हे हें अवक के अयर नवे ने न के 'अर न नु के 'यक नु हैं अ' यार्थे प्रेत्राया James Hilton बेरायकाय क्रुसमायते. "वाद्रसामाते. वर्त्रेवाः सर्वस्य स्थापयाः वर्षः वर्त्ते वर्षः स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्थाप बुका)बेरावादे धोदा दार्केशसूदावदेवे द्वाती वदावी देवा (Shangri-La) (ञ्चर-य-वेंद्-ग्रे) त्रु त्रेंद-र्थेद-येंदे-वेंद्-सः" वेर-वर-याच-सदः दर्गेद्र संवेगानी सेटा। बेराना दर्दे ते विद्यासी विद्यामा के स्थाप र्रादेशत्वराञ्चायते क्रेंट्यादेशहें वाया मुद्दिलेट देशहें क्रें हो या प्रेरायशके। (वराः झु: यः नदः वदः वी: दे: यः वाहे यः सूरहे : धेव : यः यः द्यवायः सूदः वाद दः देवाया। ૡૹ૽૽૽૽ૼઌ૽૽ૹ૾૽ૢ૽ૹઌૹૢ૽ૹૹૢઌઌ૽૽ૼૡૹ૽૽ૺૢૹૼ૽૽ૹઌૹ૽૽૽ૢ૽ૺૹૢઌૺ૾ૹ૽૽ૺઌ૽૱ૹ૽ૺૺૺૺૺ૾ઌ૽ बिर बिवा प्रेंब हरा। भ्रासूच स्त्री र स्वा वी साध्य स्त्री वा वा (1875 वें र न्यानु वर्गेन र्षेत्। ने दश्यास्य विष्ण षो से से स्वर्मियाया वर्हेन हिन्स वर्षेत् र्धे र्घतः पः Nicholas Roerich (विंटः में त्यम् अशः र्श्वेद विंटः वेदः र्थमाया १९२३ विराह्मीयहीत हुम। मैमार्सामी रेशेन्टा द्री देवादमा हुन्यमा नुसारम्बार्गेदासदी विष्यासुसासुसासुदी द्वारामी नुमया वर्ते होत्रास्य सिसास्रेस त्तु स्मित्र स् । "योषेश अपु रायं ताराष्ट्र श्रम् सामा स्मित्र स् । सामा सम्मित्र स् देशःवर्त्ते वःश्रे द्वश्रशः क्रें स्टर्के वक्तुः दट (वे वदे वता सेवशः वरुशः ग्रीः सेव

soul. In particular, it fostered a special perception of the Tibetan people. For many travelers, Tibetans were not just a "cheerful, happy-go-lucky people of hardy nature and curious customs" (D. Macdonald, The Land of the Lama, London 1929), but the living paradigm of the committed religious practitioner: the homo religiosus par excellence. Almost every Tibetan was envisaged as a deeply religious person, or even an expert meditator, and every monk as a compassionate and wise lama. Lamas, were considered to be typically endowed with paranormal or magical powers—clichés that have partially survived to this day. All in all, nearly everything Tibetan was considered beyond normal standards.

The earliest Tibetan character—a likeable one, albeit much

distorted-popularized by fiction is the Teshoo Lama of Kim (London 1898), Rudyard Kipling's celebrated adventure tale. Nevertheless, the honor of being the first bestseller on pseudo-Tibetan themes goes to Lost Horizon (London 1933) of James Hilton, another British writer. We do not know the genesis of Hilton's Shangri-La (a "lamasery" hidden in the Blue Moon Valley of the Tibetan plateau), but it is likely that he had come to know about and was inspired by Shambhala (note the similarity of this name with Shangri-La), the mythical realm of Tantric Buddhism



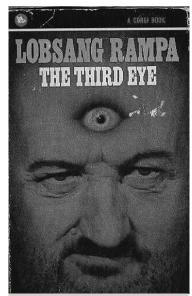
বারম'মব্'বরীঝ'মর্ক্রমম' ययान्यम् गुरुष्यायदे देव क्र्यायम्याले।

Cover of a pocket book edition of Lost Horizon. (www.noosfere.com/ showcase/pocket.htm)

that had been described in the esoteric writings of the Russian Helena Blavatsky, the alma mater of the Theosophical Society

, हुद्र प्रदःख्र प्रदे प्रदेश हेद क्री में के लिया अर्देद प्रमः बुक्ष प्रेंद प्रका और इसका बुदा दरेदेन्द्रम्यास्य स्थानमासुद्रम् द्राम्य स् लुब.स.२८.। ट्रे.२मु.मूब.घेश.बश.ज्.चु.वु.क्श.लब.श.वधूर.चु.हुब.ज. श्चिरः क्षेत्रः देः दरस्रोत्रः याद्रेयाः यदेः श्चीं याः यह्नतः — यः स्त्रातिः विचः सः धीराः व्यवन विन्युक्ष हे र्लोको मान्यो वुन्यवर इस वार्य महिकार्यन वेदाय हेन ने के खूर खूर चेंद की क्वेंग पहल चेंग अप्येक कें। क्य खेंग अप्येक अर्थेन यापीन्।न्नदर्भेन्यवि:क्षुव्यासेन्यार्भेन्यस्थित्यार्भेन्यः व्यापीन्यः वर्षेत्रः वर्ते वर्ते वर्ते वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्येत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्येत्र म् "योषे भारतु उर्वे जात्राष्ट्रभशालजायमः चिमानः, जार्थमात्रवरालमः स्रीमा মন্ত্র-শূী-বিব-লাঝ্ঝ-বেরী-বের্ল-নস্কেমঝ-ঐব্য

শ্লুবন্ধ:বৃ:ব্দ:মর্কুদ্রে:বৃষ্ণ:মর্ম "বার্ম:মর্ব:বর্ত্ত্রীর্ম:মর্ক্রমন্ধ:অর্ चमः मुमान मुका सुदे से दायायमा से दमान सम्बन्धा से सि से सि समा हुँ वोयामदु स्रुप्त वसुर्या से स्वता स्वामा व्यास स्वता स्वामा स्वता स्व বন্ধীর দিন স্থ্রীয় যার্থ কী দিন্দা H र्क् की गीव की (Cyril H. Hoskins) बेर-पर्याः" भेगान्यसुभाषा विदानीः हाः अलिगानीः इस्राध्याः (The Third Eye: The Autobiography of a Tibetan Lama वेंन् तेन थः १९४५ वॅदर्गे मुद्रानुष्ठा। विषयान्द्रस्रम् नेवावदी है वेद क्वैराबराक्ष्याञ्चेरात्यार्हेग्यायवेवे ज्ञूरालेगायीव उरा। Т र्ह्या ववरास्याया बेरान विनानी सेट र्षेना द्रकान इसका प्याप्त । ईसाय र्पेका नविन या सूरादा T म्लॅ.चबर.प्रश्र.त.बुर.च.खुया.प्र्यु.जीश.ज. ल्.पि.पेश.प्री.क्रेंथ.जा बुग्रबाद्यां स्टानी मुवेषा गायावदा दुः चक्कुरा अुविषया दें से गीदा छीता (य.रथ.श्र.त.स्रेश.रअथ.वी.र्ड्स.त.त्.) ला.जुवायवर्रास्य इ.स्टि. युजा (Alexandra David-Neel)শ্রীশাবস্তমশামনী "র্ম্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্তর্বান্বান্তর্বান্ত্বান্ত্বান্ত্বান্ত্বান্ত্বান্ত্বান্ত্বান্ত্বান্ত্বান্ Magicians in Tibet ধ'মর্মীর শ্লুম্ন্রী ধমমা গ্রহণ র্মিম্ধাইঝা श्रीत्यान्त्रीः भूतानुश्रादीया। नृत्तीतायीयानी यमास्याः १९३१ वर्षे मार्थेत र्तेष: पु. देशे : भूष: वु. श्री । वेर नः स्थानु : श्रेष : अर्थानु : स्थी यमःविःच बरः ब्लाटमः व्यवस्थाने । देः भेतः वैयः क्रीः वर्षः सम्बन्धः । स्थानः व ने के न्यूस्राक्ष के वाने के वाना के व देवै बदादा अदाके वार्चेदा ग्री बदाकें बाग्री बदादा व्येदा प्रवे विद्या हो बार ब चम्यानदुःर्याभर्धः ८८ः। हैं.वर्षेयाचीः घनशासभा चीचः ता. ह्र्यः सीचाशः र्श्रेम्बर्ग्सर्म् विरावर्ग्स्य देवायर्ग्स्य स्वाप्तराचित्रवित्र क्यीं ह्रें या वर्षेत्र सुद्रा यो द्वें अप या ये दुरुष या या युवाया की दाके ये या यी या प्रदेश इ.सुर. थुल.क्कुश.स्रुट.प्रतित्वश.क्यट.पश्चश्चशतालवाचावावाकाक्व.य. र्दे "महोत्र प्यंत्र मृत्यू त्र क्री ह्वा सः से प्यम् ।" (Mipham, The Lama of Five Wisdoms नृष्टीक भून ग्री सम्मा १९३८ व्ये व्येक तें के वान में भूक



शेरिया । र्हेशीमीराशेवस ⊺ र्ह्में प्रबद रस्याय द्रारं सेया ग्रम्भ यात्रिमायदे यम्यात्री Cyril H. Hoskins alias T. Lobsang Rampa and The **Third Eye**

(founded in New York in 1875), and then picked up in the books and paintings of another Russian, the highly acclaimed artist Nicholas Roerich (his museum opened in 1923, also in New York). The 1930s was the time of the Great Depression, and in a world in need of beats of hope Lost Horizon—with its utopian portrayal of a serene and long human life and a better world—easily captured the public fantasy, achieving a great success (it was also the first paperback ever published) to the extent that a feature moviedirected by Frank Capra and later awarded two Oscars—

bearing the same title followed only four years later, to become the first ever film of the pseudo-Tibet genre. Riding the wave of growing Western interest in Tibet, at least three sequels to Hilton's Lost Horizon commenced to appear half a century later.

Before that, possibly stimulated by Lost Horizon's international success, Cyril H. Hoskins—an obscure English writer familiar with Western occultism—penned The Third Eye: The Autobiography of a Tibetan Lama (London 1956), a fiction book about Tibetan religion, which he signed under the name of T. Lobsang Rampa, the master who he claimed had inhabited his body and transformed his personality years before. Mr. Hoskins surely benefited from the availability of works like Alexandra David-Neel's With Mystics and Magicians in Tibet (London 1931; Mystiques et magiciens du Thibet, Paris 1929), a landmark in its type, where she largely dealt with paranormal powers, occult techniques, and psychic feats

विभागान्दा। याम्यासुदुःस्मनाग्रीतमास्रा १७३५ ज्यामास्रा शु.ज.रनु:स्रेथ.वेश।) बुरारु.ववंश.क्रिंटश.क्री.ची.त.वीश.ल्र्य.धेथ.बुरा चलिया दर अष्ठभ दु च इस्मा धुरा खु या या दे र से स्टा वी वार्स या दु र पन्याक्षरात्रुका र्धुमार्था विवास पत्रिया द्वारा है की गीद की पी पर प्राप्ति स यम् यदे प्रमेट क्रा प्रमान के के के के किया कर के प्रमान के प्रम के प्रमान के प्रम के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के พิพาสุรูมพานลิ "สัรารูาณ์ สรุสุ" (Seven Years in Tibet न्द्रीतः स्नानः ग्री:यम् स्रा १९००३ स्प्रेमः स्वाद्यात् स्वाद्याः स्त्रात् स्वाद्याः स्वाद्याः स्वाद्याः स्वाद्याः सर्भिर्कीत्रमासः १९४२ स्ट्रासुर्यात्रेष्ट्रेस्या) बेरायारी स्त्री <u> ने जे दब केंद्रे 'दच्चे 'सूरक 'सूर चुक 'यदे 'च रू अर्थ केंक्र की वा 'फेक् 'य' ने 'न्ये 'सूर्व</u> चिन्नासाम् । त्या मिन्ना स्वतास्य स्य स्वतास्य स भेनानी वर्मु रहेना ग्रुट सेंट प्रदेशिया "वेंद दर सें वर्दुदा" बेरहेटा क्तुः नाराओवा र्योरामान है रथा आ श्रीभा सा केन र्योर ग्री रेवा वाल्ट लिया यह ना ।वटा मैश १९९४ वॅर:५२: मुद:बुश) देव:दे हे देर:रवश कुं दुव:बूदः मालेगाः सुः सम्प्रेतः श्रवः सम्बुद्धः यद्ये : नर्दे सः श्रुदः मी : मार्श्वेदः स्प्रेदः स्प्रोदः स्प्रे र्वे - ने त्व मी - न् कृरायया ग्राम्य देव के व के ने नु सूरा ૫" જે.સ્ટર્મ માર્મુ માર્મી અજ્ઞાસ્ત્ર માર્મી સામાર કરાય છે. ત્યા કું માર્મી સામાર કર્યા કું માર્મી કું માર रे में र त्र हो ता हो हैं ना न हें ते स्कूर मी त्य आहें न आहे हैं त्व हुआ महिना पर हुर म्नूर-देव-देश-तुव-धुँवाश-पदे-शेशशात-र्थेद-पदे-त्वी-सूर-वह्नत-था-वृवाश-क्रुँब विवयः ऍट्। यूना यम हुः र्त्तूना यः र्ये अयः क्रे वयः र्वेट् वेम वः हैः स्वेब स्वेः વૈશ્વાયવશ્વાકુદાર્કશાવશાશ્ચી વૈશ્વાયશ વિંકે શ્રેષ્ટ્ર સુદાદેશ વેંદ્ર ગ્રી રેવા વિદા <u> ५८:कॅसःसुनामःस्नामः नामस्यः व्यस्तास्त्रः स्त्रः स्त्रः स्त्रः स्त्रः स्त्रः स्त्रः स्त्रः स्त्रः स्त्रः स्त</u>

मूर्झ्यातामाचिषाचूर्यस्ताचिषुकुर्धाः चरार्चिताचकुर्धाः म्रैट्रीट्यंटर्भारव्यूरम्भःकेट्रव्यंख्या १६८६ ज्युद्रम्भ्यः म्रीक्र्यः सम्बद्धाः श्रुरानी सुरार्क्षर प्रवास द्वारा सुरायका सुरायका सुनायका सुना दर प्रवेद स्थेद। (द्येर द। R. B छो प्र क्षेत्र (R. B Ekvall) ही स पश्चम्यायते. "वान्यायाः क्रीयः वाप्त्र-प्रदेः स्यान्1" (Tents against the Sky १९४७ वॉराबेदु:पॉनायान्ये:म्नुबानुबा) बेरानःसूनुन्दा। F. R र्रे हें केंग्र ब्रें र भें (H. R. Hyde-Chambers) พืक प्रश्रु सका प्रते " ज्ञ মা বঁর'শ্রী'শ্রুর'ইন'ৰীশ" (Lama: A Novel of Tibet १९८८ व्यर्राव्यं तें तें त्यार्च में मुन्दुर्ग] बेराच सुन्दु।) धेराव त्यराया सिन्द्रिण मःक्तुः अतः दुःर्वे रः वदे रवस्र अत्राहें सः धोत। वहिवाली सः ग्राह्म व्हें व्याक्तीः द्वीः ৰিবা'আ। ই'অ'ই্ম' জৌ'অ'ব্ট্রীর'(Theodore Illion) ঐম'নম'নস্ক্রমম' यदेः "वाश्वरः वदेः वर्षः इत् स्वाः । हवाः यो विश्वः स्वः इतः क्वीः विर र् दूशःकशःग्रीशःल्वाशःय। — र्वरःग्रीःग्राश्रयः वर्त्तेरःयतेःश्रेःश्रेषा" (In Secret Tibet: In Disguise amongst Lamas, Robbers, and Wise Men—a Key to the Mysteries of Tibet) ১ট্ট্রাস্প্র শ্রী

attributed to Tibetan religions, so that it became one of the books that most influenced future writers of Tibet fiction. David-Néel herself authored a few novels, the most appreciated of which is Mipham, The Lama of Five Wisdoms (London 1938; Mipham, le Lama aux Cinq Sagesses, Paris 1935), which she wrote in collaboration with Lama Yongden, a Sikkimese Buddhist monk whom she later adopted as stepson. Another work that somehow paved the way to Hoskins, although on a totally different level, was Heinrich Harrer's Seven Years in Tibet (London 1953; Sieben Jahre in Tibet, Wien 1952), a memoir—immediately translated into numerous languages² which brought an unprecedented first-hand testimony by a contemporary Westerner who had succeeded in living for a long time in the exclusive Lhasa, making Tibet more present than it had never been in the West. As for The Third Eye, it very quickly made the bestseller lists, turning into the second milestone for fiction about Tibet. The book had an impact on the Western imagination, all the more so because most of its readers, little or not at all familiar with things Tibetan, thought the story reflected to Tibetan culture and religious tradition.

A fair number of novels and tales on Tibet-centered topics did appear on the market before 1989, besides the ones mentioned. Leaving aside their unequal value, few were realistic (like R.B. Ekvall's Tents against the Sky, New York 1954, or F.R. Hyde-Chambers' Lama: A Novel of Tibet, London 1984), while many were the result of an oftentimes wild imagination. We merely need to recall the whimsical In Secret Tibet: In Disguise amongst Lamas, Robbers, and Wise Men-A Key To The Mysteries Of Tibet (London 1937; Rätselhaftes Tibet, Hamburg 1936) by Theodore Illion. Among other fanciful notions about Tibet, the author included in his supposed travelogue an explanation and illustrations of how "Tibetan monks levitate stones by using an acoustic levitation technique with the aid of drums" (p. 195), a device employed for monastery construction! And let us mention as well Lionel Davidson's adventure story The Rose of Tibet (Harmondsworth 1962). The book is rife with bizarre elements, and an erotic ingredient is incorporated. It

मरमः १७३७ ल्र्याल्य त्याना मुन्दा वहरम्मन मुन्दा स. ७७३७ ज्रूर-वेश-तेर-धुरातेर् अति। अति। क्रिंश-तर्त्रात्रेर. च्र-मी:श्र्रेरायान्त्राश्रूराश्रार्क्षेत्राश्रायीताः वर्षाः भ्रूरायाः स्वाताः वर्षाः स्वाताः स्वाताः स्वाताः स डेवा हः "र्वेद ग्री ख्राया इस्रका ग्रीका सः वस्य का र्से वा वस्य ख्रूय त्या वस्य का सुः वह्नाम्चनः डेरास्वालिटः नये सर्वेतः न्याने न्याने स्वासायां विनेत्वासायां वनसायदी यानहेत तसाद में त्राया पराव हिरसाय रायया यो यो से देवा हे भेर-स्र, (Lionel Davidson) क्रीशाय स्थाराये वासर हेवाशाय हैवाशाय हैवा ववै:क्षरः "वॅदःग्रुःशे:र्रमाकुःशः॥(१९७२ व्ययःष्ठारःश्वेदःशे:व्ययःविःवःदिशः $\frac{1}{2}$ ત્રુવા $\frac{1}{2}$ શ્ર उर्देद:क्रमशःग्री:कःष्पदःवद्देशःषेद्। सुःसःवःक्षुवःमार्थेमशःसेदःववेः इवः वर्त्ते रामाके मार्से दायल्यामायवे दर्भे नामाले मार्ने वादे वे वर्षे दायले युमार्थे दा ने निया की अप्यक्षिया **र्श्वे**स होना " के अपन्ता " " ने के अपन्ता होना होना स वर्मोनाः श्रेषः दुरः । धरः श्रुरः वद्देवः यः ये व्यः स्तुरः अदः दे द्रानः गौर्याम् प्रायास्यार्थे सार्वे यासु विज्ञाना के स्वाप्त के स्वाप दया उदाय विद्याद में विद्युद्ध विद्या है। इंदि में विद्या के प्राप्त के विद्या के विद् यम् सम्सम्याः वर्षेत्र प्रत्ये प्रत्ये प्रत्ये प्रत्ये (१९९८ वर्षेते Mandarin यमः परानी र्स्ना सुरी क्रुवास उर मुहार पर माने स्वा भी स्वा १००० 지지

७६८६ देश. ७६६६ मुद्र.चर.ज.सूर.वर्षेज.स्रीर.रूर.श्रीश.वे. भ्रमा द्रमे सुर द्वारा स्ति। द्रशास्त्र शास्त्र स्ति सामित स्ति। स्ति सामित स्ति। स्ति सामित स्ति। स्ति। स्ति। ब्रुट मेट वर्डे ख़र्डं अर्घेद र्थेत्। दे त्वा यया स्राम्हे व त्रुचेद स्राम् श मंद्रायदे स्मृत्। यामदासेदे सूत्रायस्य स्प्रायस्य स्पर्मा दे त्या यसाया प्राचित्राच्याः अर्द्धेदः दः अरः वर्देदः तुरुः यः वाष्र्यः वाष्रयः व्या सर्मा याद्व में मिन (Mark Frutkin) मुना १९०८ स्राप्त मुना हैस-वेद-ल-वर्ष-वर्द्द्व-वेद-स्नवस-दस्य-मी-हैस-वर्द्यदस-मासर-वर्गेद-य'खे'है'र्सेन्'हे'पन्'हे'सेर' (Edmund Candler) क्री'नहसम्राहेंसात्र নাৰী নাউ আৰু ৰাম স্থান স্থান স্থান বিদ্বালয় বিদ্ধালয় বিদ্ধালয় বিদ্ধালয় বিদ্ধালয় বিদ্ধালয় १९९१ वॉररनेदुः लॅगाया दया सूदा द्वारा। ५८। মুব্'ন্ট' অব'ঝি'শাম'র্ম্বাম্ম্'(Elizabeth Ann Scarborough) অম च इस सारी दा क्षुर मी दर मी से क्षुमारी में के विस्तर हु साथी मह के दायी ૽૾ઙ૽૾ૺઽ૽ૹઌ૽૽ૼ૱ૹૢ૽ૼૡૼઌ૽૽ૹ૽૽ૼૡઌ૽૽૱ૹૣૣૣઌઌઌ૽૽ૺૹૣૢ૽ૺૡૢઌ૽ૹ૽૽ઌ૽ૹૢ૽ૡૼ૱ૢૹ૽ૹ૽૽ૹ૽૽ૹ૽૽૱ઌ૽૽ૺ "अप्रमानर्द्रवानामान्यम्याः" (मेतुः व्यापायः १९९२ व्यामान्यम्यानुमा)। विक से केंवा (Ken Mitchell) मुं में सर्व मरुक मुं माक्का क्रें महैंवा वा

centers on a monastery where one thousand bare-breasted priestesses live, who "do it whenever they can," though in fact they are not allowed sex. "But they do it. They can't help themselves [...]." We are told that "those women [...] keep the monks very busy. [...] But sometimes people can get in from outside. Some of the women can do it ten times in one night." That, of course, leads to certain difficulties, so that "three women have to be kept constantly on the go aborting them" (pp. 121, 240; Mandarin Paperbacks edition, 1994).

Between 1989 and 1999, more than 30 novels about Tibet were published and about 15 more have come to light in the opening years of this century—mostly in English, Spanish, or French. The following titles can be listed among them: Mark Frutkin's Invading Tibet (New York 1991), a story based on the works of Edmund Candler, the journalist who accompanied the British invasion of Tibet in 1904; Elizabeth Ann Scarborough's Last Refuge (New York 1992), where the protagonist is a young woman who is the reincarnation of Tertön, the emissary of Shambala; Ken Mitchell's Stones of the Dalai Lama (Vancouver 1993), a mystical journey dotted with humor; Kathleen Ann Goonan's The Bones of Time (New York 1996), with a female convert who becomes the Dalai Lama; or Eliot Pattison's fourvolume saga on the pro-Tibetan Chinese police inspector Shan Tao Yun: The Skull Mantra, Water Touching Stone, Bone Mountain, and Beautiful Ghosts (New York 1999, 2001, 2002, 2004).

Fiction about Tibet has traditionally covered a variety of literary categories—mystery, detective stories, historical fiction, science fiction, biographical fiction, mythological motifs, adventure tales, mountaineering stories, etc.—and has frequently been related to the broad field of religious issues. Since the Dalai Lama became a Nobel Laureate in 1989, however, there has been a noticeable shift of focus in this fictitious literature towards the contemporary situation of Tibet. This shift can be partly attributed to the heightened international awareness of the Tibetan cause, which itself has received the support of many Hollywood icons and mass media celebrities.

বি.মু.পুৰ. পোৰ. শ্ৰিৰ (Kathleen Ann ल्र्र-रमु:श्रुव:ब्रुश) Goonan) ग्रीसामस्यामार्थः सुराक्षेत्रात्युगासामसुरात्रसाम् त्यात्रास्यात्रास्य य. १६६७ ज्रूर्टनु सूर्वात्रा।। ख्रे.ज्रुशाख्ये स्था सर हे.स्रेर ही. नयः संनित्रे क्षा क्षेत्र हो। वर्ष द्वा क्षेत्र हो न प्रते क्षेत्र हो न प्रते क्षेत्र हो न "रुषःभवेःरेःमें।" "ઐઽૢૢૻ૽ૡૼઽૣઌૡ૾ૺૡઙૣૺ " |हेदु:र्षेमा:वा:७९९९। २००२। २००८ २५४।:सु:५२ो: अप.येश)र्जे.ये.चश्र्याश्र्रा

च्र्-त्यंजाक्की.ध्र्या-यब्रुष्ट्र-पश्चाशास्त्र-यो प्रयाशास्त्रास्त्र्याशा-याशरः यार्ट सक्या के दाहें या या अराहें था की ह्यू रा। व्या कु आकी हें या या की देवानी हेवानवी अञ्चर। वायमहेवाय बेंट्य कुटी सुरा दे वह्रचीयाम्भी में ट्रिस्स्प्रेचीया है स्त्रिस्स्प्रेचा में स्वया भर सूर्य में स्वर्थ हिया त्युम्बर्ग्यी महें न मिले उद की स्नून प्यत्यु र पेन। प्येद द प्यत्य मुख्य सर्केन त्यार्दे स्वेता ले परे नावे रूपा स्वार है या है या सेना नी सुना नारे पेंट ही हेर:शर:को:वाबश:ब्रेटश:की:ब्र्वा:थ:वर्ष्ट्र:ल्रेट्र। श्रुवा:विवे:वर्क्चुर:व:हेवे: क्रुं अर्द्ध क्रीं करवाद वश है चेंद् देंद या क्रिया है वेंदें चेंदा वी वी शहें नाश हे यहर्मा स्थान के स्थान के स्थान शु.कें.र्यश्रान्टर.लूर्याचीचात्राव्याची,वर्षयावसूत्रान्टराचीरावसीचात्राचीतु कुर लग्न इस्य गुर्म कुर कुर दुर पाय पहेर दस दुर

व्र-मी.श्रॅराजालट्रियातपुर्धिशाल्यावियावर्णविट्रावालावहेत् दशः हेवा पर्वे तस्या सूदः उदाइससः देसः प्रयाः नृति वर्षे देशः प्रदेशः निर्देशः र्भेर है में ना नर्जे अश क्रुयान रानर्हे राया या प्रेरा रखा ■

तर्भायवीयाययायश्चीर

र्यः क्रेंत्रः युः क्षेः (Ramon N. Prats) वै 'खी'त' त्ये 'खी' व्यायो की वतुषान्यकायवै अर्वत् गव्यानुस्य विदा। श्रेवामानेरः १९९५ चर-र्-वेर-ग्री-भूर-धेषा-रर-हें अ-रेषा-षी-रषी-क्राकेब-ळेब-ळें पावर-। देरासराविरादे से येदा की सूरासे लें दार्वेरा विरादा लेंदा यदे र्सं अपेतु क्वेन र क्षेन वाके ब र्से (Pompeu Fabra University) **४.४८४.^{च्}रू४.**क्र्य.जंस.जंस.ची.८ची.च्यू.क्र्य.जंस.

With the dissemination of more accurate knowledge of Tibet, its demystification is advancing step by step. This not so bad, though. Isn't it said that reality surpasses fiction?

Additional Reading on the Mythicization of Tibet

Bishop, Peter. Dreams of Power: Tibetan Buddhism and the Western Imagination. London: Athlone Press; Rutherford, NJ: Fairleigh Dickinson University Press, 1993.

Brauen, Martin. In collaboration with Renate Koller and Markus Vock. Dreamworld Tibet: Western Illusions. Trumbull, CT: Weatherhill; Boston: Shambhala, 2004.

Dodin, Thierry and Räther, Heinz. Imagining Tibet: Perceptions, Projections, and Fantasies. Boston: Wisdom Publications, 2001.

Lopez, Donald S., Jr. Prisoners of Shangri-La: Tibetan Buddhism and the West. Chicago: University of Chicago Press, 1998.

Shakya, Tsering. "The Myth of Shangri-la: Tibet and the Occident." Lungta 5, pp. 20-23.

Ramon N. Prats holds a doctoral degree in Tibetan Studies from the Oriental Institute of the University of Naples (Italy), where he was associate professor of Tibetan language and literature until 1995. He is presently professor of Buddhism at the Pompeu Fabra University in Barcelona, Spain.

¹ See "A Conversation between Jamyang Norbu and Elliot Sperling," Latse Library Newsletter 2 (fall 2004):14-17.

² There is also a Tibetan translation of the book: Bod nang lo bdun. (McLeod Ganj: Amnye Machen Institute, 1995.)

ROARS ECHOING THROUGH THE **SNOWY MOUNTAINS**

In Memory of Yidam Tsering, Lion of the Snowy Mountains (1933 - 2004)

■ Lara Maconi

n 24 October 2004, the influential Tibetan poet Yidam Tsering, nicknamed "Lion of the Snowy Mountains," passed away in the city of Lanzhou in Gansu Province. Yidam Tsering was among the first generation of Tibetan writers who started writing in the Maoist years following the foundation of the People's Republic of China (PRC). He was widely

known in China, Tibet, and the Tibetan diaspora as one of the most vigorous and unconditional spokesmen on Tibetan identity. He was reckoned among the most representative and original figures in the contemporary Tibetan literary world, both for his work and for his outspoken views on Tibetan cultural revival and renewal. In his speeches and essays, Yidam Tsering stressed the importance of developing a modern Tibetan literature written in

Poet Yidam Tsering

Tibetan, especially given Chinese cultural and linguistic domination in Tibet. What makes such advocacy particularly interesting is that he wrote solely in Chinese. Because he was illiterate in Tibetan, Yidam Tsering adopted diverse poetic devices in order to express what he considered a Tibetan sensibility through poetry written in Chinese. His project regarding Tibetan tradition was one of recollection, recuperation, and re/construction, but also invention. Reading his work with a cross-cultural perspective is useful for avoiding simplistic approaches

> to contemporary Tibetan culture and literature and leaves room for otherness and complexity.

Throughout the last half-century, Chinese came to serve as the official language in Tibet, and a previously unknown literature—writing in Chinese by Tibetan authors—developed in the Land of Snows. At the same time, Tibetan mothertongue literature, which was censured during the Cultural Revolution, was

revived after 1980 and has received varying levels of governmental support. Thus, Tibetan literature now reflects a broader dynamic of two cultures coexisting

within a single social context. Though the relationship between the two is complex and sometimes antithetical, cultural coexistence has nonetheless produced interesting results in terms of literary and linguistic hybridization.

Yidam Tsering's poetry emerged in the context of rapid political and cultural transition, that is, the birth of a modern socialist Tibet under Mao's leadership. In this context, a new progressive Tibetan intelligentsia began to express considerable enthusiasm for change, modernization, republican ideals, and socialist values, while the Tibetan traditional order was radically upset. In exploring the context that gave rise to Yidam Tsering's work, it is essential to stress the faith of certain Tibetan intellectuals in socialism as an international set of aspirations (not specifically identified with Maoism), and the subsequent disappointment of these Tibetans upon realizing how values could be distorted in practice. In the field of arts and literature, previously unheardof literary concepts, such as Socialist Realism and Revolutionary Romanticism, confronted traditional Tibetan literary and artistic outlooks. The new Maoist policy promoted the complete secularization and politicization of literature—a sharp contrast to traditional Tibetan written literature, which was mainly an elitist activity, refined in taste, and rich in religious meaning. The new literature, created by the masses, for the masses, and in the language of the masses, had to eulogize the heroic constructions of socialism.

Yidam Tsering's life and literature mirrored the construction of a modern socialist Tibet. To understand his development as a writer is to understand the change in his political and social commitment, particularly after the storm of the Cultural Revolution. Yidam Tsering was born on 10 February 1933 in the village of Congzhi (Congtse) in the area of Tsongka (Tshong kha) or what is known in Chinese as Ping'an County, Qinghai. His birth into a poor family left him little prospect for receiving an education. In pre-1950 Tibet, the great majority of Tibetans were illiterate, and it was only in his adolescence that Yidam Tsering attended a Xining primary school, where he studied Chinese and rudimentary Tibetan. He was still in school when in August 1949 Chinese soldiers of the People's Liberation Army (PLA) arrived in Tibet. The Army made a good first impression, distributing food and money to local villagers. Tibetans were recruited to participate in the "construction of a new Tibet." Many Tibetan youngsters of humble origin joined the revolutionary ranks; in exchange, they were nourished, dressed and educated (in Chinese) according to the new Maoist revolutionary principles. Yidam Tsering was one of those youngsters. Ever since the Long March, the Chinese Communist Party realized the potential of Tibetan recruits from poor families: some were genuinely attracted to the promise of an egalitarian society, while other young boys simply drifted into the ranks of the PLA. In the conclusion of Snowy Mountains Collection, his first collection of poems, written in 1964 but published only in 1980, Yidam Tsering acknowledges his initial enthusiasm for socialist ideals:

When I joined the revolution, I was just a 15 or 16 year-old baby. At that time, all I knew was that the Old Society meant suffering. Except for this, everything was obscure to me. In the revolutionary ranks, I was taught the Party's principles and Mao's revolutionary philosophy. I became a Party member and really thought the Party was instilling me with wisdom and ideals. (Snowy Mountains Collection, 181)

Yidam Tsering's faith in an egalitarian utopia and class struggle as the deterministic force constituting societies prevailed throughout the 1950s, as he participated in various political movements. He was particularly active in the field of folk arts and literature, working as a performer, lyricist, teacher, choreographer and director of a dance troupe. Eventually, he was appointed deputy director of the Preliminary Group of the Gansu Folk Art Research Committee. In 1955, he started to collect, arrange and translate Tibetan folk songs into Chinese, and in 1963 he published Wedding Songs, a collection of Chinese translations of fourteen folk songs from his homeland. Yidam Tsering's interest in folk literature derived not merely from the pro-folkloric policy of the pre-Cultural Revolution years. Folk songs and any genuine manifestation of popular culture were

permanent sources of inspiration and fields of constantly renewed investigation for the poet.

The excesses of the Cultural Revolution deeply affected Yidam Tsering's life and philosophy. Like many other intellectuals in the PRC, Yidam Tsering was stigmatized as a 'black line's black specimen' and a 'reactionary nationalist.' His works were censured, and he was rehabilitated only in 1980. His political and philosophical reflections matured during those dark years. In a few poems (censured at that time) he denounces the corruption of the Party's political ideals and the oppressive atmosphere of the time. The tone of these poems reveals Yidam Tsering's untamable disposition, his more sentimental than political thirst for Justice and Equality, and his more humanistic than socialist meditations—values that he would develop in much later poetry.

During the self-searching period of the Cultural Revolution, Yidam Tsering acquired a new awareness of Tibet identity and culture. He grew increasingly curious about the specificity of Tibetan culture, age-old traditions and splendor of which he knew little. He realized that his 'Mother' (Tibet) was getting weaker, that it needed the support of her 'son' to survive. He considered that both culture and economics were fundamental aspects in the process of preserving and developing specific Tibetan attributes. Ever since that period, Yidam Tsering was increasingly concerned with developing and improving Tibetan society, Tibetan-language education, and Tibetan literature written in the mother-tongue.

It was only in the post-Cultural Revolution years, and following the general revival of culture in the PRC, that Yidam Tsering wrote the bulk and the best of his poems. In addition to Snowy Mountains Collection (published in 1980 but containing poems written between 1958 and 1965), Yidam Tsering published five volumes consisting primarily of poems and some essays: Snow Lion Collection (1991), Snowland Collection (1992), Snow Rhymes Collection (1996), The Snowland Sun (1997), and The Lion of the Snowy Mountains Roars (1999). The poems in these volumes illustrate the evolution of Yidam Tsering's philosophy: from meditations on the "sufferings of the old society" to reflections on the sufferings of all

societies, and ultimately to the realization that existence itself is suffering. Yidam Tsering's social views on life matured into a cosmological awareness, into a meditation on ultimate truths.

By proposing a distinctive literary language, Yidam Tsering expressed his own sense of otherness vis à vis Chinese culture in a creative way. He adopted diverse strategies to differentiate his works from official Chinese literary discourse, including the use of highly evocative symbols and images rich in Tibetan cultural connotations (such as the ancient Tibetan symbol of the 'snow lion,' and the term 'Snowland,' a name for Tibet), and the evocation of well-known Tibetan historical figures. He also stressed the importance of traveling around Tibet to regain contact with one's own territory and culture and to recover a relationship between self and place. Several of Yidam Tsering's poems record one specific stage of the poet's travels in Tibet and of his meditative journey.

When considering the linguistic strategies that Yidam Tsering adopted to convey his sense of cultural distinctiveness, it is essential to realize how linguistic issues became crucial questions in his reflections. The Indian writer Raja Rao has described the dilemma facing writers such as Yidam Tsering, for whom the core of the problem lies in the question of how to "convey in a language that is not one's own the spirit that is one's own." For Yidam Tsering, Chinese was the language of his intellectual make-up but not of his emotional makeup. Yidam Tsering's poems were always written out of linguistic tension, where the difficulty of 'translating' into Chinese a 'world' supposedly experienced, conceived, and felt in Tibetan, coexisted with the conscious and unconscious will not to completely abandon the mother language. In his poems, Yidam Tsering attempted to construct a linguistic variation on Chinese such that the Chinese language is no longer Chinese, and Tibetan becomes the necessary referent to understand this new brand of Chinese. Providing Chinese with neologisms, semantic and phonetic translations, new images and new linguistic solutions, Yidam Tsering challenged the established structures and the authoritative exclusivity of Chinese expressions. By reading Yidam Tsering's poems in a cross-cultural perspective, one experiences

a sort of 'revitalizing explosion' of canons: the canon of Tibetan tradition and its established values, as well as the canon of Chinese linguistic and literary standards and its civilizing discourse. The very axioms upon which canons are based are undermined, and the ensuing dualism makes room for otherness, complexity, and creativity.

Yidam Tsering was deeply concerned by the future of the new generation of Tibetan intellectuals. To his frequent contact with younger writers and students Yidam Tsering brought a communicative temperament and oratorical skills, which greatly helped him establish a lively human and intellectual dialogue. Many of his poems have been translated into Tibetan at the initiative of young Tibetan writers and editors. He is by far the most popularly translated of sinophone Tibetan writers. This fact indicates the great appreciation felt for Yidam Tsering's poetry on the part of Tibetan-educated readers, as well as the affection and respect for the person of Yidam Tsering held by a new generation of Tibetan intellectuals. For the young, he is a symbol of moral integrity and human dignity, a powerful literary spur, and a source of enthusiasm and hope for a better future. Young Tibetans see in Yidam Tsering's poems the complex mélange of frustration and hope, faced by Tibetans today. The roars of the Lion of the Snowy Mountains will forever echo throughout the mountains of the Land of Snows.

REFERENCES

Maconi, Lara. "Lion of the Snowy Mountains: The Tibetan Poet Yi dam tshe ring and his Chinese Poetry: Reconstructing Tibetan Cultural Identity in Chinese." Chapter 7 in Tibet, Self, and the Tibetan Diaspora: Voices of Difference, edited by P. Christiaan Klieger, ed., 165-194. PIATS 2000, no. 2. Leiden: Brill, 2002.

Rao, Raja. Foreword to Kanthapura (1938), quoted in B. Ashcroft, G. Griffiths, and H. Tiffin, eds., The Empire Writes Back, p. 39. New York: Routledge, 2001.

Yidam Tsering. "Two Poems." Translated by Herbert J. Batt. In Manoa: Songs of the Snow Lion 12:2. Honolulu: University of Hawai'i Press, 2000.

Anthologies and other works by **Yidam Tsering**

Hunli ge (Wedding songs). Shanghai: Shanghai wenyi chubanshe, 1963. (96 pp.)

Xueshan ji (Snowy mountains collection). Lanzhou: Gansu renmin chubanshe, 1980. (187 pp.)

Xueshi ji (Snow lion collection). Xining: Qinghai renmin chubanshe, 1991. (271 pp.)

Xueyu ji (Snowland collection). Chengdu: Sichuan minzu chubanshe, 1992. (198 pp.)

Xueyun ji (Snow rhymes collection). Hezuo: Gannan Zangzu zizhizhou wenlian and Zla gsar (Moon Shine), 1996. (120 pp.)

Xueyu de taiyang (The snowland sun). Beijing: Zuojia chubanshe, 1997. (400 pp.)

Xueshan shizi hou (The lion of the snowy mountains roars). Lanzhou: Gansu renmin chubanshe, 1999. (250 pp.)

Xueyu zheren de sibian zhi hua. Jushi shouci dechu yueqiu you shui de kexue jielun (Flowers of the thoughts of a snowland sage: Scientific conclusions on the existence of water on the moon proven for the first time in the world). Beijing: Dangdai Zhongguo chubanshe, 1999. (316 pp.)

Lara Maconi (Ph.D. candidate) is a research assistant and lecturer in Tibetan Studies at Langues 'O INALCO in Paris. Having graduated in Chinese Studies from Ca' Foscari University in Venice, her present research concerns contemporary Tibetan literature, with a focus on works written in Chinese, and questions of identity and diglossy. She is a frequent contributor to the literary magazine Neige d'Aout, Lyrisme et Extrême-Orient.

Four Poems by Yidam Tsering

Crystalline Seeds: Thönmi Sambhota

Since the man of Thon¹ sowed the thirty crystalline seeds, The annals of civilization have recorded the splendid vestige of the three skor, the four ru, and the six sgang.² Afterwards, an ice-knife and a snow-sword dismembered the body of Dbus, Gtsang, Amdo, and Khams,

Even the cold of a doubly severe winter can no longer lock up the sowing season!

Today the jade dragon has already roared, the seeds are ready to sprout. Barefoot, I reclaim the land of my heart to cultivate a brand-new century!

But the fertile seeds still lie buried deep in the Bod pa's pure heart! 3

6 January 1983

Translated by Lara Maconi

晶亮的种子 吞米桑博扎

Author's notes:

- 1. Thon mi Sam bho ta is the creator of the Tibetan alphabet. Thon mi (that is, a person from Thon or a person whose surname is Thon) and Sam bho ta (a man's first name) together produce the full name Sam bho ta from Thon. The thirty seeds are the thirty letters of the Tibetan
- 2. These are Tibetan ancient territorial divisions: above the three skor of Mnga' ris; at the center the four ru of Dbus Gtsang; below the six sgang of Mdo Khams.
- 3. Bod: This is the name Tibetans use to refer to themselves (the name of the nationality). Tubo is the [Chinese] phonetic transcription of the name that we use to refer to ourselves. Xizang in Tibetan is "Bod." The use of the term Zang originated during the Qing dynasty and is derived from the name of the region of Gtsang, one of the three regions in the designation 'Mdo, Dbus, Gtsang'.

Yidan Cairang. "Jingliang de zhongzi." In Xueyu de taiyang. Beijing: Zuojia chubanshe, 1997, p. 118.

大从吞地人播下三十颗晶亮的种子, 文明的史册收揽了三部四茹刘冈的胜迹, 后来冰刀雪剑割裂了卫藏多康的肌肤, 萌芽的种子还埋在蕃域人的完美的心理。

再冷的严冬也锁不住播种的季节!

今朝玉龙已经咏啸,种子就要发芽, 我赤脚垦拓心田, 耕植崭新的世纪!

1983. 1. 6

- 1. 吞米桑博扎: 史称藏族文字的创制者, 吞米: 即"吞"地方的人(或 吞姓人),桑博扎:即名字,就是:吞地人桑博扎。30颗种子:指藏文
- 2. 指藏族古代区划: 即上阿里三部,中卫藏四茹,下多康六冈(部, 茹,冈均为区划单位)。
- 3. 蕃:藏族从古至今的自称(即族名),如吐蕃就是自称的译音。"西 藏"在藏语里称"蕃"。"藏"源于清时朵卫藏的省称。陇南一藏乡亦 称"蕃域"。

What is True Cannot be **Falsified**

真的假不了

A black stone soaked in the river cannot be washed white. A white stone placed under the sun cannot be darkened. Even if they were buried in a pile of ash, The rain could still distinguish them!

What is true cannot be falsified. What is false cannot be true. This, indeed, is not difficult to understand!

黑石头泡在河里洗不白, 白石头放在太阳下晒不黑, 即便把它们埋在灰堆里, 天降的雨水还会鉴别!

真的假不了, 假的真不了, 这本来就不是费解的难题!

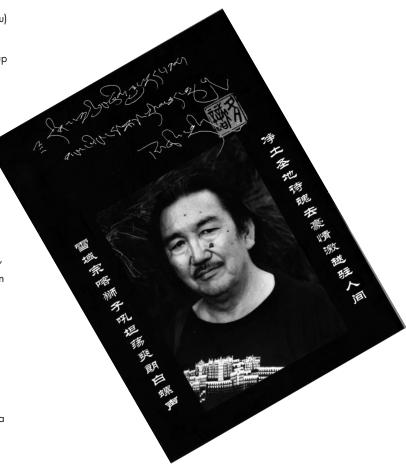
1963。春。草于西北民院

Spring 1963 (Lanzhou) Translated by Yangdon Dhondup

Author's note:

This is the the first time I tried writing in the second form of the style of 4, 1, 2: "Four lines and two lines in two stanzas." I have written more than 30 poems in this style, but before they could be published, they were seized from my house and burned during the Cultural Revolution. This poem alone remained in my head. Now, I show from where this style came.

Yidan Cairang. "Zhende Jiabuliao." In Xueyu de taiyang. Beijing: Zuojia chubanshe, 1997, p. 56.



The Path

On the road I relish the speed of a horse's hoof. In the desert I admire the heavy load a camel carries. On the snow mountain that frightens the eagle, I see the yak with its tongue stuck out jumping like a fierce tiger from the ravine!

Beneath the feet of those who struggle, there will always be a path!

Please do not to think too highly of the one who dives into the water-The necklaces of my ancestors are the corals deep in that sea!

December 1981 (Lanzhou)

Translated by Yangdon Dhondup

Yidan Cairang. "Lu." In Xueyuji. Chengdu: Sichuan minzu chubanshe, 1992, p.

Reply

I praise the Amazon, which sings the greatness of the native Americans. I gasp in admiration when the Nile accumulates The splendour of the Thousand and One Nights. But I do not therefore blame at all my mother, Because the Yellow River and the Yangtse River offer Gesar to a world of bright stars!

The civilization of each nationality is not granted in a day!

My responsibility is not to dress up that unfamiliar mother from the faraway place, But to transform my mother's milk into wisdom that composes epics!

Winter 1981

Translated by Yangdon Dhondup

Yidan Cairang. "Dabian." In Xueyuji. Chengdu: Sichuan minzu chubanshe, 1992, p.

路

坦途上我欣赏马蹄的速度, 沙漠里我钦佩驼背的重负, 但是连岩鹰都胆颤心惊的雪山上, 我看见吐舌的牦牛象跃涧的猛虎!

奋斗者的足下都有一条通途!

请不要把那潜水的本领说得太玄, 我祖先的项链就是那海底的珊瑚!

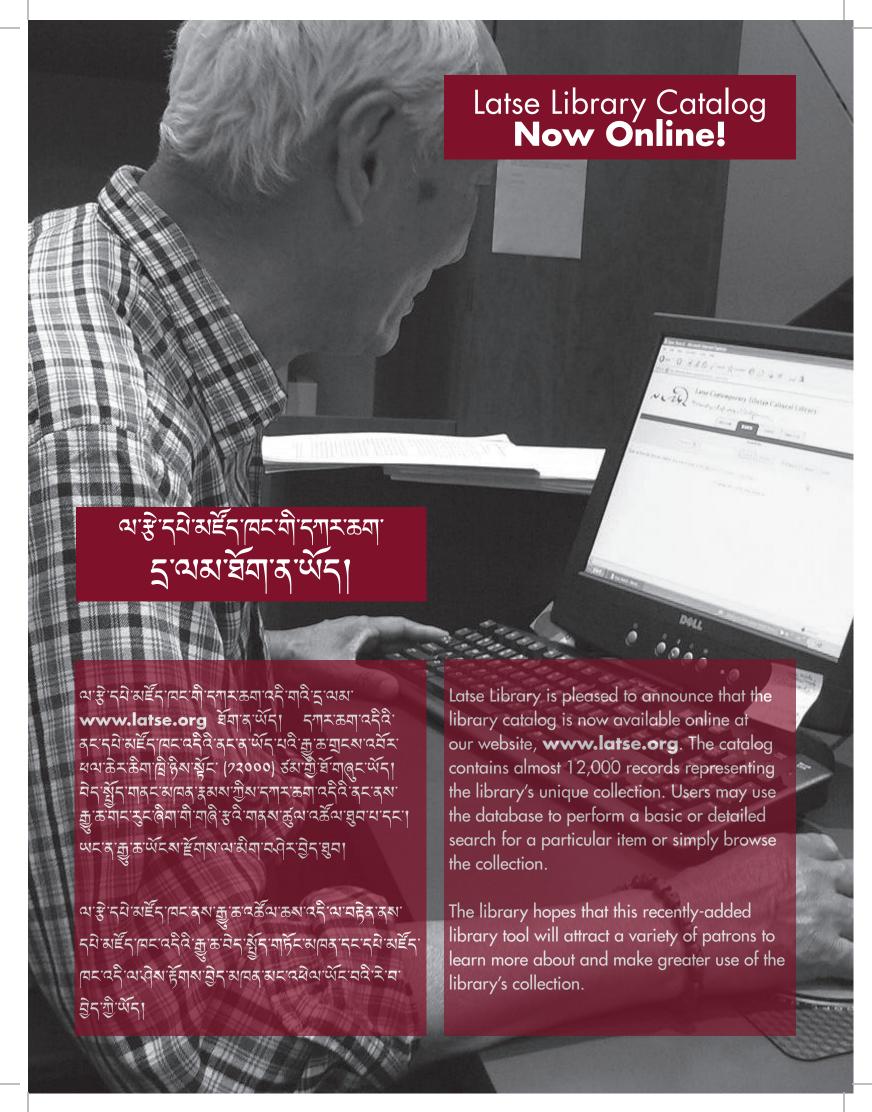
1981。12。于兰州

我赞亚马孙河鼓起印第安古歌的壮伟, 我叹服尼罗河我起《一千零一夜》的星辉 但是并不因此对我的生身母亲说三道四, 因为黄河长江把《格萨尔》捧给群星灿烂的世界!

各民族的文明历史都不是天界的赐予!

我的责任不是从别处引进装束陌生母亲, 而是把生母的乳汁化作我谱写史诗的智慧!

1981 年冬





यः हे 'द्रये 'सर्हें द्रायदः है गृह 'यह होनक' हु 'हैं गृष 'यदे 'या वा कि हो गाणी है। Latse Library is a project of Trace Foundation